BRIHAT PARASAR HORA SASTRAM

PART-2

।।विषयानुक्रम ।।

51.	कालचक्रफलाध्याय	512	37
52.	चरादिदशाफलाध्याय	519	72
53.	दशाफलगुणाध्याय	533	32
54.	सूर्यान्तर्दशाफलाध्याय	541	73
55.	चन्द्रान्तर्दशाफलाध्याय	552	70
56.	मंगलान्तर्दशाफलाध्याय	561	74
57.	राहु अन्तर्दशाफलाध्याय	572	83
58.	गुरु अन्तर्दशाफलाध्याय	583	79
59.	शनि अन्तर्दशाफलाध्याय	593	81
60.	बुधान्तर्दशाफलाध्याय	603	72
61.	केतु–अन्तर्दशाफलाध्याय	612	78
62.	शुक्रान्तर्दशाफलाध्याय	623	73
63.	प्रत्यन्तर्दशाफलाध्याय	635	90
64.	सूक्ष्मदशाफलाध्याय	668	82
65.	प्राणदशाफलाध्याय	681	83
66.	कालचक्रान्तर्दशाफलाध्याय	693	58
67.	कालचक्रांशदशाफलाध्याय	730	32
68.	अष्टकवर्गाध्याय	734	72
69.	त्रिकोणशोधनाध्याय	753	5
70.	एकाधिपत्यशोधनाध्याय	755	6
71.	पिण्डसाधनाध्याय	761	4
72.	अष्टकवर्गफलाध्याय	764	46
73.	अष्टकवर्गायुर्दायाध्याय	774	4
74.	समुदायाष्टकवर्गाध्याय	776	51
75.	रश्मिफलाध्याय	787	25
76.	सुदर्शनचक्राध्याय	792	29
77.	पंचमहापुरुषलक्षणाध्याय	800	22
78.	पंचमहाभूतफलाध्याय	806	18
79.	सत्त्वादिगुणाध्याय	809	22
80.	नष्टजातकाध्याय	813	16

81.	नक्षत्रजातकाध्याय	819	27
82.	प्रव्रज्यायोगाध्याय	824	15
83.	स्त्रीजातकाध्याय	827	55
84.	स्त्रीलक्षणाध्याय	838	88
85.	तिलादिचिह्नाध्याय	856	15
86.	पूर्वशापफलाध्याय	866	145
87.	ग्रहशान्तिविवेकाध्याय	878	24
88.	अशुभजन्मकथनाध्याय	882	5
89.	दर्शशान्तिविचाराध्याय	885	10
90.	कृष्णचतुर्दशीजन्माध्याय	887	13
91.	भद्रादि दुर्योगशान्त्यध्याय	890	7
92.	संक्रान्ति जन्मशान्त्यध्याय	892	24
93.	एकनक्षत्रजन्मशान्त्यध्याय	896	8
94.	ग्रहणजन्मशान्त्यध्याय	900	16
95.	गण्डान्तशान्त्यिध्याय	902	18
96.	मूलशान्त्यध्याय	905	28
97.	ज्येष्ठादिगण्डशान्त्यध्याय	909	21
98.	त्रिखलजन्मशान्त्यध्याय	913	9
99.	प्रसव–विकार–शान्त्यध्याय	914	20
100.	प्रश्नविचाराध्याय	918	52
101.	नाडीमुहूर्ताध्याय	928	61
	उपसंहाराध्याय	939	11 + 22 + 7

।। एवमादितः श्लोक संख्या 4464 अध्याय संख्या 101 ।।

इति शम्

।। श्रीः ।।

नमोऽस्तु गणनाथाय सरसीरुहशायिने ।
हस्तिवक्त्राय गुह्याय सर्वसिद्धिप्रदायिने ।। 1 ।।
य आकृष्णेन रजसा ऽऽवर्तमानो निवेशयन् ।
सर्वं पायादपायान्नस्तरणिर्विश्वभावनः ।। 2 ।।
बुधवरगुरुवरशरणो भागं प्रथमं विविच्य मिश्रोऽयम् ।
पाराशरहोरायां मुत्तरभागं नियोजयति ।। 3 ।।

51

।।अथ कालचक्रदशाफलाध्यायः।।

दशेश फल –पराशर उवाच–

कथयाम्यथ विप्रेन्द्र !कालचक्रदशाफलम्।
तत्रादौ राशिनाथानां सूर्यादीनां फलं ब्रुवे।।1।।
रक्तपित्तादितो व्याधि नृणामर्कफलं वदेत्।
धनकीर्तिप्रजावृद्धि वस्त्राभरणदः शशी।।2।।
ज्वरमाशु दिशेत् पैत्यं ग्रन्थिस्फोटं कुजस्तथा।
प्रजानां च धनानां च सदा वृद्धिं बुधो दिशेत्।।3।।
धनं कीर्ति प्रजावृद्धिं नानाभोगं वृहस्पतिः।
विद्यावृद्धिर्विवाहश्च गृहं धान्यं भृगोः फलम्।। 4।।
तापाधिक्यं महद्दुःखं बन्धुनाशः शनेः फलम्।
एवमर्कादियोगेन वदेद्राशिदशाफलम्।।5।।

हे मैत्रेय ! अब मैं काल चक्रदशा का फल कहता हूँ। सर्वप्रथम दशा राशि के स्वामी अर्थात् जिस राशि की दशा हो, उसके स्वामी ग्रह के अनुसार फल कहता हूँ।

यदि सूर्य की राशि की दशा हो तो रक्तविकार, पित्त दोष से उत्पन्न व्याधि (पेट गैस, खुजली, ब्लडप्रेशर, ज्वरादि) होती हैं। यही फल सूर्य की अधिष्ठित राशि की दशा में भी समझें।

यदि कर्क राशि या चन्द्रमा की आश्रित राशि की दशा हो तो धन, कीर्ति, सन्तान में वृद्धि, वस्त्राभूषण (भौतिक सुख) की उपलब्धि होगी।

मंगल की राशि की दशा में तीव्र ज्वर, पित्ताधिक्य, फोड़े (टयूमर), शरीर में गाँठें आदि फल होता है।

बुध की राशि दशा में धन, सन्तान आदि की वृद्धि होती है। गुरु की राशि दशा में धन, कीर्ति, सन्तान की वृद्धि व अनेक सुख भोग होते हैं।

शुक्र की राशि दशा में विद्या वृद्धि, विवाहादि शुभ कृत्य, धान्यादि की वृद्धि होती है। शनि की दशा में संताप की अधिकता, बड़ा दुःख, शोक, बन्धुओं का नाशादि होता है।

उक्त फल जिस राशि में ग्रह स्थित हो, उसकी दशा में भी समझना चाहिए ।

मेषगत नवांश दशा फल :–

मेषे तु रक्तपीड़ा च वृषभे धान्यवर्द्धनम् ।
मिथुने ज्ञान सम्पन्नश्चान्द्रे धनपतिर्भवेत् ।। 6 ।।
सूर्यर्क्षे शत्रुबाधा च कन्यायां दारनाशनम् ।
तौलिके राजमन्त्रित्वं वृश्चिकके मरणं भवेत् ।। 7 ।।
अर्थलाभो भवेच्चापे मेषस्य नवभागके ।

प्रत्येक काल चक्र दशा में 9-9 राशियों की दशा पीछे कही है । तदनुसार महादशा में अन्य राशियों की नवांश दशा (9 राशियों की पृथक् अन्तर्दशा या उपदशा) का फल कहते हैं ।

मेष राशि में मेषांश दशा में रक्त पीड़ा, वृषांश में धान्य वृद्धि, मिथुनांश में ज्ञानवृद्धि, कर्काश में धनाढ्यता, सिंहांश में शत्रु बाधा, कन्यांश में स्त्री कष्ट, तुलांश में राजमन्त्रीपद, वृश्चिकांश में मृत्यु होती है । धनुरंश में धन लाभ होता है ।

वृषगत नवांश राशि दशा फल :–

मकरे पापकर्माणि कुम्भे वाणिज्यमेव च ।। 8 ।।
मीने सर्वार्थसिद्धिश्च वृश्चिकेत्वग्नितो भयम् ।
तौलिके राज्यपूज्यश्च कन्यायां शत्रुवर्धनम् ।। 9 ।।
शशिभे दारसम्बाधा सिंहे च त्वक्षिरोगकृत् ।
मिथुने वृत्तिबाधा स्यात् वृषभस्य नंवाशके ।। 10 ।।

वृष राशि की दशा में मकरांश दशा में पापकार्य, कुम्भांश में व्यापार, मीनांश में सब कार्यो में सफलता, वृश्चिकांश में अग्निभय, तुलांश में राज्य पूज्यता, कन्यांश में शत्रु वृद्धि, कर्काश में स्त्री सुख में बाधा, सिहांश में नेत्र रोग, मिथुनांश में शत्रु वृद्धि, कर्काश में स्त्री सुख में बाधा, सिहांश में नेत्र रोग, मिथुनांश में व्यवसाय बाधा होती है ।

यह नवांशानुसार दशाफल कहा जा रहा है । नक्षत्र चरणानुसार जो नवांश आए, उसके सामने चक्र में लिखित राशियों की दशाओं में यह फल देखना है । हमारे उदाहरण में कुम्भांश अपसव्य चक्र में उदित था । तदनुसार आगे फल का विचार करेंगे ।

मिथुनगत नवांश राशि दशा फल :–

वृषभे त्वर्थलाभश्च मेषे तु ज्वररोगकृत् ।
मीने तु मातुलप्रीतिः कुम्भे शत्रुप्रवर्द्धनम् ।। 11 ।।
मृगे चौरस्य सम्बाधा धनुषि शस्त्रवर्धनम् ।
मेषे तु शस्त्रसंघातो वृषभे कलहो भवेत् ।। 12 ।।
मिथुने सुखमाप्नोति मिथुनस्य नवांशके ।

मिथुनांश में वृषदशा में धन लाभ, मेषांश में ज्वर पीड़ा, मीनांश में मामा का प्रेम व सहयोग, कुम्भांश में शत्रु वृद्धि, मकरांश में चोर बाधा, धनुरंश में शस्त्र वृद्धि, मेषांश में शस्त्र से चोट, वृषांश में कलह, मिथुनांश में सुख होता है ।

इन दशाओं में इस फल को सूत्ररूप में समझकर उसकी देशकालानुसार व्याख्या विद्वान् दैवज्ञ को करनी चाहिए । जैसे शस्त्रघात से तात्पर्य, शत्रु आक्रमण करे, स्वयमेव हथियार से चोट लगे, शल्यचिकित्सा से गुजरना पड़े इत्यादि । ज्वरसामान्य के सैकड़ों भेद होते हैं । रक्त कैंसर, प्लेग आदि भी ज्वर रूप में प्रारम्भ होते हैं । अतः राशि पर पापयोग या बहुपापयोग का भी विचार करना होगा ।

कर्कगत नवांश राशि दशा फल :–

कर्कटे सङ्कटप्राप्तिः सिंहे राजप्रकोपकृत् ।। 13 ।।
कन्यायां भ्रातृपूजा च तौलिके प्रियकृन्नरः ।
वृश्चिके पितृबाधा स्यात् चापे ज्ञानधनोदयः ।। 14 ।।
मकरे जलभीतिः स्यात् कुम्भे धान्यविवर्धनम् ।
मीने च सुखसम्पत्तिः कर्कटस्य नवांशके ।। 15 ।।

(i) कर्कांश में कर्क दशा हो तो संकट का सामना करना पड़ता है ।

(ii) सिंहांश में राजकोप होता है अर्थात् सरकारी विभाग या सीधे सरकार से भय होगा ।

(iii) कन्यादशा में भाइयों द्वारा विशेष सम्मान प्राप्त होता है । तुला दशा में मनुष्य मनोनुकूल व लोकप्रिय कार्यों का साधन करता है ।

(iv) वृश्चिक दशा में पिता को कष्ट, आर्थिक या शारीरिक या सामाजिक कष्ट समझें ।

(v) धनुदशा में ज्ञान वृद्धि व धन वृद्धि अर्थात् विद्या या अनुभव या कार्यकुशलता तथा रुपया बढ़े ।

(vi) मकरदशा में पानी से भय अर्थात् जलज रोग, डूबना आदि, कुम्भ में धान्य वृद्धि, मीन में सुख सम्पत्ति होती है।

सिंहगत नवांश राशि दशा फल :-

वृश्चिके कलहः पीड़ा तौलिके ह्यधिकं फलम्।
कन्यायामतिलाभश्च शशांके मृगबाधिका।। 16।।
सिंहे च पुत्रलाभश्च मिथुने शत्रुवर्धनम्।
वृषे चतुष्पदाल्लाभो मेषांशे पशुतो भयम्।।
मीने तु दीर्घयात्रा स्यात् सिंहस्य नवभागके।। 17।।

सिंहांश में वृश्चिक दशा में कलह, वाद विवाद आदि, तुला में विशेष कलह, कन्या में अति लाभ, कर्कदशा में पशुओं के कष्ट, सिंह दशा में पुत्र प्राप्ति, मिथुन दशा में शत्रु वृद्धि, वृष दशा में पशुओं (वाहनों) से लाभ, मेष दशा में पशुओं से भय, मीन दशा में लम्बी यात्राएँ होती हैं।

कन्यागत नवांश राशि दशा फल :-

कुम्भे तु धनलाभश्च मकरे द्रव्यलाभकृत्।
धनुषि भ्रातृसंसर्गो मेषे मातृविवर्द्धनम्।। 18।।
वृषभे पुत्रवृद्धिः स्यान्मिथुने शत्रुवर्द्धनम्।
शशिभे तु स्त्रियां प्रीतिः सिंहे व्याधि विवर्द्धनम्।। 19।।
कन्यायां पुत्रवृद्धिः स्यात्कन्यायाः नवमांशके।

कन्यांश में कुम्भ दशा हो तो धन लाभ होता है। मकर दशा में भी धन का लाभ होता है। धनु दशा में भाइयों से सहयोग व मित्रता, मेषांश में मातृ पक्ष की वृद्धि, वृष दशा में पुत्र प्राप्ति, मिथुन दशा में शत्रु वृद्धि, कर्क दशा में स्त्रियों से प्रेम, सिंह दशा में रोग वृद्धि, कन्यादशा में पुत्र वृद्धि होती है।

तुलागत नवांश राशि दशा फल :-

तुलायामर्थलाभश्च वृश्चिके भ्रातृवर्द्धनम्।। 20।।
चापे च तातसौख्यं च मृगे मातृविरोधिता।
कुम्भे पुत्रार्थलाभश्च मीने शत्रुविरोधिता।। 21।।
अलौ जायाविरोधश्च तुले च जलबाधता।
कन्यायां धनवृद्धिः स्यात् तुलायां नवभागके।। 22।।

तुलांश का उदय हो तब उसमें तुला की ही दशा में धन लाभ होता है। वृश्चिक दशा में भाइयों की बढ़ोत्तरी, धनु दशा में पिता का सुख, मकर दशा में माता से विरोध , कुम्भ दशा में धन व पुत्र का लाभ, मीन दशा में शत्रुओं से विरोध की वृद्धि, वृश्चिक दशा में स्त्री से विरोध, तुला दशा में जल से भय, कन्या की दशा में धन की वृद्धि होती है।

जाया विरोध से तात्पर्य स्वयं स्त्री से वैर हो अथवा ससुराल पक्ष से शत्रुता या स्त्री से वैचारिक मतभेद घर तक ही सीमित रहें, ऐसा निर्णय ग्रह योग से करना चाहिए।

वृश्चिकगत नवांश राशि दशा फल :–

कर्कटे ह्यर्थनाशश्च सिंहे राजविरोधिता।
मिथुने भूमिलाभश्च वृषभे चार्थलाभकृत्।। 23।।
मेषे सर्पादिभीतिः स्यान्मीने चैव जलाद्भयम्।
कुम्भे व्यापारतो लाभे मकरेऽपि रुजो भयम्।। 24।।
चापे तु धनलाभः स्याद् वृश्चिकस्य नवांशके।

वृश्चिकांश में कर्क दशा हो तो धन का नाश, सिंह दशा में राजपक्ष से विरोध, मिथुन दशा में भूमि–लाभ अर्थात् भूमि के व्यापार से लाभ अथवा भूमि आदि प्राप्त करना, वृष दशा में धन का लाभ, मेष दशा में साँप आदि रेंगने वाले कीटों से भय, मीन दशा से जल से भय, कुम्भ दशा में व्यापार से लाभ, मकर दशा में रोग से भय, धनु दशा में धन–लाभ होता है।

धनुगत नवांश राशि दशा फल :–

मेषे तु धन लाभः स्याद् वृषे भूमिविवर्द्धनम्।। 25।।
मिथुने सर्वसिद्धिः स्यात्कर्कटे सर्वसिद्धिकृत्।
सिंहे तु पूर्ण वृद्धिः स्यात्कन्यायां कलहो भवेत्।। 26।।
तौलिके चार्थलाभः स्यात् वृश्चिके रोगमाप्नुयात्।
चापे तु सुतवृद्धिः स्याच्चापस्य नवमांशके।। 27।।

धनु नवांश में मेष दशा रहने पर धन का लाभ, वृष दशा में जमीन–जायदाद की वृद्धि, मिथुन दशा में सब मनोरथों की सिद्धि, कर्क दशा में सभी कार्यों में सफलता, सिंह दशा में पुरानी प्रतिष्ठा, कीर्ति, धन व मान आदि की वृद्धि, कन्या की दशा में कलह, तुला दशा में धन का

लाभ, वृश्चिक दशा में रोग प्राप्ति, और धनु की दशा में पुत्रों की बढ़ोत्तरी होती है।

सम्भव होने पर सन्तान पैदा होना और बड़ी सन्तानों की सुख समृद्धि विद्या आदि में यथावसर वृद्धि समझनी चाहिए।

मकरगत नवांश राशि दशा फल :–

मकरे पुत्रलाभः स्यात्कुम्भे धान्यविवर्धनम्।
मीने कल्याणमाप्नोति वृश्चिके विषबाधिता।। 28।।
तौलिके त्वर्थलाभश्च कन्यायां शत्रुवर्धनम्।
शशिभे श्रियमाप्नोति सिंहे तु मृगबाधिता।। 29।।
मिथुने वृक्ष बाधा च मृगस्य नवभागके।

मकर के नवांश में मकर की ही दशा रहे तो पुत्र सुख, कुम्भ की दशा में धान्यवृद्धि (अधिक अन्न पैदा होना या भोज्य पदार्थों के व्यापार से खूब लाभ) होना, मीन दशा में कल्याण प्राप्ति, वृश्चिक दशा में विष पीड़ा, तुला में धन लाभ, कन्या में शत्रु–वृद्धि, कर्क में धन वृद्धि, सिंह में पशु–भय व और मिथुन में वृक्षादि से पीड़ा होती है, पेड़ टूटकर गिर जाना, पेड़ से वाहन टकरा जाना, पेड़ काटने पर दण्ड मिलना, किसी पौधे को खाने या छूने से शारीरिक कष्ट इत्यादि वृक्ष भय के रूप अपनी बुद्धि से समझें।

कुम्भगत नवांश राशि दशा फल :–

वृषभे त्वर्थलाभश्च मेषभे त्वक्षिरोगकृत्।। 30।।
मीने तु दीर्घयात्रा स्यात्कुम्भे धनविवर्धनम्।
मकरे सर्वसिद्धिः स्याच्चापे शत्रु विवर्धनम्।। 31।।
मेषे सौख्यविनाशश्च वृषभे मरणं भवेत्।
युग्मे कल्याणमाप्नोति कुम्भस्य नवमांशके।। 32।।

कुम्भ के नवांश की वृष दशा में धन लाभ, मेष दशा में नेत्र रोग, मीन दशा में लम्बी यात्रा, कुम्भ दशा में धन वृद्धि, मकर दशा में सब कार्यों में सफलता, धनु दशा में शत्रु–वृद्धि, मेष दशा में सर्वसुख हानि और दूसरी वृष राशि की दशा में मृत्यु, मिथुन दशा में सुख होता है।

मीनगत नवांश राशि दशा फल :–

कर्कटे धनवृद्धिः स्यात् सिंहे तु राजपूजनम्।
कन्यायामर्थलाभस्तु तुलायां लाभमाप्नुयात्।। 33।।

वृश्चिके ज्वरमाप्नोति चापे शत्रुविवर्धनम् ।
मृगे जायाविरोधश्च कुम्भे जलविरोधिता ।। 34 ।।
मीने तु सर्वसौभाग्यं मीनस्य नवभागके ।

मीन नवांश में कर्क दशा होने पर धन में बढ़ोत्तरी, सिंह दशा में राजा से सम्मान, कन्या दशा में धन का लाभ, तुला दशा में शत्रुओं की वृद्धि, मकर दशा में पत्नी से विरोध, कुम्भ दशा में जल भय और मीन दशा में सब प्रकार से भाग्य साथ देता है ।

दशा–अंश क्रमेणैवं ज्ञात्वा सर्व फलं वदेत् ।। 35 ।।
क्रूर ग्रह दशाकाले शान्तिं कुर्याद्विचक्षण ।

जन्म नक्षत्र के चरणानुसार काल चक्र का नवांश जानकर उसके अन्तर्गत राशियों की दशा से उक्त फल कहना चाहिए, यदि अशुभ दशा हो या दशा राशि पर अधिक पाप ग्रह योग हो तो शान्ति विधान अवश्य करना चाहिए ।

यत्प्रोक्तं राजयोगादौ संज्ञाध्याये च यत्फलम् ।। 36 ।।
तत्सर्वं चक्रकाले हि स्वबुद्ध्या योजयेद् बुधः ।
इति संक्षेपतः प्रोक्तं काल चक्रदशाफलम् ।। 37 ।।

इसी प्रकार पीछे संज्ञाध्याय में जो–जो बातें कही हैं या जिस ग्रह या राशि से राजयोगादि फल प्राप्त होने का निश्चय हो उन सब फलों की प्राप्ति काल चक्र दशा में भी बुद्धिपूर्वक देखनी चाहिए, यह काल चक्र दशा का संक्षिप्त फल कहा है ।

काल चक्र में अन्तर्दशाएँ आगे कही जाएँगी ।

हमारे उदाहरण में आर्द्रा नक्षत्र का दूसरा चरण व कुम्भ नवांश उदित है । पीछे काल चक्र दशा में धनु राशि का भोग्य 8 वर्ष 4 मास 19 दिन था, तदनुसार 1972 से जून 1982 तक मीन दशा थी । यह गुरु की राशि है, अतः शुभ क्षेत्र राशि मात्र होने से और नवम भावगत रहने से पीछे दशाध्याय में बता चुके हैं कि यह दशा शुभ होगी । इस दशा का फल पुत्र–प्राप्ति, स्त्री–प्राप्ति अर्थात् विवाह, धन वृद्धि, घर का सुख, सत्कार्य आदि होते हैं । फलस्वरूप इस दशा में जातक का विवाह, रोजगार प्राप्ति और सन्तान आदि फल हुए । मीन दशा में दीर्घ यात्रा फल भी लिखा है । दशा के प्रारम्भ में ही जन्म स्थान से दूर रहना प्रारम्भ हुआ । तदुपरि 1989 तक मेष दशा पाप–क्षेत्र है, लेकिन यह राशि दशम स्थान में गई है । अतः मिश्रित फल होगा । इसमें स्त्री पुत्र का सुख, धन वृद्धि और सुगम जीवन यापन फल लिखा है तथा नवांशानुसार नेत्र रोग लिखा है, फलस्वरूप इस

दशा में नेत्र रोग को छोड़कर शेष फल मिले। 1989 से 16 वर्ष के लिए वृष दशा हुई। यह शुभ राशि है और लाभ स्थान में स्थित है। नवांशानुसार इसका फल मृत्यु है, लेकिन वृष राशि में केतु लाभ स्थान में होने से उस पर कारकेन्द्र मंगल की दृष्टि रहने से और शुक्र की त्रिपाद दृष्टि रहने से धन वृद्धि और पुत्र की उन्नति, बन्धु–बान्धव सुख, लाभ, भौतिक सुख–वृद्धि लेकिन इस दशा में अनिष्ट फल भी सम्भव है। एतदर्थ जातक को शान्ति विधान हेतु त्र्यम्बक मंत्र का जप, रुद्राभिषेक आदि करना चाहिए, क्योंकि वृष राशि पर मंगल की दृष्टि भी है।

मृत्यु शब्द से तात्पर्य फलित ग्रन्थों में सदैव मृत्यु नहीं होता। शास्त्रों में मृत्यु के आठ प्रकार बताए हैं– बड़ी मुसीबत आना, अत्यधिक धन नाश, प्रतिष्ठा में अत्यन्त कमी, मृत्यु तुल्य शारीरिक कष्ट आदि या वास्तविक मृत्यु, मृत्यु शब्द से समझनी चाहिए।

"व्यथा दुःखं भयं लज्जा रोगः शोकस्तथैव च।
मरणं चापमानं च मृत्युरष्टविधः स्मृतः।।"

पश्चात् मिथुन दशा 2014 सन् तक रहेगी जो सब प्रकार से कल्याणकारी है तथा दूसरी वृष दशा में मृत्यु सम्भव होगी। मिथुन राशि शुभ क्षेत्र एवं शुभ चन्द्रमा से युक्त है, तथापि द्वादशभाव गत रहने से यह शरीर कष्ट और जीवन में किसी बड़े परिवर्तन को द्योतित करती है।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां कालचक्रदशा फलाध्याय एकपंचाशत्तमः।। 51।।

52

।। चरादिदशाफलाध्यायः ।।

पराशर उवाच–

चर–स्थिरादि–संज्ञा या दशा प्रोक्ता पुरा द्विज!।
शुभाशुभफलं तासां कथयामि तवाऽग्रतः।। 1।।
लग्नादि–द्वादशान्तानां भावानां फलकीर्तने।
तत्तद्राशीशवीर्येण यथायोग्यं प्रयोजयेत्।।2।।
बलयुक्ते च राशीशे पूर्णं तस्य तदा फलम्।
फलं मध्यबले मध्यं बलहीने विपर्ययः।। 3।।

पराशर बोले–

पहले ज़ो चर–स्थिरादि दशाएं कही हैं उनका शुभाऽशुभ फल कहता हूँ। प्रत्येक राशि की दशा का फल राशिपति के बलाबल व राशि की भाव स्थिति से निश्चित होगा। साथ ही राशि में स्थित ग्रहों से भी भाव में तारतम्य रहेगा। पुनश्च राशि स्वामी के बलाबल से विशेष निश्चय होगा। यदि राशीश पूर्ण बली हो तो पूरा फल, मध्य बली से मध्यम फल और हीन बली से बहुत कम फल होता है।

यो यो दशाप्रदो राशिस्तस्य रन्ध्रत्रिकोणके।
पापखेटयुते विप्र ! तद्दशादुःखदायिका।। 4।।
तृतीय षष्ठगे पापे जयादिः प्रकीर्तितः।
शुभखेटयुते तत्र जायते च पराजयः।। 5।।
लाभस्थः च शुभे पापे लाभो भवति निश्चितः।
यदा दशाप्रदो राशिः शुभखेटयुतो द्विज।। 6।।
शुभक्षेत्रे हि तद्राशेः शुभं ज्ञेयं दशाफलम्।
पापयुक्ते शुभक्षेत्रे पूर्वं शुभमसत्परे।। 7।।
पापर्क्षे शुभसयुंक्ते पूर्वं सौख्यं ततोऽशुभम्।
पापक्षेत्रे पापयुक्ते सा दशा सर्वदुःखदा।। 8।।
शुभक्षेत्रदशाराशौ युक्ते पापशुभैर्द्विज।। 9।।
पूर्वं कष्टं सुखं पश्चान्निर्विशङ्कं प्रजायते।
शुभक्षेत्रे शुभं वाच्यं पापर्क्षे त्वशुभं फलम्।। 10।।

जिस राशि की दशा हो उससे क्रमशः 5.9.8 में पाप ग्रह हों तो वह दशा कष्टकारक होती है।

जिस राशि से 3.6 भाव में पाप ग्रह हों तो उस दशा में विजय और सुख होता है, लेकिन 3.6 में शुभ ग्रह हों तो पराजय होती है, दशा राशि से ग्यारहवें स्थान में कोई भी ग्रह हो अथवा दशा राशि में ही शुभ ग्रह बैठे हों तो उस दशा में निश्चय से सर्वत्र लाभ होता है।

यदि वह राशि शुभ ग्रह की हो तथा उसमें पाप ग्रह नहीं हो तो दशा का फल सर्वत्र शुभ होता है। यदि शुभ ग्रह की राशि में पाप ग्रह हो तो दशा के पूर्वार्ध में शुभ व उत्तरार्ध में अशुभ फल होता है।

पाप ग्रह की राशि में यदि शुभ ग्रह तो पहले सुख व उत्तराद्र्ध में अशुभ फल होता है, यदि पाप राशि पाप युक्त भी हो तो सारी दशा दुःखदायिनी होती है।

यदि शुभ ग्रह की राशि में पाप और शुभ मिश्रित ग्रह हो तो पहले कष्ट और बाद में निश्चय से सुख कहना चाहिए, लेकिन पाप राशि में शुभाशुभ ग्रह हो तो प्रायः अशुभ फल ही होता है।

1973 से 1980 तक उदाहरण में मेष की चर दशा थी, इससे अष्टम में मंगल–शनि–राहु और पंचम में बृहस्पति है, अतः पाप फल प्रतीत हुआ, इस राशि से तृतीय में शुभ ग्रह चन्द्रमा भी पराजय बताता है। लेकिन लाभ स्थान में शुक्र लाभदायक है, अतः कुल मिलाकर यह समय कष्टकारक एवं बाधाओं वाला होना चाहिए और यही वास्तविकता भी है, वर्तमान धनु दशा शुभ फल देने वाली है।

द्वितीये पंचमे सौम्ये राजप्रीतिर्जयो ध्रुवम्।
पापे तत्र गते ज्ञेयमशुभं तद्दशाफलम्।। 11 ।।
चतुर्थे तु शुभं, सौख्यमारोग्यं त्वष्टमे शुभे।
धर्मवृद्धिर्गुरुजनात्सौख्यं च नवमे शुभे।। 12 ।।
विपरीते विपर्यासो मिश्रे मिश्रं प्रकीर्तितम्।
पाके भोगे च पापाढ्ये देहपीडा मनोव्यथा।। 13 ।।
सप्तमे पापभोगाभ्यां पापे दारार्तिरीरिता।
चतुर्थे स्थानहानिः स्यात्पंच पुत्रपीडनम्।। 14 ।।
दशमे कीर्तिहानिः स्यान्नवमे पितृ पीडनम्।
पाकाद्रुतगते पापे पीड़ा सर्वाप्यबाधिका।। 15 ।।
उक्तस्थानगते सौम्ये ततः सौख्यं विनिर्दिशेत्।
केन्द्रस्थानगते सौम्ये लाभः शत्रुजयप्रदः।। 16 ।।
जन्मकाल ग्रहस्थित्या सगोचर ग्रहैरपि।
विचारितैः प्रवक्तव्यं तत्तद्राशिदशाफलम्।। 17 ।।

दशा राशि से द्वितीय पंचम में शुभ ग्रह होने पर बड़े लोगों से प्रेम, राजाओं से सम्बन्ध और विजय होती है। यदि 2-5 में पाप ग्रह हों तो दशा का अशुभ फल ही होता है।

दशा राशि से चतुर्थ में शुभ ग्रह हों तो सुख वृद्धि और अष्टम में शुभ ग्रह हों तो भी शुभ फल नीरोगता आदि समझना चाहिए।

नवम में शुभ ग्रह रहने पर धर्मवृद्धि, गुरुजनों की कृपा व सुख होता है। यदि इन्हीं भावों में पाप ग्रह हों तो विपरीत फल एवं मिश्रित ग्रह होने पर फल भी मिला–जुला होता है।

यदि दशा पाक राशि और भोग राशि दोनों ही पाप युक्त हों तो शारीरिक व मानसिक पीड़ाएँ होती हैं।

यदि एक में पाप ग्रह हों तो सामान्य पीड़ा और दोनों स्थानों पर पाप ग्रह होने पर विशेष पीड़ा समझनी चाहिए।

पाक व भोग से सप्तम में यदि पाप ग्रह हों तो स्त्री–कष्ट होता है। इसी प्रकार चतुर्थ में पाप ग्रह से स्थान हानि, पंचम में होने से सुत पीड़ा, दशम में कीर्ति हानि नवम में पितृ कष्ट होता है।

एकादश स्थान में पाप ग्रह हों तो अबाध पीड़ा होती है। इन्हीं स्थानों में शुभ ग्रह रहने पर उन–उनसे अर्थात् पिता, राजा आदि से सुख होता है। पाक राशि से केन्द्र–त्रिकोणों में शुभ ग्रह हों तो सर्वत्र विजय आदि होती है।

यह फल विचार जन्मकालीन ग्रह स्थिति व गोचर का सम्मिलित विचार करके कहना चाहिए।

हमारे उदाहरण में वर्तमान में धनु राशि की चर दशा है, धनु राशि से द्वितीय में सूर्य बुध मिश्रित ग्रह हैं। षष्ठ में एक पाप ग्रह, सप्तम केन्द्र में शुभ चन्द्रमा, नवम में बृहस्पति है। अतः यह दशा अधिक शुभ फलों वाली और कुछ अनिष्टकारक फल भी देगी। धनु से द्वादश में कई पाप ग्रह रहने से जिस समय धनु राशि में पाप ग्रह हों तो अत्यन्त कष्ट होना चाहिए।फलस्वरूप 1990 में जिस समय धनु में शनि मकर में राहु वृश्चिक में सूर्य और भोग राशि वृष में मंगल गोचर कर रहा था उस समय इस व्यक्ति को रोग के कारण जीवन–मरण का सामना करना पड़ा था, लेकिन शुभ राशि आदि होने से परम अनिष्ट नहीं हुआ। इस प्रकार बुद्धि प्रयोग पूर्वक दशाओं का फल निर्धारित करना चाहिए।

यश्च राशिः शुभाक्रान्ता पूर्वपश्चाच्छुभा ग्रहाः।
तद्दशा शुभदा प्रोक्ता विपरीते विपर्ययः।। 18।।
त्रिकोणरन्ध्ररिष्फस्थैः शुभपापैः शुभाऽशुभम्।
तद्दशायां च वक्तव्यं फलं दैवविदा सदा।। 19।।

जो राशि शुभ ग्रह से युक्त हो अथवा जिसके आगे–पीछे शुभ ग्रह हों तो उस राशि की दशा शुभ फल देने वाली होती है और अशुभ ग्रह रहने पर विपरीत फल समझना चाहिए।

जिस राशि में 5.8.9.12 में शुभ पाप ग्रह मिश्रित हों तो उस दशा में फल भी मिला–जुला ही कहना चाहिए।

बाधा स्थान से फल निर्णय :-

मेषकर्कतुलानक्रराशीनांचयथाक्रमम् ।

बाधा स्थानानि सम्प्रोक्ता कुम्भगोसिंहवृश्चिकाः । । 20 । ।

पाकेशाक्रान्तराशौ वा बाधास्थाने शुभेतरे ।

स्थिते सति महाशोको बन्धनव्यसनामयाः । । 21 । ।

1.4.7.10 राशियों के क्रमशः 11.2.5.8 राशियों बाधा स्थान हैं, अर्थात् सभी चर राशियों से ग्यारहवीं राशि बाधा स्थान होती है ।

दशा राशि के स्वामी ग्रह के साथ या बाधा स्थानों में पाप ग्रह रहने पर उस राशि की दशा में बहुत विपत्ति, महान शोक व बन्धनादि फल होते हैं ।

उच्चस्वर्क्षग्रहे तस्मिंच्छुभं सौख्यं धनागमः ।

तच्छून्यं चेद्सौख्यं स्यात्तद्दशा न फलप्रदा । । 22 । ।

जिस राशि में उसका स्वामी स्थिति हो या उसी राशि में कोई ग्रह उच्चस्थ हो तो वह दशा धन, सुख, एवं शुभ फल देने वाली होती है । यदि उक्त राशियों में अथवा दशा राशि से पूर्वोक्त भावों में कोई भी ग्रह न हो तो प्रायः फल नहीं होता ।

अन्तर्दशा फल :-

बाधकव्ययषड्रन्ध्रे राहुयुक्ते महद्भयम् ।

प्रस्थाने बन्धनप्राप्ती राजपीडा रिपोर्मयम् । । 23 । ।

रव्याररराहुशनिभः भुक्तराशिः स्थिरा यदि ।

तद्राशिभुक्तौ पतनं राजकोपान् महद्भयम् । । 24 । ।

भुक्तिराशित्रिकोणे तु नीचखेटः स्थितो यदि ।

तद्राशौ वा युते नीचे पापे मृत्युभयं वदेत् । । 25 । ।

जिस राशि से बाधा स्थान या 6.8.12 में राहु हो तो उस राशि की दशा में महान् भय, यात्रा में बन्धन, राज पक्ष से पीड़ा व शत्रुओं से भय होता है ।

सूर्य मंगल राहु शनि जिन राशियों में हों उन राशियों की अन्तर्दशाएँ आने पर राजकोप और भय होता है ।

यदि उसी अन्तर्दशा राशि से त्रिकोण में नीच ग्रह हो या पाप ग्रह हो तो मृत्यु भय होता है । उदाहरण में धनु राशि से द्वादश में राहु है, अतः अशुभ फल सम्भव है, लेकिन पहले शुभ फल भी निश्चित किया गया है ।

अतः साधारण कष्ट सम्भव है, अतः धनु में वृश्चिक की अन्तर्दशा जनवरी 96 तक अशुभ हो सकती है।

भुक्तिराशौ स्वतुङ्गस्थे त्रिकोणे वापि खेचरे।
यदा भुक्तिदशा प्राप्ता तदा सौख्यं लभेन्नरः।। 26।।
नगरग्रामनाथत्वं पुत्रलाभं धनागमम्।
कल्याणं भूरि भाग्यं च सेनापत्यं महोन्नतम्।। 27।।
पाकेश्वरो जीवदृष्टः शुभ राशि स्थितो यदि।
तद्दशायां धनप्राप्तिर्मङ्गलं पुत्रसम्भवम्।। 28।।

अन्तर्दशा राशि या उससे त्रिकोण में उच्चस्थ ग्रह हो तो सब सुख प्राप्त होते हैं। उस दशा में नगर या ग्राम का अधिकार, पुत्र–प्राप्ति, धन–लाभ, सर्व मंगल भाग्योदय, सेनापतित्व और बहुत उन्नति होती है।

यदि दशा का स्वामी ग्रह शुभ राशि में हो और उसे बृहस्पति देखता हो तो धन लाभ, पुत्र लाभ और सर्वविध मंगल होता है।

ग्रहों की शत्रु राशियां :–

सितासितभयुग्माश्च सूर्यस्य रिपुराशयः।
कौर्पितौलिघटाश्चेन्दोर्भौमस्य रिपुराशयः।। 29।।
घटमीननृयुक्तौलिकन्याज्ञस्य ततः परम्।
कर्कमीनालिकुम्भाश्च राशयो रिपवः स्मृताः।। 30।।
वृषतौलिनृयुक्कन्या राशयो रिपवो गुरोः।
सिंहालिकर्कचापाश्च शुक्रस्य रिपुराशयः।।31।।
मेषसिंहधनुःकौर्पिककर्कटाः शनि शत्रवः।
एवं ग्रहान्तर्दशां चिन्तयेत् कोविदो द्विज!।। 32।।

2.7.10.11.3 ये सूर्य की शत्रु राशियाँ हैं। 8.7.11 ये राशियाँ चन्द्रमा की शत्रु हैं, 9.12.3.7.6 मंगल की शत्रु राशियाँ हैं। 4.12.8.11 ये बुध की शत्रु राशियां हैं। 2.7.3.6 ये बृहस्पति की शत्रु राशियाँ हैं। 5.8.4.9 ये शुक्र की शत्रु राशियाँ हैं। तथा 1.5.9.8.4 ये शनि की शत्रु राशियाँ है।

इस प्रकार शत्रु राशियों का विचार करते हुए भी दशा–अन्तर्दशा का फल निश्चय करना चाहिए।

अर्थात् राशि स्वामी ग्रह की शत्रु राशियों की अन्तर्दशाएँ प्रायः शुभ नहीं होंगी, ऐसा समझना चाहिए।

ये राजयोगदा ये च शुभ मध्यगता ग्रहाः।

यस्माद्वा द्वित्रितुर्यस्थाः ग्रहाः शुभफलप्रद्राः।। 33।।

तद्दशायां शुभं ब्रूयाद्राजयोगादिसम्भवम्।

शुभद्वयान्तरगतः पापोऽपि शुभदः स्मृतः।। 34।।

जो ग्रह जन्म समय में राजयोग कारक हों अथवा जो ग्रह दो शुभ ग्रहों के बीच में हों अथवा जिनसे 2.3.4 भावों में ग्रह हों, वे ग्रह शुभ फलद या योगकारक होने से अपना फल अपनी दशा में तथा राशियों की दशा के सन्दर्भ में अपनी राशि या अपनी आश्रित राशि की दशा में देंगे। दो शुभ ग्रहों के बीच गया हुआ पाप ग्रह भी शुभ फलद ही समझना चाहिए।

दशा प्रवेश गोचर : फल समन्वय –

गता शुभदशा मध्यं दशा सौम्यस्य शोभना।

शुभा यस्य त्रिकोणस्थास्तद्दशापि शुभप्रदा।। 35।।

आरम्भान्तौ मित्रशुभराश्योर्यदि फलं शुभम्।

प्रतिराश्यैवमब्दाद्यं विभज्य तत्फलं वदेत्।। 36।।

(i) दो योगप्रद ग्रहों की दशाओं के बीच में आने वाली साधारण फलप्रद शुभ ग्रह दशा भी शुभ व योग फल ही देती है।

(ii) जिस ग्रह से 1.5.9 में शुभ ग्रह या शुभ फलप्रद योगकारक हों, उसकी दशा भी शुभफ़लद है।

(iii) दशा के आरम्भ व अन्त में यदि ग्रह मित्र राशि या शुभ राशि में गोचर करे तो दशा फल में शुभता बढ़ जाती है।

(iv) इन नियमों का प्रयोग जन्म व गोचर में करते हुए दशेश के प्रत्येक राशि परिवर्तन के समय दशाफल का विचार करना चाहिए।

आरम्भात्तत्त्रिकोणे तु सौम्ये तु शुभमावहेत्।

शुभराशौ शुभारम्भे दशा स्यादति शोभना।। 37।।

शुभादिराशौ पापश्चेद्दशारम्भे शुभा स्मृता।

शुभारम्भे कथा केति प्रारम्भस्य फलं वदेत्।। 38।।

आरम्भे पापराशौ वा यदीशो दुर्बलो द्विज !।

नीचादौ तद्दशाद्यन्ते वदेद् भाग्यविपर्ययम्।। 39।।

(i) दशारम्भ में दशेश ग्रह या राशि से 1.5.9 भावों में शुभ ग्रह होने से दशा शुभ होती है।

(ii) शुभ ग्रह की राशि की दशा शुरू हो तथा दशारम्भ में उस राशि में कोई शुभ ग्रह हो तो वह दशा निशेष शुभ हो जाती है। अथवा शुभ राशि में अन्य शुभ राशि की दशा (अन्तर्दशा) आने पर शुभ फल होता है।

(iii) पाप राशि में शुभ राशि की दशा आने पर अथवा दशा प्रवेश के समय पाप दशा राशि में शुभ ग्रह गोचर करने से जब वह दशा शुभ हो जाती है तब शुभ राशि दशा की तो बात ही कया ? अर्थात् वह तो निर्विवाद शुभ ही होगी।

इस प्रकार दशारम्भ के आधार पर दशा का फल अवश्य कहना चाहए।

(iv) जिस राशि की दशा प्रारम्भ हो, उस राशि का स्वामी यदि दशारम्भ के समय नीच, परम नीच या अति शत्रु स्थान या अस्त या पराजित हो तो उस राशि की दशा में भाग्य विपरीत हो जाता है। अर्थात् भाग्य रूठ जाता है।

नीच दशापति : भाग्य हानि :-

यत्र स्थितो नीचखेटस्त्रिकोणे वाऽथ नीचगः।
तथा राशीश्वरे नीचे सम्बन्धो नीचखेटकैः।। 40।।
भाग्यस्य विपरीतत्वं करोत्येव द्विजोत्तम!।
धन-धान्यादि हानिश्च देहे रोगभयं तथा।। 41।।

जिस राशि का स्वामी स्वयं नीचगत हो या जिस राशि से 1.5.9 में कोई ग्रह नीचस्थ हो अथवा जिस राशि का स्वामी नीचगत हो या नीचगत ग्रहों से सम्बन्ध करता हो तो उस राशि (या ग्रह) की दशा में भाग्य बिल्कुल प्रतिकूल हो जाता है तथा धन-धान्य की हानि, रोगभय, शरीर-कष्ट होता है।

आशय यह है कि सामान्य नियमों से शुभ दशा भी दशारम्भ की प्रतिकूल परिस्थितियों से अशुभ हो जाती है। इसी तरह सामान्यतः अशुभ दशा भी दशारम्भ गोचर से शुभ हो जाया करती है।

दशाप्रसंगात् राहुकेतु की स्वराशि :-

राहोः केतोश्च कुम्भादि वृश्चिकादि चतुष्टयम्।
स्वयं तत्र समारम्भस्तद्दशायां शुभं भवेत्।। 42।।

वृश्चिकादि चार राशियाँ (8.9.10.11) केतु की तथा कुम्भादि चार (11.12.1.2) राहु की स्वराशियाँ हैं। यदि दशारम्भ में राहु-केतु इन राशियों

में (या पूर्वोक्त उच्चादि राशियों) हों तो इनकी दशाएँ शुभ होती हैं। इनकी अधिष्ठित राशि की दशा में भी इसी तरह विचार करना चाहिए।

यद्दशायां शुभं ब्रूयात्स चेन्मारकसंस्थितः।

यस्मिन् राशौ दशान्तः स्यात्तस्मिन् दृष्टे युतेऽपि वा।। 43।।

शुक्रेण विधुना वा स्याद्राजकोपाद्धनक्षयः।

दशान्तश्चेदरिक्षेत्रे राहुदृष्टयुतेऽपि वा।। 44।।

इदं फलं शनेः पाके न विचिन्त्यं द्विजोत्तम!।

दशाप्रदे नक्रराशौ न विचिन्त्यमिदं फलम्।। 45।।

(i) जिस ग्रह की स्थिति मारक स्थान में हो अथवा दशा राशि मारक स्थानों में हो अथवा दशान्त के समय जो राशीश ग्रह या राशि एक साथ शुक्र व चन्द्र से दृष्टयुत हो तो उस दशा में राजकोप से धनहानि होती है।

(ii) यदि दशान्त में राशीश या दशापति शत्रु क्षेत्री हो या राहु से युक्त दृष्ट हो तो वह दशा भी शुभ नहीं होती।

(iii) उक्त विचार शनि की दशा में या मकर राशि की दशा में नहीं समझना चाहिए।

राहोर्दशान्ते सर्वस्वनाशो मरणबन्धने।

देशान्निर्वासनं वा स्यात्कष्टं वा महदश्नुते।। 46।।

तत्त्रिकोणगते पापे निश्चयाद्दुःखमादिशेत्।

एवं शुभाऽशुभं सर्वं निश्चयेन वदेद् बुधः।। 47।।

(i) राहु की दशा अर्थात् राहु की अधिष्ठित राशि, राहु या स्वराशि की दशा के अन्त में सर्वस्व नाश, मृत्यु या बन्धन, देशत्याग या महान् कष्ट होता है।

(ii) राहु राशि दशा से 1.5.9 में पाप ग्रह हों तो उस दशा में निश्चय से दुःख होता है। इस प्रकार राशियों की दशा (चर स्थिरादि) में शुभाशुभ फल का निश्चय करना चाहिए।

राह्वाश्रित राशिस्तु भवेद्यदि दशाप्रदः।

तत्र कालेऽपि पूर्वोक्तं चिन्तनीयं प्रयत्नतः।। 48।।

दशारम्भो दशान्तो वा मारके चेन्न शोभनम्।

तस्मिन्नेव च राहुश्चेन्निरोधो द्रव्यनाशनः।। 49।।

(i) राहु की आश्रित राशि की दशा में भी उक्त प्रकार से फल विचार करना चाहिए।

(ii) दशारम्भ या दशान्त में यदि मारक राशि या मारकेश ग्रह का योग हो अर्थात् दशेश मारक राशि में गोचर करे या दशा राशि में मारकेश गोचर करे तो या उनमें राहु हो तो धनहानि तथा बन्धन व रुकावटें होती हैं ।

राशि दशा : राहु का गोचर :–

यत्र क्वापि च भे राहुः दशारम्भे विनाशनम् ।
गृहभ्रंशः समुद्दिष्टो धने राहुधनार्तिकृत् ।। 50 ।।
चन्द्रशुक्रौ द्वादशे चेत् राजकोपो भवेद् ध्रुवम् ।
भौमकेतू तत्र यदि वधोऽग्नेर्महती व्यथा ।। 51 ।।
चन्द्रशुक्रौ धने विप्र! यदि राज्यं प्रयच्छतः ।
दशारम्भे दशान्ते च द्वितीयस्थमिदं फलम् ।। 52 ।।

(i) दशारम्भ में जिस राशि भाव में यदि राहु हो, उस भाव का नाश होता है । उदाहरणार्थ दशा राशि से द्वितीय राशि में राहु हो तो धन व कुटुम्ब का नाश होता है । चतुर्थ में हो तो सुख नाश, पंचम में हो विद्यापुत्रादि का नाश समझें ।

(ii) दशा राशि से द्वादश में चन्द्र व शुक्र इकट्ठे हों तो निश्चय से राजकोप से धनहानि होती है ।

(iii) यदि दशा राशि से द्वादश में मंगल व केतु हों तो वध, अग्निभय तथा व्यथा होती है ।

(iv) दशारम्भ में चन्द्र व शुक्र धन भाव में हों तो राज्य लाभ होता है । इस तरह दशा राशि से द्वितीय राशि में पाप ग्रहों (मंगल, राहु, केतु) के होने से अशुभ फल कहना चाहिए ।

हमारे उदाहरण में धनु राशि की 8 वर्ष की चर दशा 25.1.92 को शुरू हुई थी । उस दिन की राशि दशा कुण्डली इस प्रकार है ।

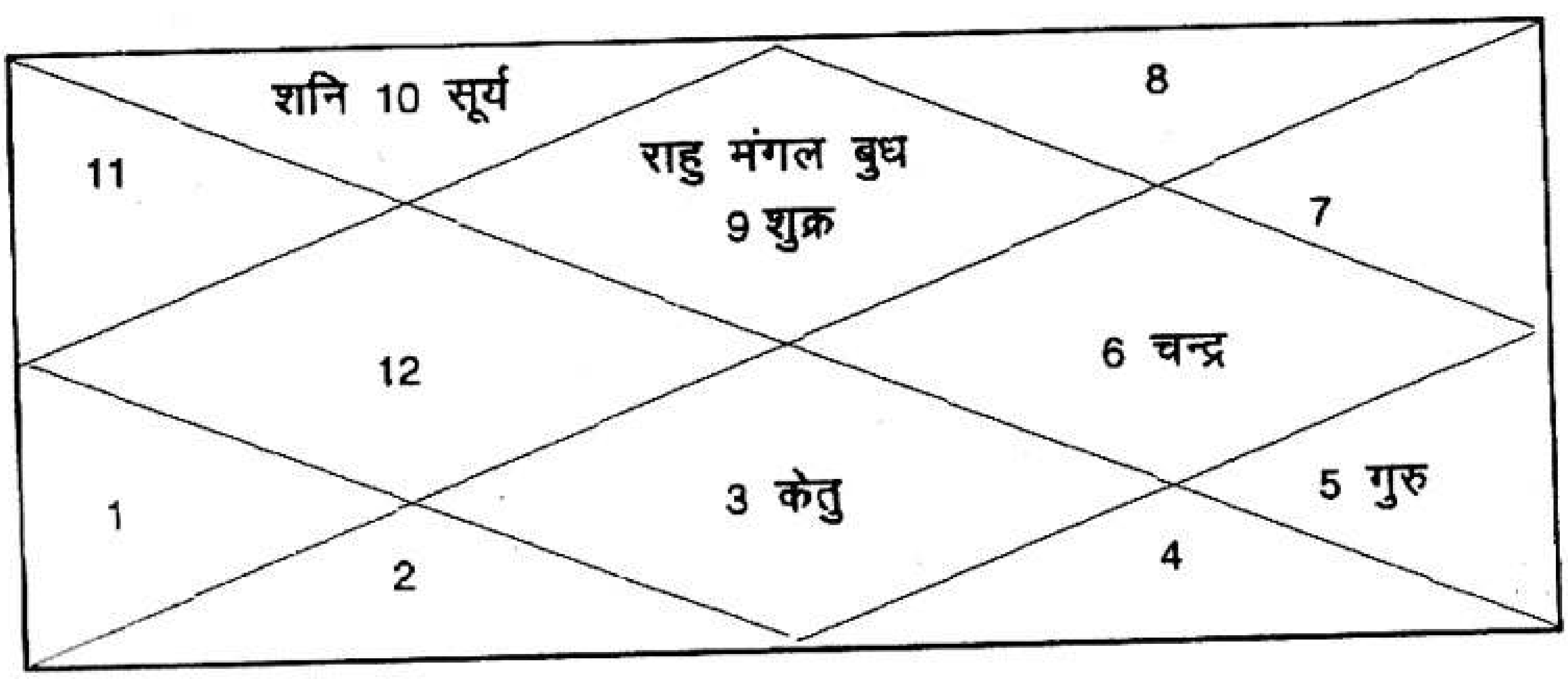

(i) दशा राशि से 8.5.9 में पाप ग्रह नहीं हैं। धनु राशि शुभ क्षेत्र है। अतः दशा शुभ है।

(ii) दशा राशि में शुभ पाप ग्रह मिश्रित हैं, अतः दशारम्भ में कष्ट सम्भव है। दशारम्भ 8 वर्ष का तिहाई 2 वर्ष 8 मास अर्थात् सितम्बर 94 तक है।

वास्तव में भी दशारम्भ में इस व्यक्ति को शारीरिक कष्ट हुआ। शेष दशा शुभ होगी।

(iii) सप्तमस्थ पाप ग्रह स्त्री पीड़ा बताता है, जो वास्तविकता भी है।

(iv) दशा राशि में राहु शरीर कष्ट द्योतित करता है।

अर्गला भावों से दशा फल :–

एवमर्गलभावानां फलं विज्ञैः प्रदर्शितम्।
यस्य पापः शुभो वापि ग्रहस्तिष्ठेच्छुभार्गले।। 53।।
तेन दृष्टेक्षितं लग्नं प्राबल्यायोपकल्पते।
यदि पश्येद्ग्रहस्तत्र विपरीतार्गलस्थितः।। 54।।
तद्भावस्य दशायास्तु विपरीतं फलं वदेत्।
सद्दृष्टेऽपि शुभं ब्रूयात् निर्विशंकं द्विजोत्तम !।। 55।।

इसी पद्धति से दशा राशि से अर्गलाभावों में फल विचार करना चाहिए। जिस राशि की निर्बाध शुभ या पाप अर्गला हो, वह ग्रह यदि दशा राशि को देखे तो दशा में प्रबल फल मिलता है।

यदि उक्त ग्रह अर्गला कारक होकर दशा राशि को न देखें तथा विपरीत अर्गला हो तो उस राशि की दशा अशुभ होती है।

दशा राशि को कोई भी शुभ ग्रह देखे तो भी दशा शुभ होती है।

पूर्वोदाहरण में 4.5.2.11 अर्गला स्थानों में दो पाप ग्रह हैं, उनमें सूर्य उच्चनवांश गत व शनि स्वक्षेत्री है। बाधास्थान 9.10.12.3 में दो शुभ ग्रह स्थित हैं। राशि पर राशीश गुरु की दृष्टि है। राशि में शुक्र बुध स्थित हैं तथा चन्द्रमा की त्रिपाद दृष्टि है। अतः कुल मिलाकर दशा शुभ रहेगी।

यस्मिन् भावे शुभस्वामिसम्बन्धस्तुंगखेचरः।
स्यात् तद्भावदशायां तु अत्यैश्वर्यमखण्डितम्।। 56।।

यद्भावेशः स्वार्थराशिमधितिष्ठंश्च पश्यति ।
स्यात्तद्भावदशाकाले धनलाभो महत्तरः ।। 57 ।।
यस्माद् व्ययगतो यस्तु यद्दशायां धनक्षयः ।
यस्मात् त्रिकोणगाः पापास्तत्रात्मशुभनाशनम् ।। 58 ।।
पुत्रहानिः पितुः पीडा मनस्तापो महान् भवेत् ।
यस्मात् त्रिकोणगा रिःफरन्ध्रेशार्कारसूर्यजाः ।। 59 ।।

(i) दशा राशि में यदि राशीश, शुभ ग्रह या कोई उच्चगत ग्रह हो या ये ग्रह उससे सम्बन्ध करें तो उस राशि की दशा में बहुत ऐश्वर्य होता है।

(ii) जिस राशि की दशा में राशि से द्वितीय भाव में ही राशीश हो तो उस दशा में धन लाभ अधिक होता है।

(iii) राशीश यदि दशा राशि से द्वादश में हो तो धन हानि होती है।

(iv) राशि से 1.5.9 में पाप ग्रह हों तो शुभ फल नष्ट होते हैं तथा जातक को कष्ट होता है।

(v) जिस राशि में या उससे त्रिकोण में जन्मकालीन अष्टमेश, द्वादशेश, सूर्य, मंगल या शनि हों तो उस दशा में पुत्रहानि, पितृकष्ट, मन–स्ताप होता है।

पुत्रपीडा द्रव्यहानिस्तत्र केत्वहिसंगते ।
विदेशभ्रमणं क्लेशो भयं चैव पदे पदे ।। 60 ।।
यस्मात् षष्ठाष्टमे क्रूरनीचखेटादयः स्थिताः ।
रोगशत्रुनृपालेभ्यो मुहुः पीड़ा सुदुःसहा ।। 61 ।।
यस्माच्चतुर्थः क्रूरः स्यात् भूगृहक्षेत्रनाशनम् ।
पशुहानिस्तत्र भौमे गृहदाहः प्रमादकृत् ।। 62 ।।
शनौ हृदयशूलं स्यात् सूर्ये राजप्रकोपनम् ।
सर्वस्वहरणं राहौ विषचौरादिजं भयम् ।। 63 ।।

(i) जिस राशि में दशा प्रवेश के समय या जन्म समय राहु केतु हों तो उसकी दशा में क्लेश, भय, विदेश भ्रमण होता है।

(ii) जिस राशि से 6.8 में क्रूर या नीचगत ग्रह हो तो उसकी दशा में रोग, शत्रु व राजा का भय होता है।

(iii) जिससे चतुर्थ में पाप ग्रह हो तो भूमि व घर की हानि तथा मंगल हो तो गृहदाह एवं चतुष्पद हानि होती है।

(iv) यदि चतुर्थ में शनि हो तो हृदय शूल, सूर्य हो तो राजभय तथा राहु हो तो सर्वस्वनाश तथा विष चोरादि का भय होता है।

हमारे पूर्वोक्त उदाहरण में धनु राशि की दशा 25.1.2000 को समाप्त होकर तभी वृश्चिक दशा शुरू होगी। तत्कालीन कुण्डली इस प्रकार है।

।। धनु राशि दशान्त कुण्डली ।।

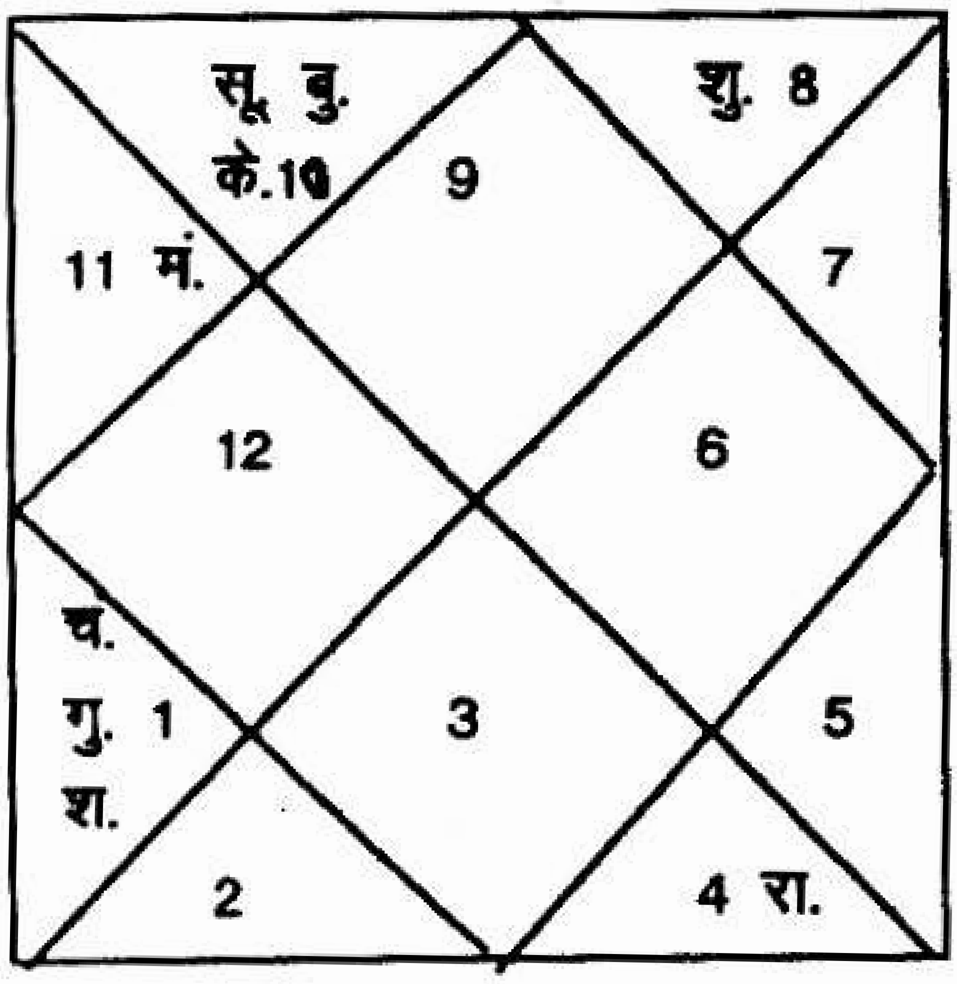

।। वृश्चिकदशारम्भ कुण्डली ।।

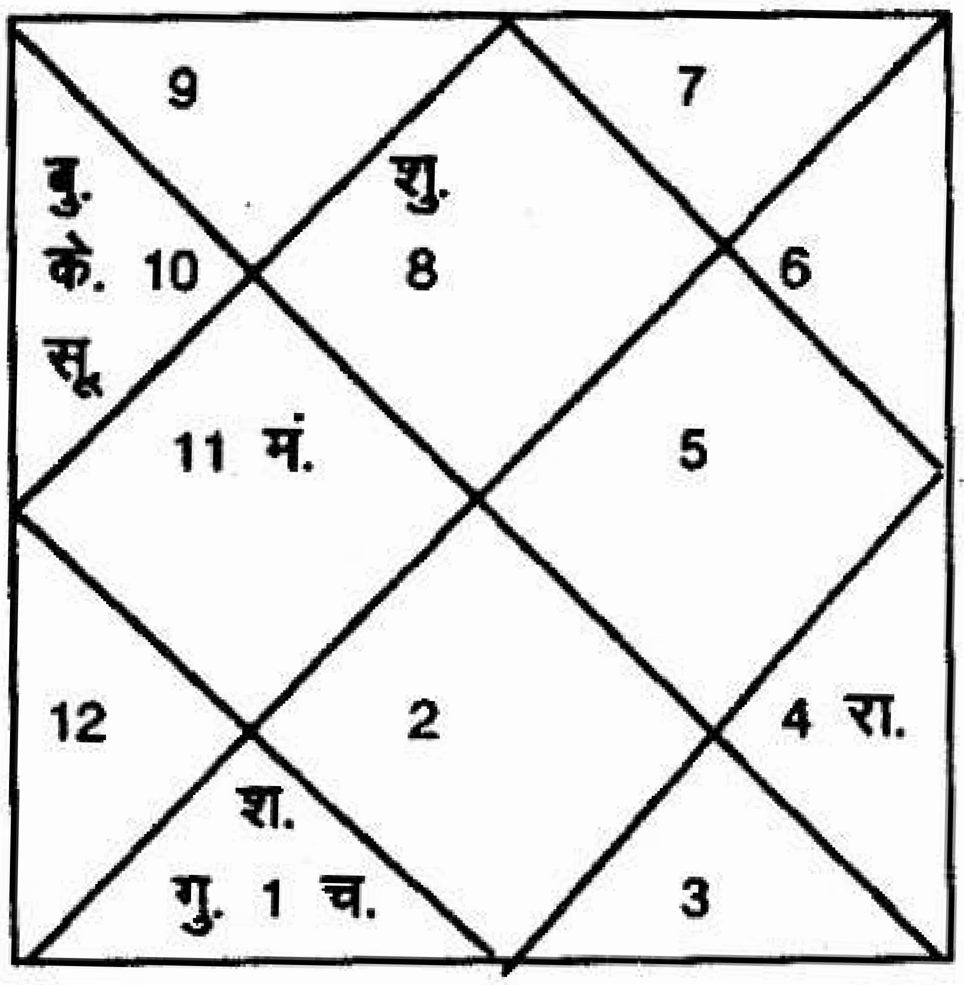

(i) धनु दशान्त में त्रिकोण में नीचगत शनि, राशीश भी नीच योगी है, लेकिन द्वादश में शुभ ग्रह तथा पंचम में दो शुभ ग्रह, तृतीय में मंगल है जो शुभ है। पुनश्च अष्टम में राहु शरीर कष्ट को प्रमाणित करता है।

(ii) वृश्चिक चर दशारम्भ में राशि स्वामी मंगल केन्द्र में शुभ है। 8.12 में कोई ग्रह न होना भी शुभ है। षष्ठ में नीचगत शनि रोग शत्रु या राजा से भय तथा त्रिकोण में राहु भी अशुभ है। तृतीय में निराभास अर्गला होने से शुभ की अधिकता तथा साधारण शरीर कष्ट दिखता है। चतुर्थस्थ मंगल अचल सम्पत्ति या वाहन की हानि दिखाता है। इसका समन्वय जन्मकालीन ग्रह स्थिति से भी करना चाहिए।

यस्माद्दशमभे राहौ पुण्यतीर्थाटनं भवेत्।
यस्मात् कर्मायभाग्यर्क्षगताः शोभनखेचराः ।। 64 ।।
विद्यार्थधर्म सत्कर्मख्याति पौरुषसिद्धयः।
यतः पंचम कामारिगताः स्वोच्चशुभाः ग्रहाः ।। 65 ।।
पुत्रदारादि सम्प्राप्तिनृपपूजा महत्तरा।
यस्मिन् पुत्राय कर्माम्बु नव लग्नाधिपाः स्थिताः ।। 66 ।।
तत्तद्भावार्थसिद्धिः स्यात् श्रेयो योगानुसारतः।

(i) जिस राशि से दशम में राहु हो तो उस दशा में पुण्य लाभ व तीर्थ यात्राएँ होती हैं।

(ii) जिससे 9.10.11 राशियों में शुभ ग्रह हों तो उस राशि की दशा में विद्या, धन, धर्म, सत्कार्य, कीर्ति व परिश्रम की सफलता होती है ।

(iii) जिससे 5.6.7 में उच्चगत (स्वक्षेत्री, मूल त्रिकोणी भी) ग्रह या शुभ ग्रह हों तो उसकी दशा में पुत्र, स्त्री की वृद्धि, राजसम्मान मिलता है ।

(iv) जिसमें 5.11.10.4.9.1. इन भावों के स्वामी हों, उसकी दशा में तत्तद् भाव से सम्बन्धित फल मिलता है । ग्रह के बलाबल व योगादि का विचार भी करना चाहिए ।

उक्त उदाहरण में धनु राशि दशा के प्रारम्भ में 9.10 में शुभ ग्रह हैं । धनु राशि में लाभेश शुक्र, दशम पंचमेश मंगल, चतुर्थेश शुक्र स्थित है । अतः इस दशा में लाभ, धन वाहन प्राप्ति, प्रतिष्ठा व सुख होगा । लेकिन अष्टमेश राहु होने से शरीर कष्ट भी द्योतित होता है । अभी तक यही वास्तविकता भी है ।

वृश्चिक राशि दशारम्भ में चतुर्थेश लाभेश शुक्र वाहन व प्रतिष्ठा का सुख देने की बात भी प्रमाणित करता है । शरीर कष्ट के योग पहले दिखा चुके हैं ।

यस्मिन् गुरुर्वा शुक्रो वा शुभेशोवापि संस्थितः ।। 67 ।।
कल्याणंसर्वसम्पत्तिर्देवब्राह्मणतर्पणम् ।
यतश्चतुर्थे स्वोच्चस्थाः शुभस्वामीग्रहाश्च वा ।। 68 ।।
वाहनग्रामलाभश्च पशुवृद्धिश्च भूयसी ।
तत्र चन्द्रे च लाभः स्यात् बुध धान्यरसान्वितः ।। 69 ।।
पूर्णे विधौ निधिप्राप्तिर्लभेद् वा मणिसंचयम् ।
तत्र शुक्रे मृदंगादिवाद्यगान पुरस्कृतः ।। 70 ।।

(i) जिस राशि में गुरु या शुक्र दशारम्भ (या जन्म समय) में स्थित हों या जिस राशि में 5.9 भावेश स्थित हों या पापी केन्द्रेश स्थित हों तो उसकी दशा में सर्वविध कल्याण, सम्पत्ति–प्राप्ति, देवताओं व ब्राह्मणों की प्रसन्नता होती है ।

(ii) जिस राशि से चतुर्थ में उच्चस्थ ग्रह या शुभ भावेश या शुभ ग्रह हों, उसकी दशा में वाहन लाभ, जायदाद लाभ व पद–प्राप्ति तथा पशुओं की वृद्धि होती है ।

(iii) यदि दशा राशि में पूर्ण चन्द्रमा हो तो गड़े धन की प्राप्ति या बहुत सी मणियाँ आदि प्राप्त होती हैं ।

(iv) उस राशि में शुक्र हो तो मृदंगादि वाद्य, गायन या (स्वकार्यक्षेत्र) में अग्रगण्य व पुरस्कृत होता है।

पूर्व उदाहरण में वृश्चिक राशि में शुक्र, चतुर्थ में परम योग कारक मंगल है, अतः इनकी दशा में भूमि, वाहन, घर, पद्‌वी, प्रतिष्ठा में वृद्‌धि व स्वकार्य क्षेत्र में सम्मान आदि फल होंगे।

आन्दोलिकाप्तिर्जीवे तु कनकान्दोलिका ध्रुवम्।

लग्नकर्मेशभाग्येशतुंगस्थशुभयोगतः।। 71।।

सर्वोत्कर्षमहैश्वर्यं साम्राज्यादि महत्फलम्।

एवं तत्तद् भावदायफलं चापि विचिन्तयेत्।। 72।।

(i) जिस राशि में गुरु हो तो उसकी दशा में सुवर्णमण्डित पालकी अर्थात् बेश कीमती वाहन का लाभ होता है।

(ii) जिस राशि में लग्नेश, कर्मेश, भाग्येश, उच्चस्थ ग्रह या शुभ ग्रह हो तो उसकी दशा में सब प्रकार से उन्नति, ऐश्वर्य, साम्राज्य लाभ आदि फल होता है।

इसी विधि से दशारम्भ कुण्डली बनाकर और जन्म कालीन ग्रहों की स्थिति का विचार करके फल कहना चाहिए।

उक्तोदाहरण में वृश्चिक दशा में अनेक प्रकार से सुख व शुभ फल की प्राप्ति प्रमाणित होती है।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां चरादि दशाफलाध्यायो द्विपंचाशत्तमः।। 52।।

53

।। अथ दशाफलगुणाध्यायः।।

दशेश के 18 गुण :–

एकैकोडुदशास्वीयैर्गुणैरष्टादशात्मभिः।

भिन्नं फलविपाकं तु कुर्याद्वै चित्रसंकुलम्।। 1।।

परमोच्चे तुंगमात्रे तदर्वाक् तदुपर्यपि।

मूलत्रिकोणभे स्वर्क्षे स्वाधिमित्रग्रहस्यभे।। 2।।

तत्काल सुहृदो गेहे उदासीनस्य भे तथा।

शत्रोर्भेधिरिपोभे च नीचान्तादूर्ध्वदेशभे।। 3।।

तस्मादर्वाङ्नीचमात्रे नीचान्ते परमांशके ।

नीचारिवर्गे सखले स्ववर्गे केन्द्रकोणभे ।। 4 ।।

व्यवस्थितस्य खेटस्य समरे पीडितस्य च ।

गाढमूढस्य च दशा पचति स्वैर्गुणैर्फलम् ।। 5 ।।

प्रत्येक दशेश (नक्षत्राधारित विंशोत्तरीदशादि या राशिदशाओं में दशेश ग्रह) अपने 18 गुणों के अनुसार विचित्र फल देता है । ये 18 गुण इस प्रकार हैं–

1. परमोच्चगत 2. उच्चराशिगत 3. उच्चराशि के आगे या पीछे उच्चाभिलाषी या त्वरित उच्च भ्रष्ट 4. मूलत्रिकोणगत 5. स्वक्षेत्री 6. अधिमित्र या मित्रग्रहगत 7. तात्कालिक मित्रक्षेत्री 8. समक्षेत्री 9. शत्रुक्षेत्री या अधिशत्रुक्षेत्री 10. नीच राशि के आसपास, नीचाभिलाषी या अभी अभी नीच राशि से निर्गत 11. नीचराशि 12. परम नीचगत 13. नीच या शत्रु वर्गगत 14. क्रूरग्रह संयुक्त 15. स्ववर्गगत 16. केन्द्र त्रिकोणगत 17. युद्ध में पराजित 18. अस्तंगत ।

उक्त गुणों के अनुसार दशान्तर्दशा में ग्रह फल देता है । इन सब गुणों में क्रमशः प्रभाव कम होता जाता है । परमोच्च में सर्वशुभ व अस्तंगत में सर्व अशुभ क्रमशः समझना चाहिए । इन्हीं गुणों के आधार पर दशा की सम्पूर्णा आदि संज्ञाएँ होती हैं ।

सम्पूर्णा दशा :–

परमोच्चगतो यस्तु योऽतिवीर्यसमन्वितः ।

सम्पूर्णाख्या दशा तस्य राज्यभोग्य शुभप्रदा ।। 6 ।।

लक्ष्मी कटाक्ष चिह्नानां चिदावासफलप्रदा ।

परमोच्चगत या अति बलवान् (षड्बली) ग्रह की दशा 'सम्पूर्णा दशा' कहलाती है । इस दशा में राज्य लाभ, भौतिक सुख–प्राप्ति, शुभ फल, लक्ष्मी की कृपा तथा भरे–पूरे परिवार व मकान आदि का सुख होता है ।

पूर्णा दशा :–

तुंगमात्रगतस्यापि तथा वीर्याधिकस्य च ।। 7 ।।

पूर्णाख्या बहुलैश्वर्यदायिनी च दशा मता ।

रुजप्रदा तथा किंचित् अपरग्रह योगतः ।। 8 ।।

उच्चराशिगत या बलवान् ग्रह की दशा 'पूर्णा' कहलाती है । इस दशा में भी मनुष्य को .बहुत ऐश्वर्य अर्थात् सांसारिक समृद्धि प्राप्त होती है ।

लेकिन उक्त ग्रह यदि पापयुक्त या पापभावेशों से युक्त या अशुभ भावों में स्थित हों तो कुछ रोगप्रद भी होते हैं। तब भी ऐश्वर्यादि फल तो मिलता ही है। मूलत्रिकोणी या स्वक्षेत्री ग्रह की दशा को भी इसी श्रेणी में रखा जाना चाहिए।

रिक्ता दशा :-

अति नीचगतस्यापि दुर्बलस्य ग्रहस्य तु।

रिक्ता त्वनिष्टफलदा व्याध्यनर्थमृतिप्रदाः।। 9।।

जो ग्रह अति नीच अर्थात् परम नीच में हो या षड्बलों से निर्बल हो, उसकी दशा 'रिक्ता' कहलाती है। इस दशा में अनिष्ट फल, बीमारी, विपत्ति, कष्ट तथा अन्यथा सम्भव हो तो मृत्यु होती है।

अवरोहिणी दशा :-

अत्युच्चादतिनीचस्थमध्यगस्यावरोहिणी।

नामानुरूपफलदा हानिदा राशियोगतः।।10।।

जो ग्रह परमोच्च से आगे तथा परम नीच के बीच कहीं भी हो तथा स्वराशिगत या मूलत्रिकोण न हो तो उसकी दशा 'अवरोहिणी' कहलाती है। ये दशाएँ नामानुसार फल देती हैं। अर्थात् ग्रह जितना अधिक नीच के निकट होता जाएगा, तदनुसार ही शुभ फलों में अवरोह अर्थात् न्यूनता आती जाएगी।

मध्यमा दशा :-

मित्रोच्चभावप्राप्तस्य मध्यमा ह्यर्थदा दशा।

नामानुरूपफलदा ग्रहवीर्यवशाद् द्विज!।। 11।।

जो ग्रह अपने मित्र या अधिमित्र की राशि में हो या अपने अधिमित्रादि की उच्चराशि में हो तो उसकी दशा 'मध्यमा' कहलाती है।

यह दशा भी ग्रह के बलाबलानुसार मध्यम फल तथा धन देती है।

आरोहिणी दशा :-

नीचान्तादुच्चभागान्तं भषट्कमध्यगस्य च।

आरोहिणी दशा ज्ञेया नामतुल्यफलप्रदा।। 12।।

नीचराशि से आगे की 6 राशियों में तथा उच्च से पूर्व कहीं पर स्थित ग्रह की दशा 'आरोहिणी' कहलाती है।

इस दशा में नीच ग्रह के बलाबल व अन्यग्रहयोगादि से आरोहणात्मक अर्थात् क्रमशः बढ़ता हुआ फल होता है।

अधमा दशा :–

अधमाख्या दशा विप्र ! नीचारिभांशगस्य च।
भयक्लेशव्याधिदुःखवर्धिनी क्लेशदायिनी ।। 13 ।।

जो ग्रह नीचगत, शत्रुक्षेत्री या नीच नवांश गत या शत्रु नवांश गत हो तो उसकी दशा 'अधमा' कहलाती है।

इस दशा में भय, क्लेश, रोग आदि बढ़ते हैं। उक्त सारी दशाएँ नामानुसार ही फल देती हैं।

भाग्येश व गुरु का सम्बन्ध : शुभ दशा :–

भाग्येशगुरुसम्बन्धोयोगदृक्केन्द्रभादिभिः।
परेषामपि दायेषु भाग्योपक्रममुन्नयेत् ।। 14 ।।

जिस ग्रह से भाग्येश या बृहस्पति का किसी भी प्रकार से चतुर्विध सम्बन्धों में से कोई सम्बन्ध बने अर्थात् दशेश से केन्द्र त्रिकोण में गुरु या भाग्येश हो या दशेश को भाग्येश या गुरु देखे तो ऐसे ग्रह की दशा में भी भाग्य वृद्धि होती है। अर्थात् सामान्य नियमों से दशेश यदि अशुभ फलदायक हो तो भी गुरु व भाग्येश की दृष्टि उसकी शत्रुता को बढ़ा देगी। यदि दशेश शुभ हुआ तथा उससे गुरु व भाग्येश का कोई सम्बन्ध हुआ तब तो मणि कांचन योग होगा ही अर्थात् शुभ फल होगा।

वक्री ग्रह की दशा :–

जातके यस्तु फलदो भाग्ययोगप्रदोऽथ यः।
सफलो वक्रिमादूर्ध्वमन्यानपि च खेचरान् ।। 15 ।।
दुर्बलानसमर्थांश्च फलदानेषु योगतः।
तारतम्यात्सुसम्बन्धा दशा ह्येताः फलप्रदाः ।। 16 ।।
स्वकेन्द्रादिजुषां तेषां पूर्णांघ्रिव्यवस्थया।
एवं सर्वग्रहाणां च स्वस्वान्तर्दशास्वपि ।। 17 ।।

(i) पाराशरीय नियमों से जन्म कुण्डली के योगकारक ग्रहों (भाग्यवर्धक) का निर्णय करें।

(ii) वक्री भाग्यवर्धक या योगकारक ग्रह अपनी दशान्तर्दशा के दौरान जब मार्गी रहेगा, तब पूर्ण फल देगा, तथा वक्री अवस्था में साधारण योग फल देगा।

(ii) योगकारक ग्रहों का सम्बन्ध होने पर अन्य निर्बल, असमर्थ ग्रह भी अपनी दशान्तर्दशा में योगकारकों के बलाबलानुसर शुभ फल देते हैं।

(iv) सभी दशाओं में केन्द्रगत ग्रहों की दशा में पूर्ण फल, (शुभ या अशुभ) पणफरगत ग्रह मध्यफलद तथा आपोक्लिमगत चौथाई शुभ फल देता है। इसका भी समन्वय दशा फल में करना चाहिए।

हमारे उदाहरण में वर्तमान में शनि की विंशोत्तरी चल रही है तथा चरदशा धनुराशि की है। शनि पणफर में स्थित है। योगकारक मंगल के साथ है तथा स्वयं शनि भी सप्तमकेन्द्रेश होने से शुभता भी लिए हुए है। मंगल की दशा जीवन में आने की सम्भावना नहीं है। अतः शनि मारकेश व अष्टमेश होते हुए भी योग फल देने में समर्थ है। लेकिन योगफल आधा तथा मारक फल भी आधा देगा। इस महादशा में जातक की अच्छी उन्नति हुई है। इसमें भी जब मंगल की अन्तर्दशा होगी या गुरु की अन्तर्दशा या शुक्र की अन्तर्दशा होगी तो विशेष शुभ फल मिलेगा। राहु की अन्तर्दशा में सहसा बहुत शुभ फल व अनिष्ट की आशंका भी रहेगी। कई दशा प्रकारों (जो जहाँ लागू हो) से एक साथ शुभ फल आने पर विशेष शुभ फल बताना चाहिए।

शीर्षोदयभगाः स्वस्वदशादौ स्वफलप्रदाः।
उभयोदयराशिस्थदशामध्ये फलप्रदा।। 18।।
पृष्ठोदयर्क्षगाः खेटाः स्वदशान्ते फलप्रदाः।
निसर्गतश्च तत्काले सुहृदां हरणे शुभम्।। 19।।
सम्पादयेत्तदाकष्टं तद्विपर्ययगामिनाम्।

(i) जन्म समय में शीर्षोदय राशिगत ग्रह (5. 6. 7. 8. 11) अपनी दशा के प्रारम्भ में (मध्य से पूर्व) फल देते हैं तथा उभयोदय (मीन) राशिगत ग्रह दशा के मध्य में फल देते हैं। पृष्ठोदय (1. 2. 3. 4. 9. 10) राशिगत ग्रह दशा के अन्त में फलप्रद होते हैं।

(ii) अपने निसर्गमित्र या तत्कालमित्र की अन्तर्दशा में सभी ग्रह अपना फल देते हैं। यहाँ योगकारक का प्रसंग है, अतः अपना योगफल प्रत्येक ग्रह अपने सम्बन्धी ग्रह या मित्र ग्रह की अन्तर्दशा में देगा।

(iii) जो ग्रह शत्रु या अति शत्रु होंगे, उनकी अन्तर्दशा में अपना अशुभ फल देंगे।

दशा फल निर्णय : एक नियम :–

दशेशाक्रान्तभावर्क्षादारभ्य द्वादशर्क्षकम् ।।20।।
भक्त्वा द्वादशराशीनां दशाभुक्तिं प्रकल्पयेत् ।
एकैकराशेर्या तत्र सुहृत्स्वक्षेत्रगामिनी ।।21।।
तस्यां राज्यादिसम्पत्तिपूर्वकं शुभमीरयेत् ।
दुःस्थानरिपुगेहस्थ नीचक्रूरयुता च या ।।22।।
तस्यामनर्थकलहं रोगमृत्युभयादिकम् ।
बिन्दुभूयस्त्वशून्यत्ववशात् स्वीयाष्टवर्गके ।।23।।
वृद्धिं हानिं च तद्राशिभावस्य स्वगृहात्क्रमात् ।
भावयोजनया विद्यात् सुतस्त्र्यादि शुभाशुभम् ।।24।।

गणित साधित अन्तर्दशा प्रत्यन्तर्दशा के अतिरिक्त सम्पूर्णदशा का सूक्ष्म फल जानने का यह भी एक प्रकार है।

(i) जिस राशि में जन्म समय ग्रह स्थित हो, उसी राशि से प्रारम्भ करके समान दशा काल 12 के बराबर एक एक राशि की अन्तर्दशा समझें।

(ii) जिस राशि में वलवान् स्वक्षेत्री, उच्चगत, मूलत्रिकोणी, मित्रक्षेत्री ग्रह हो, उसकी अन्तर्दशा में राजयोग व धनसम्पत्ति की वृद्धि होती है।

(iii) जो राशि 6. 8.12 भावों में गई हो या जिस राशि में शत्रु क्षेत्री, नीचगत, पापी ग्रह, अस्तंगत ग्रह हो, उसकी अन्तर्दशा में अनर्थ व कलह होता है।

(iv) उस ग्रह के अष्टकवर्ग में जिस राशि में अधिक शुभ रेखाएँ हों, उसकी अन्तर्दशा में बहुत शुभ व कम रेखा वाली राशि की अन्तर्दशा में अनिष्ट फल यथाक्रम होता है।

(v) शुभ राशि जिस भाव में पड़े, उस अन्तर्दशा में उस भाव से सम्बन्धित फल पुत्र, स्त्री, धन, प्रतिष्ठा आदि की वृद्धि होती है।

हमारे उदाहरण में शनि दशा वर्तमान है। इसके विंशोत्तरीमान से 19 वर्ष हैं। 19 ÷ 12 = 1 वर्ष 7 मास एक अन्तर्दशा का मान है। शनि वृश्चिक राशि में है तथा शनि दशा का प्रारम्भ 29. 9. 1983 को हुआ। तदनुसार राशि अन्तर्दशा चक्र इस प्रकार बनेगा।

।। शनि महादशा राश्यन्तर्दशा चक्र ।। (उदा०)

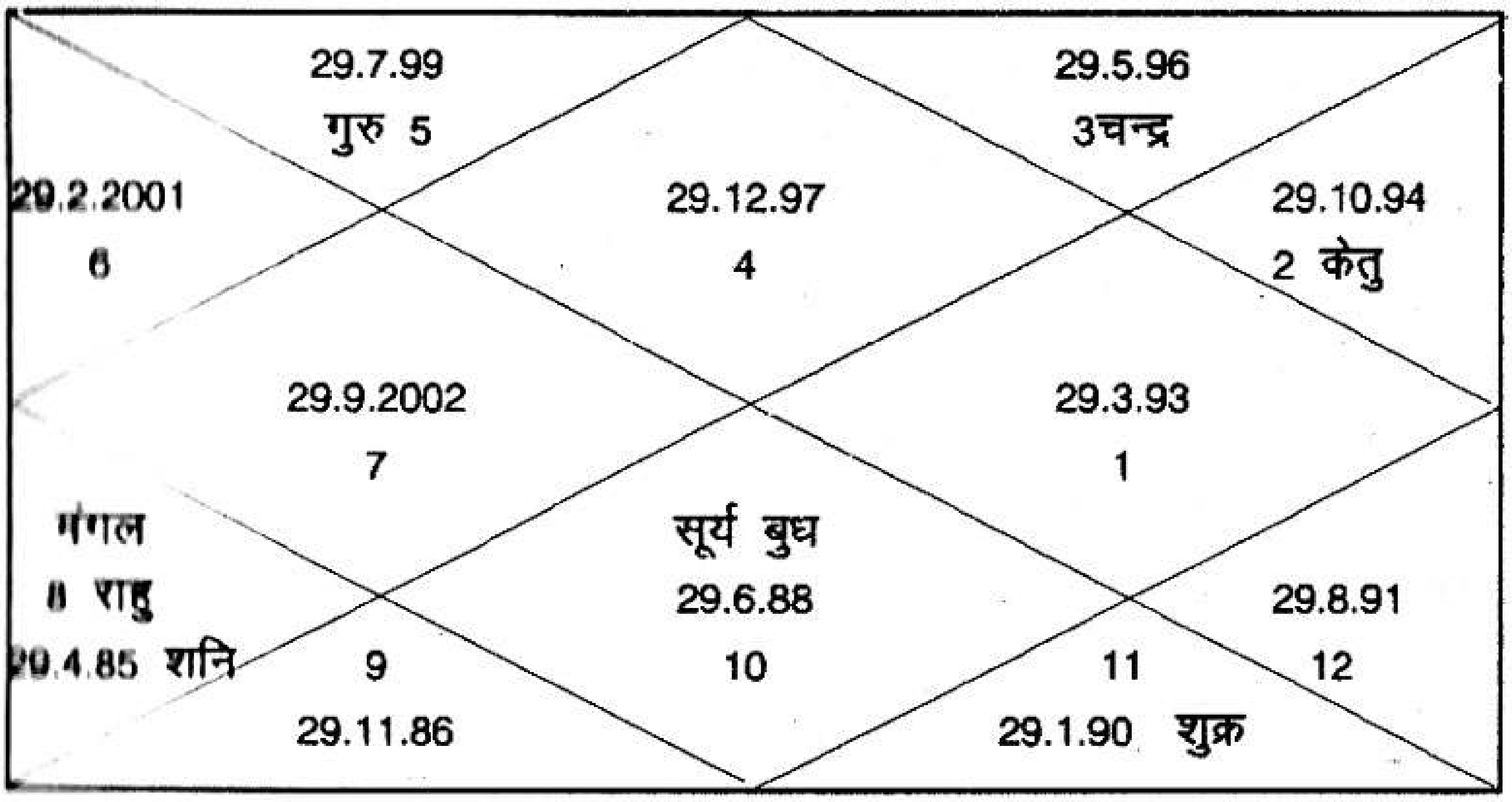

(i) सितम्बर 83 से अप्रैल 85 तक वृश्चिकान्तर्दशा है । इसमें योग कारक स्वक्षेत्री ग्रह है । अतः इस अवधि में विद्या, बुद्धि, मन्त्र शक्ति पुत्रसन्तानादि की वृद्धि होगी । वास्तव में भी इस अवधि में पुत्रप्राप्ति, विद्या वृद्धि आदि फल हुए थे ।

(ii) 29. 11. 1986 तक धनुराशि षष्ठस्थ है । स्वस्वामी से दृष्ट होने से पूर्ण अशुभ नहीं है ।

(iii) 29. 1. 90 तक कुम्भदशा में मित्रक्षेत्री वर्गोत्तमी शुक्र पणफरगत होने से भूमि व गृह की प्राप्ति हुई थी ।

(iv) मीनान्तर्दशा में पदोन्नति, मेषान्तर्दशा में प्रतिष्ठा वृद्धि, व्यवसाय वृद्धि, वृषान्तर्दशा में धनसम्पत्ति, वाहनादि का लाभ हुआ । वृष में पाप ग्रह केतु से दुर्घटना भी बतानी चाहिए ।

इस प्रकार वास्तविक उदाहरणों में इस नियम को घटाकर चमत्कारी फलादेश किया जा सकता है ।

धात्वादिराशिभेदाच्च धात्वादिग्रह योगतः ।
शुभपापदशाभेदात् शुभपापयुतैरपि ।। 25 ।।
इष्टानिष्टस्थानभेदात् फलभेदात् समुन्नयेत् ।
एवं सर्वग्रहाणां च दशास्वन्तर्दशास्वपि ।। 26 ।।
स्वराशितो राशियुक्तिं प्रकल्प्य फलमीरयेत् ।
अन्तरन्तर्दशां स्वीयां विभज्यैवं पुनः पुनः ।। 27 ।।

(i) पहले राशियों व ग्रहों के जो धातु आदि बताए गए हैं, शुभान्तर्दशा में उनकी वृद्धि तथा पापराश्यन्तर्दशा में उनसे हानि भी समझें।

(ii) योगकारक ग्रह व पापफलप्रदग्रहों के भेद तथा सामान्यतः निसर्गपाप व शुभ के भेद को भी ध्यान में रखें। इसी तरह शुभ व पाप भाव का भी समन्वय करें।

(iii) जिस प्रकार राशि अन्तर्दशा कही हैं तदनुसार ही अन्तर्दशा मान के भी 12 समान भाग करके राशियों की प्रत्यन्तर्दशा की भी योजना करके फलादेश करें।

उदाहरण में वर्तमान में वृषान्तर्दशा है। 19 मास की अन्तर्दशा के बारह भाग किए तो 1 मास 17 दिन 30 घड़ी की प्रत्यन्तर्दशा हुई।

29.3.93 से 16.5.93 तक वृष प्रत्यन्तर, 4.7.93 तक मिथुन 21.8.93 तक कर्क, 9.11.93 तक सिंह, 26.12.93 तक कन्या, 14.2.94 तक तुला, 1.4.94 तक वृश्चिक। इत्यादि क्रम से प्रत्यन्तर्दशाएँ होंगीं।

इसी विधि से राशियों में भी अन्तर्दशाएँ कल्पित करके फलादेश कर सकते हैं। राशि दशा में ग्रहों की अन्तर्दशाएँ व ग्रहदशा में राशियों की अन्तर्दशाएँ हो सकती हैं। इसमें कुछ भी विचित्र नहीं है।

इष्टानिष्ट भावभेदात् कहकर महर्षि ने बताया है कि महादशेश से अन्तर्दशेश यदि शुभ भावों में पड़े तो उसमें शुभ फल तथा 4.8.12 में पड़े तो अशुभ फल होगा। जो ग्रह जिस फल का बोधक हो, उससे सम्बन्धित फल की हानि वृद्धि होगी। 3.6.10.11 उपचय स्थानों में परिगणित होने से अन्तर्दशेश यदि इन स्थानों में हो तो सामान्यतः अपने फल की वृद्धि करेगा। अन्य स्थानों में अपने शुभाशुभ फल की हानि करेगा।

दशावाहन से फल विचार :–

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि दशावाहनमुत्तमम्।
प्राणिनां च हितार्थाय कथयामि तवाग्रतः।। 28।।
जन्मभाद् दिनभं यावत् गणनीयमनुक्रमात्।
नवभिस्तु हरेद् भागं शेषं वाहनमुच्यते।। 29।।
गर्दभो घोटको हस्ती महिषो जम्बुसिंहकौ।
काको हंसो मयूरश्च वाहनं नवधा मतम्।। 30।।
खरे च कलहं विद्यात् अश्वे बुद्धिर्विदेशके।
गजे लाभं विजानीयान्महिषे व्याधिजं भयम्।। 31।।

जम्बुके च भयं घोरं सिंहे च विजयं स्मृतम् ।

काके चिन्ता मयूरे च सुखसम्पत्तयः सदा ।।

हंसे जयं विजानीयात् यात्रा काले विशेषतः ।। 32 ।।

(i) अब मैं दशा के वाहन से दशा का फल निर्धारण कहता हूँ। इसका प्रयोग दशारम्भ के नक्षत्र से देखना चाहिए।

(ii) जन्मनक्षत्र से दिननक्षत्र (दशारम्भ का दिन) तक गिनकर 9 का भाग दें। शेष संख्या से वाहन होता है।

(iii) गधा, घोड़ा, हाथी, भैंसा, गीदड़, सिंह, काक, हंस, व मयूर ये 9 दशावाहन होते हैं।

(iv) गधा वाहन से कलह, अश्व से बुद्धि व विदेश यात्रा, गज से लाभ, महिष से रोग, गीदड़ से भय, सिंह से विजय, काक से चिन्ता, मयूर से सम्पत्ति व हंस से विजय होती है।

(v) इसका प्रयोग दैनिक नक्षत्र से करके भी यात्रा, विवाद, मुकदमे आदि में शुभाशुभ फल देखते समय भी विशेषतया करना चाहिए।

(vi) इसी प्रकार अन्तर्दशा के आरम्भ नक्षत्र से अन्तर्दशा का वाहन भी जान सकते हैं।

वर्तमान शनि दशा 29.9.93 को मृगशिरा नक्षत्र में प्रारम्भ हुई। जन्म नक्षत्र आर्द्रा से गिनने पर $27 \div 9 = 0$ शेष अर्थात् हंस वाहन है। फलस्वरूप इस दशा में सर्वत्र विजय होगी। वर्तमान में चन्द्रान्तर्दशा 2.9.94 को पुनर्वसु नक्षत्र में शुरू हुई। आर्द्रा से पुनर्वसु तक 2 संख्या होने से विदेश यात्रा या यात्रा से धन लाभ होगा।

इसी विधि से दैनिक फल भी जाना जा सकता है।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां दशाफल–
गुणाध्यायस्त्रिपंचाशत्तमः ।।53।।

54

।। अथ सूर्यान्तर्दशाफलाध्यायः ।।

सूर्य में सूर्यान्तर्दशाफल :–

स्वोच्चे स्वभे स्थितः सूर्यो लाभे केन्द्रे त्रिकोणके ।

स्वदशायां स्वभुक्तौ च धनधान्यादि लाभकृत् ।। 1 ।।

नीचाद्यशुभराशिस्थो विपरीतं फलं दिशेत् ।

द्वितीयद्यूननाथेऽर्के त्वपमृत्युभयं वदेत् ।। 2 ।।

तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयजपं चरेत् ।

सूर्यप्रीतिकरीं शान्तिं कुर्यादारोग्यलब्धये ।। 3 ।।

(i) सूर्य यदि स्वोच्चगत या स्वक्षेत्री हो या बलवान्, शुभभावेश होकर 1.4.7.10.5.9.11 भावों में हो तो सूर्यदशा में सूर्यान्तर्दशा होने पर धनधान्य की वृद्धि होती है ।

(ii) सूर्य यदि नीचगत या अशुभ भाव या अशुभ राशि (अतिशत्रु, शत्रुक्षेत्री) में हो तो धन–धान्य की हानि होती है ।

(iii) यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो इस अन्तर्दशा में अपमृत्यु (दुर्घटना आदि) का भय होता है ।

(iv) इसकी शान्ति के लिए मृत्युंजय मन्त्र का जप, सूर्य दान, सूर्योपासना आदि करने से सुरक्षा रहती है ।

ग्रह शान्ति के विषय में आगे शान्त्यध्यायों में विस्तार से बताया जाएगा ।

चन्द्रान्तर्दशा फल :–

सूर्यस्यान्तर्गतेचन्द्रेलग्नात्केन्द्रत्रिकोणके ।

विवाहं शुभकार्यं च धनधान्यसमृद्धिकृत् ।। 4 ।।

गृहक्षेत्राभिवृद्धिं च पशुवाहनसम्पदाम् ।

तुंगे वा स्वर्क्षगे वापि दारसौख्यं धनागमम् ।। 5 ।।

पुत्रलाभं सुखं चैव सौख्यं राजसभागमम् ।

महाराजप्रसादेन इष्टसिद्धिं सुखावहाम् ।। 6 ।।

सूर्य में चन्द्रान्तर्दशा रहने पर यदि चन्द्रमा केन्द्र त्रिकोण में हो तो विवाह व अन्य शुभ मांगलिक कार्य, धनधान्य की वृद्धि, गृह मकान आदि की वृद्धि, पशु व वाहनादि की वृद्धि होती है ।

यदि चन्द्रमा स्वक्षेत्री या उच्चगत हो तो स्त्रीसुख, धनलाभ, पुत्रलाभ, सुख, राजा से मैत्री, राजा की कृपा से मनोरथ सिद्ध होता है ।

क्षीणे वा पापसंयुक्ते दारपुत्रादिपीडनम् ।

वैषम्यं जनसंवादं मृत्युवर्गविनाशनम् ।। 7 ।।

विरोधं राजकलहं धनधान्यपशुक्षयम् ।

षष्ठाष्टमव्यये चन्द्रे जलभीतिं मनोरुजम् ।। 8 ।।

बन्धनं रोगपीड़ां च स्थानविच्युतिकारकम् ।

दुःस्थानं चापि वित्तेन दायादजनविग्रहम् ।। 9 ।।

निर्दिशेत् कुत्सितान्नं च चौरादिनृपपीडनम् ।

मूत्रकृच्छ्रादिरोगश्च देहपीडा तथा भवेत् ।। 10 ।।

(i) चन्द्रमा क्षीण या पापयुक्त हो तो स्त्रीपुत्रादि को कष्ट, बदनामी, सेवकों की हानि, विरोध, राजकीय पुरुषों से विवाद, धन–धान्य पशु की हानि होती है ।

(iii) 6. 8. 12 में चन्द्रमा हो तो पानी से भय, मनोविकार, बन्धन, रोगपीड़ा, स्थानभ्रंश होता है ।

(iv) खराब जगह पर स्थान परिवर्तन, बँटवारे से सम्बन्धित या उत्तराधिकार सम्बन्धी विवाद, खराब भोजन, चोर व राजा से पीड़ा, मूत्ररोग, शरीर कष्ट होता है ।

दायेशाल्लाभभाग्ये च केन्द्रे वा शत्रुसंयुते ।

भोगभाग्यादिसन्तोष दारपुत्रादिवर्धनम् ।। 11 ।।

राज्यप्राप्तिं महत्सौख्यं स्थानप्राप्तिं च शाश्वतीम् ।

विवाहं यज्ञदीक्षां च सुमाल्याम्बरभूषणम् ।। 12 ।।

वाहनं पुत्रपौत्रादि लभते सुखवर्धनम् ।

महादशेश से यदि 9. 11. 4. 7. 10 में चन्द्रमा हो या शुभयुक्त हो तो भोगवृद्धि, भाग्यवृद्धि, सन्तोष, स्त्री–पुत्रादि की वृद्धि, राज्यलाभ, सुख, पदवी, विवाह, यज्ञादि कार्य, सुन्दर वस्त्रोपभोग, वाहन लाभ, पुत्रपौत्रादि की वृद्धि होती है ।

दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते ।। 13 ।।

अकाले भोजनं चैव देशाद्देशं गमिष्यति ।

द्वितीय द्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।।

श्वेतां गां महिषीं दद्यात् शान्तिं कुर्यात्सुखाप्तये ।। 14 ।।

(i) महादशेश से चन्द्रमा 6. 8. 12 भावों में हीनबली हो तो असमय से भोजन व निरन्तर प्रवास होता है ।

(ii) यदि चन्द्रमा 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है । सुख प्राप्ति के लिए सफेद गाय या दुधारू भैंस का दान करना चाहिए ।

भौमान्तर्दशा फल :–

सूर्यस्यान्तर्गते भौमे स्वोच्चे स्वक्षेत्रलाभगे ।

लग्नात्केन्द्र त्रिकोणे वा शुभकार्यं समादिशेत् ।। 15 ।।

भूलाभं कृषिलाभं च धनधान्यविवर्धनम् ।

गृहक्षेत्रादिलाभं च रक्तवस्त्रादि लाभकृत् ।। 16 ।।

लग्नाधिपेन संयुक्ते सौख्यं राजप्रियं वदेत् ।

भाग्यलाभाधिपैर्युक्ते लाभश्चैव भविष्यति ।। 17 ।।

बहुसेनाधिपत्यं च शत्रुनाशं मनोदृढ़म् ।

आत्मबन्धुसुखं चैव भ्रातृवर्धनकं तथा ।। 18 ।।

(i) सूर्य महादशा में मंगल की अन्तर्दशा हो तथा मंगल स्वोच्च या स्वक्षेत्र या एकादश भाव में हो या लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो तो शुभ कार्य सम्पन्न होते हैं ।

(ii) भूमि का लाभ, कृषि वृद्धि, धन–धान्य में वृद्धि, जमीन–जायदाद का लाभ, लाल वस्त्रों की प्राप्ति होती है ।

(iii) लग्नेश व मंगल साथ हों तो सुख व राजप्रीति होती है ।

यदि 9.11 भावेश से युक्त हो तो लाभयोग बनाते हैं ।

(iv) तथा बहुत सी सेना का स्वामित्व, बहुत से सहायकों की प्राप्ति, शत्रु नाश, मन में उत्साह व हिम्मत, अपने बन्धुओं का सुख व भाइयों की बढ़ोत्तरी होती है ।

दायेशाद् व्ययरन्ध्रस्थे पापैर्युक्तेऽथ वीक्षिते ।

आधिपत्य बलैर्हीने क्रूरबुद्धि मनोरुजम् ।। 19 ।।

कारागृहे प्रवेशं च कथयेद् बन्धुनाशनम् ।

भ्रातृवर्गविरोधं च कार्यनाशमथापि वा ।। 20 ।।

नीचे वा दुर्बले भौमे राजमूलाद् धनक्षयः ।

द्वितीय द्यूननाथे तु देहे जाड्यं मनोरुजम् ।। 21 ।।

सुब्रह्मजपदानं च वृषोत्सर्गं तथैव च ।

शान्तिं कुर्वीत विधिवदायुरारोग्यसिद्धये ।। 22 ।।

(i) महादशेश से 8.12 भाव में मंगल हो या मंगल पापदृष्ट या युक्त हो या निर्बल अथवा योग कारक न हो तो क्रूर बुद्धि का उदय, मनोविकार, कारागृहवास, बन्धुओं का नाश, भाइयों से वैर, कार्यहानि होती है ।

(ii) यदि मंगल बलहीन या नीचगत हो तो राजकोप से धनहानि, 2.7 भावेश हो तो शरीर में जड़ता, मनोविकार, शरीरकष्ट होता है ।

(iii) इसकी शान्ति के लिए वेदपाठ, जप, दान, साँड छोड़ना आदि शान्ति कार्य करने चाहिए, इससे आयु व स्वास्थ्य की रक्षा होती है ।

राहु अन्तर्दशा फल :–

सूर्यस्यान्तर्गते राहौ लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
आदौ द्विमासपर्यन्तं धननाशो महद्भयम् ।। 23 ।।
चौराहिव्रणभीतिश्च दारपुत्रादिपीडनम् ।
तत्परं सुखमाप्नोति शुभयुक्ते शुभांशके ।। 24 ।।
देहारोग्यं मनस्तुष्टी राजप्रीतिकरं सुखम् ।
लग्नादुपचये राहौ योगकारकसंयुते ।। 25 ।।
दायेशाच्छुभराशिस्थे राजसम्मानमादिशेत् ।
भाग्यवृद्धिं यशोलाभं दारपुत्रादिपीडनम् ।। 26 ।।
पुत्रोत्सवादिसन्तोषं गृहे कल्याणशोभनम् ।

(i) सूर्य दशा में राहु की अन्तर्दशा हो तथा राहु लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में हो तो पहले दो मास तक धननाश , महान् भय, चोर, सर्पभय, घाव, स्त्री व पुत्रादि को कष्ट होता है । इसके उपरान्त सुख होता है ।

(ii) यदि राहु शुभ ग्रह से युक्त या शुभ नवांश में हो तो अच्छा स्वास्थ्य, मन में सन्तोष, राजा से मित्रता होती है ।

(iii) महादशेश से शुभ भावों में राहु हो अथवा 3.6.10.11 भावों में दशापति से गिनने पर हो या योग कारक ग्रह से युक्त हो तो राजसम्मान मिलता है । भाग्यवृद्धि, यशप्राप्ति, स्त्री व पुत्र को कष्ट, पुत्र से सम्बन्धित उत्सव, घर में प्रसन्नता के अवसर होते हैं ।

दायेशादथ रिःफस्थे रन्ध्रे वा बलवर्जिते ।। 27 ।।
बन्धनं स्थाननाशश्च कारागृहनिवेशनम् ।
चौराहिव्रणभीतिश्च दारपुत्रादिवर्धनम् ।। 28 ।।
चतुष्पाज्जीवनाशश्च गृहक्षेत्रादिनाशनम् ।
गुल्मक्षयादिरोगश्च, ह्यतिसारादिपीडनम् ।। 29 ।।

महादशेश से 8.12 भाव में राहु हो या निर्बल हो तो बन्धन, स्थानहानि, कारावास, चोरभय, सर्पभय, घावभय, स्त्रीपुत्र की वृद्धि, चौपाए धन की हानि, अचल सम्पत्ति की हानि, जिगर तिल्ली, क्षय या पेचिश रोग से पीड़ा होती है ।

द्विसप्तस्थे तथा राहौ तत्स्थानाधिपसंयुते ।
अपमृत्युभयं चैव सर्पभीतिश्च जायते ।। 30 ।।
दुर्गापाठं प्रकुर्वीत छागदानं समाचरेत् ।
कृष्णां गां महिषीं दद्याच्छान्तिमाप्नोत्यसंशयम् ।। 31 ।।

(i) राहु यदि 2.7 भावों में हो या इन भावों के स्वामी ग्रहों (मारकेश) से युक्त हो तो अपमृत्यु व सर्प का भय होता है ।

(ii) अनिष्ट शान्ति के लिए दुर्गापाठ, भेड़–बकरी का दान, काली गाय या भैंस का दान करना चाहिए ।

गुरु अन्तर्दशा फल :–

सूर्यस्यान्तर्गते जीवे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
स्वोच्चे मित्रस्य वर्गस्थे विवाहं राजदर्शनम् ।। 32 ।।
धनधान्यादि लाभं च पुत्रलाभं महत्सुखम् ।
महाराजप्रसादेन इष्टकार्यार्थलाभकृत् ।। 33 ।।
ब्राह्मणप्रियसन्मानंप्रियवस्त्रादिलाभकृत् ।
भाग्यकर्माधिपवशाद् राज्यलाभं वदेद् द्विज ! ।। 34 ।।
नरवाहनयोगश्च स्थानाधिक्यं महत्सुखम् ।

सूर्य महादशा में गुरु की अन्तर्दशा हो तथा गुरु लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो, स्वोच्च, स्वक्षेत्री या मित्रवर्गगत हो तो विवाह व राजा के साथ भेंटवार्ता होती है ।

इस दशा में धन धान्य का लाभ, पुत्र लाभ, खूब सुख, बड़े लोगों की सहायता से इष्ट सिद्धि, धनलाभ, ब्राह्मणों व सज्जनों द्वारा सम्मान, अभीष्ट वस्त्रादि की प्राप्ति होती है ।

यदि गुरु 9.10 भावेश हो या इन भावेशों से सम्बन्ध करे तो राज्यलाभ, प्रतिष्ठित नरवाहन (पालकी) अर्थात् जन समुदाय के हृदय में निवास करने का सुयोग, पद स्थान वृद्धि, अपूर्व सुख होता है ।

दायेशाच्छुभराशिस्थे भाग्यवृद्धिः सुखावहा ।। 35 ।।
दानधर्मक्रियायुक्तोदेवताराधनप्रियः ।
गुरुभक्तिर्मनः सिद्धिः पुण्यकर्मादिसंग्रहः ।। 36 ।।

महादशेश से शुभ भावों में हो तो इस अन्तर्दशा में भाग्य वृद्धि, सुख लाभ, दानधर्मादि की योग्यता, देवताओं की आराधना, गुरु भक्ति, कार्य सिद्धि व पुण्यों का उदय होता है ।

दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे नीचे वा पापसंयुते ।
दारपुत्रादिपीड़ा च देहपीड़ा महद्भयम् ।। 37 ।।
राजकोपं प्रकुरुतेऽभीष्टवस्तुविनाशनम् ।
पापमूलाद् द्रव्यनाशं देहभ्रष्टं मनोरुजम् ।। 38 ।।

स्वर्णदानं प्रकुर्वीत स्वेष्टजाप्यं च कारयेत् ।

गवां कपिलवर्णानां दानेनारोग्यमादिशेत् ।। 39 ।।

महादशेश 6.8 भावों में गुरु हो या नीचगत हो या पाप ग्रह युक्त हो तो स्त्री पुत्रादि की ओर से पीड़ा, शरीर कष्ट, भय, राजप्रकोप, इष्ट वस्तु का विनाश, पापी लोगों या दुष्कर्म के कारण धनलाभ, शरीर में भ्रष्टता, मनोविकार होते हैं ।

इसकी शान्ति के लिए सुवर्णदान, अपने इष्ट देवता का जप, कपिला गौ का दान करने से आयु आरोग्य की सुरक्षा होती है ।

शनि अन्तर्दशा फल :–

सूर्यस्यान्तर्गते मन्दे लाभकेन्द्रत्रिकोणगे ।

शत्रुनाशो महत्सौख्यं स्वल्पधान्यादि लाभकृत् ।। 40 ।।

विवाहादिसुकार्यं च गृहे तस्य शुभावहम् ।

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे मन्दे सुहृदगृहसमन्विते ।। 41 ।।

गृहेकल्याणसम्पत्तिर्विवाहादिषुसत्क्रिया ।

राजसन्मानकीर्तिश्च नानावस्त्रधनागमः ।। 42 ।।

सूर्य महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो तथा शनि लग्न से केन्द्र त्रिकोण या एकादश में हो तो शत्रुओं का नाश, बहुत सुख लेकिन धन धान्य का लाभ कम होता है । इसी दशा में विवाहादि सुकार्य तथा घर में अन्य मांगलिक कार्य होते हैं ।

यदि शनि उच्चगत या स्वक्षेत्री हो या मित्रक्षेत्र में गया हो तो घर में कल्याणकारक, उपयोगी वस्तुओं व सम्पत्ति (भोगसाधन) का संग्रह, विवाहादि सत्कार्य का सम्पादन, राजसम्मान, सज्जनों द्वारा मान तथा अनेक प्रकार से धनागम होता है ।

दायेशादथ रन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते ।

वातशूलमहाव्याधि ज्वरातीसार पीड्नम् ।। 43 ।।

बन्धनं कार्यहानिश्च वित्तनाशो महद्भयम् ।

अकस्मात् कलहश्चैव दायाद् जनविग्रहः ।। 44 ।।

भुक्त्यादौ मित्रहानिः स्यान्मध्ये किंचित्सुखावहम् ।

अन्ते क्लेशकरं चैव नीचे तेषां तथैव च ।। 45 ।।

पितृमातृवियोगश्च गमनागमनं तथा ।

द्वितीयद्यूननाथेतु अपमृत्युभयं भवेत् ।। 46 ।।

कृष्णां गां महिषीं दद्यान्मृत्युंजयजपं चरेत् ।
छागदानं प्रकुर्वीत् सर्वसम्पत्प्रदायकम् ।। 47 ।।

(i) यदि शनि सूर्य से 8.12 में हो या पापयुक्त हो तो मनुष्य को वातरोग, जोड़ों की बीमारी, बड़ा रोग, बुखार, पेचिश आदि होते हैं । साथ ही बन्धन, कार्यनाश, धननाश व भय का कारण उपस्थित होता है । अचानक कलह, साझेदारों, हिस्सेदारों से विवाद होता है ।

(ii) अन्तर्दशा के प्रारम्भ में मित्रों की हानि, मध्य में साधारण सुख तथा अन्त में क्लेशदायक होता है । इसी तरह नीचगत शनि का भी फल समझें ।

(iii) नीचगत शनि होने पर यह वक्ष्यमाण फल अतिरिक्त होता है । माता पिता का वियोग, अधिक भागदौड़ या यात्राएँ होती हैं ।

(iv) यदि शनि 2-7 भावेश हो तो अपमृत्यु भय होता है । इसकी शान्ति के लिए काली गाय या भैंस का दान करें । मृत्युंजय मन्त्र का जप करें और भेड़ या बकरी का दान करें तो सब प्रकार से सुख होता है ।

बुधान्तर्दशा फल :–

सूर्यस्यान्तर्गते सौम्ये स्वोच्चे वा स्वर्क्षभेऽपि वा ।
केन्द्रत्रिकोण लाभस्थे बुधे वर्गबलैर्युते ।। 48 ।।
राज्यलाभो महोत्साहो दारपुत्रादिसौख्यकृत् ।
महाराजप्रसादेम वाहनाम्बरभूषणम् ।। 49 ।।
पुण्यतीर्थफलावाप्ति गृहे गोधनसंकुलम् ।
भाग्यलाभाधिपेर्युक्ते लाभवृद्धिकरो भवेत् ।। 50 ।।
भाग्यपंचमकर्मस्थे सन्मानो भवति ध्रुवम् ।
सुकर्मधर्मबुद्धिश्च गुरुदेवद्विजार्चनम् ।। 51 ।।
धनधान्यादि संयुक्तो विवाहः पुत्रसम्भवः ।

(i) यदि बुध स्वोच्च या स्वक्षेत्र में केन्द्र त्रिकोण या लाभस्थान में हो, या वर्गबली अर्थात् अधिक शत्रु वर्गो में गया हो तो इसकी अन्तर्दशा में राज्यप्राप्ति, हृदय में बहुत उत्साह, स्त्री पुत्रादि का सुख, राजा की ओर से सम्मानजनक वस्त्राभूषण (दुशाला) की प्राप्ति, तीर्थाटन, घर में पशुधन की वृद्धि होती है ।

(ii) यदि बुध नवमेश या लाभेश से युक्त हो तो अधिक लाभ होता है । 5.9.10 भावों में स्थित हो तो मान–सम्मान मिलता है । धर्म–कर्म की

वृद्धि, धार्मिक बुद्धि का उदय, गुरुदेवताओं का अर्चन, धनधान्य की वृद्धि, विवाह व पुत्रोत्पत्ति की सम्भावना होती है।

दायेशाच्छुभराशिस्थे सौम्ययुक्ते महत्सुखम्।। 52।।
वैवाहिकं यज्ञकर्मदानधर्मजपादिकम्।
स्वनामांकितपद्यानि नामद्वयमथापि वा।। 53।।
भोजनाम्बर भूषाप्तिरमरेशो भवेन्नरः।

दशेश से शुभ भावों में शुभ युक्त होकर बुध स्थित हो तो बहुत सुख, विवाहादि यज्ञकर्म, दानधर्म की वृद्धि, व्यक्ति की प्रशंसा में काव्यादि रचना अर्थात् जातक की प्रशस्ति में कोई अन्य श्लोक कविता लिखे, किसी अन्य नाम या उपनाम से प्रसिद्धि हो, विशिष्ट भोजन, वस्त्र, आभूषण आदि की प्राप्ति तथा इन्द्र तुल्य स्तर प्राप्त होता है।

दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे रिःफगे नीचगेऽपि वा।। 54।।
देहपीड़ा मनस्तापो दारपुत्रादि पीडनम्।
भुक्त्यादौ दुःखमाप्नोति मध्ये किंचित्सुखावहम्।। 55।।
अन्ते तु राजभीतिश्च गमनागमनं तथा।
द्वितीये द्यूननाथे तु देहजाड्यं ज्वरादिकम्।। 56।।
विष्णुनाम सहस्रं च ह्यन्नदानं च कारयेत्।
रजतप्रतिमादानं कुर्यादारोग्यसिद्धये।। 57।।

(i) महादशेश सूर्य से 6.8.12 में बुध हो या नीचगत हो तो इसकी अन्तर्दशा में शरीरकष्ट, मन में सन्ताप, स्त्री–पुत्रादि परिवारजनों को पीड़ा, दशारम्भ में दुःख, मध्य में थोड़ा सुख व अन्त में राजभय व वृथा भ्रमण होता है।

(ii) 2.7 भावेश बुध की अन्तर्दशा में शरीर कष्ट, ज्वरादि रोग होते हैं। तब अनिष्टफल की शान्ति के लिए विष्णुसहस्रनाम का पाठ, अन्नदान व चाँदी की विष्णुप्रतिमा का दान करना चाहिए। इससे स्वास्थ्य व आयु की सुरक्षा होती है।

केतु अन्तर्दशा फल :–

सूर्यस्यान्तर्गते केतौ देहपीड़ा मनोव्यथा।
अर्थव्ययं राजकोपं स्वजनादेरुपद्रवम्।। 58।।
लग्नाधिपेन संयुक्ते आदौ सौख्यं धनागमम्।
मध्ये तत्क्लेशमाप्नोति मृतवार्तागमं वदेत्।। 59।।

(i) सूर्य दशा में केतु की अन्तर्दशा हो तो शरीरकष्ट, मानसिक अशान्ति, धनव्यय, राजकोप, अपने परिवारजनों के कारण उपद्रव, पारिवारिक कलह होती है ।

(ii) यदि केतु लग्नेश के साथ हो तो प्रारम्भ में सुख व धनप्राप्ति, मध्य में कष्ट व अन्त में कहीं से मृत्यु का समाचार प्राप्त होता है ।

अथाष्टमव्यये चैवं दायेशात्पापसंयुते ।
कपोलदन्तरोगश्च मूत्रकृच्छ्रस्य सम्भवः ।। 60 ।।
स्थानविच्युतिरर्थस्य मित्रहानिः पितृर्मृतिः ।
विदेशगमनं चैव शत्रुपीड़ा महद्भयम् ।। 61 ।।

यदि केतु सूर्य से 8.12 में हो और, पापयुक्त भी हो तो गाल या दाँतों में रोग, मूत्र सम्बन्धी रोग, स्थान परिवर्तन, धनहानि, मित्र वियोग पिता की मृत्यु, विदेश पलायन, शत्रु पीड़ा का भय होता है ।

लग्नादुपचये केतौ योगकारक संयुते ।
शुभांशे शुभवर्गे च शुभकर्मफलोदयः ।। 62 ।।
पुत्रदारादिसौख्यं च सन्तोषं प्रियवर्धनम् ।
विचित्रवस्त्रलाभश्च यशोवृद्धिः सुखावहा ।। 63 ।।
द्वितीय द्यूननाथे वा ह्यपमृत्युभयं भवेत् ।
दुर्गाजपं प्रकुर्वीत छागदानं सुखाप्तये ।। 64 ।।

(i) यदि लग्न से 3.6.10.11 भावों में हो या योगकारक ग्रह के साथ हो या शुभ नवांश में हो, शुभवर्गो में हो तो, शुभकर्मो का फल मिलता है । अर्थात् जीवनचर्या सुगम व शान्त होती है । पुत्र–स्त्री का सुख, मन में सन्तोष, प्रियजनों व प्रिय वस्तुओं की वृद्धि, विचित्र वस्त्रों की प्राप्ति, यशोलाभ, सुख होता है ।

(ii) यदि केतु 2.7 भावेशों के साथ हो या पूर्वोक्त राशि स्वामी प्रकार से 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है । शान्ति के लिए दुर्गा जप पाठादि व बकरे का दान करना चाहिए ।

शुक्रान्तर्दशा फल :–

सूर्यस्यान्तर्गते शुक्रे त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा ।
स्वोच्चे स्वर्क्षादिवर्गस्थेऽभीष्टस्त्रीभोग्यसम्पदः ।। 65 ।।
ग्रामान्तरप्रयाणं च ब्राह्मणप्रभुदर्शनम् ।
राज्यलाभो महोत्साहोछत्रचामरवैभवम् ।। 66 ।।

गृहे कल्याणसम्पत्तिर्नित्यं मिष्ठान्नभोजनम् ।

विद्रुमादिरत्नलाभो मुक्तावस्त्रादिलाभकृत् ।।67।।

चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद् बहुधान्यधनादिकम् ।

उत्साहः कीर्तिसम्पत्तिर्नरवाहनसम्पदः ।।68।।

सूर्यदशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तथा शुक्र केन्द्र त्रिकोण में, स्वोच्च में, स्वक्षेत्र में या स्वक्षेत्र, उच्च त्रिकोणादि के वर्ग में स्थित हो तो प्रिय स्त्री से समागम, भोग प्राप्ति, दूसरे स्थान पर निवास, विप्र व राजा का दर्शन, राज्यलाभ, उत्साह, छत्र चँवर का सुख अर्थात् महामान्य होना, घर में सब प्रकार के कल्याण, नित्य मधुर भोजन, मणिमुक्तादि का लाभ, चौपाये धन की प्राप्ति, बहुत धन–धान्य, कीर्ति, सम्पत्ति व पालकी आदि प्रतिष्ठित वाहन की प्राप्ति होती है ।

षष्ठाष्टमव्यये शुक्रे दायेशाद् बलवर्जिते ।

राजकोपो मनःक्लेशः पुत्रस्त्रीधननाशनम् ।।69।।

भुक्त्यादौ मध्यमं मध्ये लाभः शुभकरो भवेत् ।

अन्ते यशोनाशनं च स्थानभ्रंशमथापि वा ।।70।।

बन्धुद्वेषं वदेद् वापि स्वकुलाद् भोगनाशनम् ।

भार्गवे द्यूननाथे तु देहे जाड्यं रुजोभयम् ।।71।।

रन्ध्ररिःफसमायुक्ते ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।

तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयजपं चरेत् ।।72।।

श्वेतां गां महिषीं दद्याद् रुद्रजाप्यं च कारयेत् ।

ततः शान्तिमवाप्नोति शंकरस्य प्रसादतः ।।73।।

(i) दशेश सूर्य से 6.8.12 में शुक्र हो, बलहीन हो तो राजकोप, मन में क्लेश, पुत्र, स्त्री, धन आदि की हानि होती है ।

(ii) अन्तर्दशा के प्रारम्भ में मध्यम, मध्य में लाभकारी व शुभकारी, अन्त में यशो हानि (बदनामी) स्थानभ्रंश, बन्धुओं से द्वेष, अपने परिवार में सुख की कमी होती है ।

(iii) यदि शुक्र सप्तमेश हो तो शरीर कष्ट, रोगादि फल होते हैं ।

(iv) यदि शुक्र लग्न से 8.12 भाव में हो तो अपमृत्यु का भय होता है तथा इस दोष की शान्ति के लिए मृत्युंजय जप, रुद्र जप या अभिषेक, सफेद गाय या भैंस का दान करना चाहिए । तब शंकरजी की प्रसन्नता से सुख होता है ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां
सूर्यान्तर्दशाफलाध्यायः चतुःपंचाशत्तमः ।।54।।

55

।।अथ चन्द्रान्तर्दशाफलाध्यायः ।।

चन्द्रमहादशा में चन्द्रान्तर :-

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे चन्द्रे त्रिकोणे लाभेऽपि वा ।
भाग्यकर्माधिपैर्युक्ते गजाश्वाम्बरसंकुलम् ।। 1 ।।
देवता गुरुभक्तिश्च पुण्यश्लोकादिकीर्तनम् ।
राज्यलाभो महत्सौख्यं यशो वृद्धिः सुखावहा ।। 2 ।।
पूर्णे चन्द्रे बलपूर्ण सेनापत्यं महत्सुखम् ।

(i) यदि चन्द्रमा स्वोच्च या स्वक्षेत्र में हो, त्रिकोण या लाभस्थान में हो या 9.10 भावेश से युक्त हो तो हाथी घोड़ों का ऐश्वर्य प्राप्त होता है । देवता व गुरु के प्रति भक्ति, सत्कीर्ति, राज्यलाभ, बहुत सुख होता है ।

(ii) यदि पूर्ण चन्द्रमा हो तो सामर्थ्य में वृद्धि, सेनापतित्व व बहुत सुख मिलता है ।

पापयुक्तेऽथवा चन्द्रे नीचे वा रिःफष्ठगे ।। 3 ।।
तत्काले धननाशः स्यात् स्थानच्युतिरथापि वा ।
देहालस्यं मनस्तापो राजमन्त्रिविरोधकृत् ।। 4 ।।
मातृक्लेशो मनोदुःखं निगडं बन्धुनाशनम् ।
द्वितीयद्यूननाथे तु रन्ध्रारिःफेशसंयुते ।। 5 ।।
देहजाड्यं मनोभंगमपमृत्योर्भयं वदेत् ।
श्वेतां गां महिषीं दद्यात् स्वदशान्तर्गते विधौ ।। 6 ।।

(i) यदि चन्द्रमा पापयुक्त, नीच, 6.12 भावगत हो तो तत्काल धन का नाश व स्थान या पद की अवनति, शरीर में आलस्य, राजा के मन्त्री से विरोध, माता को कष्ट, मानसिक सन्ताप, बन्धन, बन्धुओं की हानि होती है ।

(ii) 2.7 भावेश चन्द्रमा हो या 8.12 भावेश से युक्त हो तो देह में आलस्य, उत्साह भंग, अपमृत्यु का भय होता है । शान्ति के लिए सफेद गाय या दुधारू भैंस का दान करे ।

मंगलान्तर्दशा फल :–

चन्द्रस्यान्तर्गतेभौमेलग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
सौभाग्यं राजसम्मानं वस्त्राभरणभूषणम् ।। 7 ।।
यत्नात्कार्यार्थसिद्धिस्तु भविष्यति न संशयः ।
गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च व्यवहारे जयो भवेत् ।। 8 ।।
कार्यलाभो महत्सौख्यं स्वोच्चेस्वक्षेत्रगे फलम् ।

चन्द्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा हो तथा मंगल लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो तो सौभाग्य वृद्धि, राजसम्मान, वस्त्राभूषणों की प्राप्ति, परिश्रमपूर्वक सफलता, भवनगृहादि की वृद्धि, वाद–विवाद में विजय, कार्य सिद्धि सुख होता है ।

यदि मंगल उच्चगत या स्वक्षेत्री हो तब भी सर्वत्र सफलता मिलती है ।

तथाष्टमव्यये भौमे पापयुक्तोऽपि वा यदि ।। 9 ।।
दायेशादशुभस्थाने देहार्तिः शत्रुवीक्षिते ।
गृहक्षेत्रादि हानिश्च व्यवहारे तथा क्षतिः ।। 10 ।।
भृत्यवर्गेषु कलहो भूपालस्य निरोधनम् ।
आत्मबन्धुवियोगश्च नित्यं निष्ठुरभाषणम् ।। 11 ।।
द्वितीयद्यूननाथे तु रन्ध्रे रन्ध्राधिपो यदा ।
तद्दोषपरिहारार्थं ब्राह्मणस्यार्चनं चरेत् ।। 12 ।।

(i) मंगल यदि लग्न या दशापति से 8.12 में हो, पापयुक्त या शत्रुदृष्ट हो तो शरीरकष्ट होता है । घर की हानि, विवाद में पराजय, सेवकों में कलह, राजा से विरोध, अपने बन्धुओं से वियोग, कठोर वचन बोलने का स्वभाव होता है ।

(ii) यदि मंगल 2.7 भावेश हो या अष्टमेश होकर अष्टम में हो तो विशेष शरीर कष्ट होता है । शान्ति के लिए विद्वान् ब्राह्मणों का सत्कार करना चाहिए ।

राहु अन्तर्दशा फल :–

चन्द्रस्यान्तर्गतेराहौलग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
आदौ स्वल्पफलं ज्ञेयं शत्रुपीड़ा महद्भयम् ।। 13 ।।
चौराहिराजभीतिश्च चतुष्पाज्जीवपीडनम् ।
बन्धुनाशोमित्रहानिर्मानहानिर्मनोव्यथा ।। 14 ।।

चन्द्र महादशा में राहु की अन्तर्दशा हो तथा राहु लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो तो दशारम्भ में कुछ शुभ तथा बाद में शत्रु, चोर, सर्प, राजा, चौपाए पशु से भय व पीड़ा, बन्धुओं का नाश, मित्र हानि, मानहानि व मनोव्यथा होती है।

शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे लग्नादुपचयेऽपि वा।
योगकारकसम्बन्धे सर्वकार्यार्थसिद्धिकृत्।। 15।।
नैऋत्ये पश्चिमे भागे क्वचित्प्रभुसमागमः।
वाहनाम्बरलाभश्च स्वेष्टकार्यार्थसिद्धिकृत्।। 16।।

यदि राहु शुभ युक्त, शुभ दृष्ट, लग्न से उपचय भावों में स्थित, योग कारकों से सम्बन्ध रखने वाला हो तो सब कार्यों में सफलता मिलती है। नैऋत्य (दक्षिण पश्चिम) या पश्चिम दिशा में किसी राजा या बड़े व्यक्ति ये भेंट, वाहन, वस्त्रादि का लाभ तथा राजसहयोग से सब वांछित कार्यो की सिद्धि होती है।

दायेशादथरन्धस्थे व्यये वा बलवर्जिते।
स्थानभ्रंशो मनो दुःखं पुत्रक्लेशो महद्भयम्।। 17।।
दारपीडा क्वचिज्ज्ञेया क्वचित् स्वांगे रुजोभयम्।
वृश्चिकादि विषाद् भीतिश्चौरादिनृपपीडनम्।। 18।।

महादशेश से 8.12 में राहु हो या बलहीन हो तो स्थानहानि, मन में दुःख, पुत्र सम्बन्धी कष्ट, महान् भय, कभी स्त्री कष्ट, कभी शरीर कष्ट, बिच्छू आदि जहरीले जन्तुओं से भय, चोर व रेंगने वाले सर्पादि कीटों से भय होता है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्येलाभगेऽपि वा।
पुण्यतीर्थफलावाप्तिर्देवतादर्शनं महत्।। 19।।
परोपकारधर्मादि पुण्यकर्मादिसंग्रहः।
द्वितीयद्यूनराशिस्थे देहबाधा भविष्यति।। 20।।
तद्दोषपरिहारार्थं रुद्रजाप्यं समाचरेत्।
छागदानं प्रकुर्वीत देहारोग्यं प्रजायते।। 21।।

(i) महादशेश से केन्द्र, त्रिकोण, 3.11 में राहु हो तो तीर्थयात्रा, धार्मिक कार्य, देवताओं का दर्शन (मन्त्र सिद्धि) परोपकार, सत्कार्य होते हैं।

(ii) 2.7 भावों में राहु हो तो शरीर कष्ट होता है। शान्ति के लिए रुद्र जप तथा छाग (भेड़ या बकरा) का दान करना चाहिए।

गुरु अन्तर्दशा फल :–

चन्द्रस्यान्तर्गतेजीवेलग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
स्वगेहे लाभगे स्वोच्चे राज्यलाभो महोत्सवः ।। 22 ।।
वस्त्रालंकार भूषाप्ती राजप्रीतिर्धनागमः ।
इष्टदेवप्रसादेन गर्भाधानादिकं फलम् ।। 23 ।।
तथा शोभनकार्याणि गृहलक्ष्मी कटाक्षकृत् ।
राजाश्रयधनं भूमिगजवाजिसमन्वितम् ।। 24 ।।
महाराजप्रसादेन स्वेष्टसिद्धिः सुखावहा ।

चन्द्रमा की महादशा में गुरु की अन्तर्दशा हो तथा गुरु लग्न से केन्द्र त्रिकोण में, या लाभस्थान में, या स्वोच्च स्वगृहादि में हो तो राज्यलाभ, बहुत प्रसन्नता का वातावरण, वस्त्रालंकार की प्राप्ति, राज्य से मित्रता, धनागम, इष्ट देव की प्रसन्नता, गर्भाधान, शुभ कार्य, घर में लक्ष्मी जी की कृपा, राजाश्रय से धनप्राप्ति, भूमि वाहनादि का लाभ, महाराज की प्रसन्नता से मनोरथ सिद्धि होती है ।

षष्ठाष्टमव्यये जीवे नीचे वास्तंगते यदि ।। 25 ।।
पापयुक्तेऽशुभं कर्म गुरुपुत्रादिनाशनम् ।
स्थानभ्रंशो मनोदुःखमकस्मात्कलहो ध्रुवम् ।। 26 ।।
गृहक्षेत्रादिनाशश्च वाहनाम्बरनाशनम् ।

गुरु यदि 6.8.12 में या नीचगत या अस्तंगत हो या पापयुक्त हो तो अशुभ अमंगल कार्य, गुरु, पुत्रादि का नाश, स्थान परिवर्तन, मन में दुःख, सहसा कलह, घर खेत आदि अचल सम्पत्ति का नाश तथा वाहन, वस्त्रादि सुखों की हानि होती है ।

दायेशात्केन्द्रकोणस्थे दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा ।। 27 ।।
भोजनाम्बरपश्वादिलाभं सौख्यं करोति च ।
भ्रात्रादि सुखसम्पत्तिं धैर्य वीर पराक्रमम् ।। 28 ।।
यज्ञव्रतविवाहादि राज्यश्रीधनसम्पदः ।
दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते ।। 29 ।।
करोति कुत्सितान्नं च विदेशगमनं तथा ।
भुक्त्यादौ शोभनं प्रोक्तमन्ते क्लेशकरं भवेत् ।। 30 ।।
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।
तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत् ।। 31 ।।

स्वर्णदानमितिप्रोक्तं सर्वकष्टनिवारणम् ।

(i) दशेश से केन्द्र, त्रिकोण में या 3.11 में हो तो भोजन, वस्त्रादि व वाहनों पशुओं का लाभ, सुख, भाइयों के सहयोग से लाभ, धीरता, पराक्रम वृद्धि, यज्ञादि धार्मिक कार्य, विवाहोत्सव, धनसम्पत्ति आदि प्राप्त होती है ।

(ii) यदि दशेश से 8.12 में हो या गुरु निर्बल हो तो कुभोजन, विदेश गमन, अन्तर्दशा के प्रारम्भ में शुभ तथा अन्त में अशुभ फल होते हैं ।

(iii) यदि गुरु 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है । इसकी शान्ति के लिए शिवसहस्रनाम का जप करना तथा स्वर्ण दान करना चाहिए । तब सब कष्ट दूर हो जाते हैं ।

शनि अन्तर्दशा फलम् :–

चन्द्रस्यान्तर्गते मन्दे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे । ।32 । ।
स्वक्षेत्रे स्वांशगे वापि मन्दे तुंगांशसंयुते ।
शुभदृष्टयुते वापि लाभे वा बलसंयुते । । 33 । ।
पुत्रमित्रार्थसम्पत्तिः शूद्रप्रभुसमागमात् ।
व्यवसायात्फलाधिक्यं गृहे क्षेत्रादिवृद्धिदम् । । 34 । ।
पुत्रलाभश्च कल्याणं राजानुग्रहवैभवम् ।

चन्द्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो, शनि लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में, स्वक्षेत्र में, या स्वनवांश में, उच्चनवांश में या उच्च में हो या शुभ ग्रह से युक्त हो, लाभ स्थान में हो या वहीं हो तो पुत्र, मित्र, धन, सम्पत्ति का लाभ किसी शूद्रराजा की मित्रता से होती है । व्यवसाय वृद्धि, गृह निर्माण, अचल सम्पत्ति की वृद्धि, पुत्रलाभ, कल्याण, राजा की कृपा व वैभव वृद्धि होती है ।

षष्ठाष्टमव्यये मन्दे नीचे वा धनगेऽपि वा । । 35 । ।
तद्भुक्त्यादौ पुण्यतीर्थे स्नानं चैव तु दर्शनम् ।
अनेकजनत्रासश्च शत्रुपीड़ा भविष्यति । । 36 । ।

यदि शनि 6. 8. 12 में या नीच में या द्वितीय स्थान में हो तो अन्तर्दशा के शुरू में पुण्यतीर्थ यात्रा, स्नान लेकिन अनेक लोगों से भय व शस्त्रपीड़ा भी होती है ।

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे त्रिकोणे बलगेऽपि वा ।
क्वचित्सौख्यं धनाप्तिश्च दारपुत्रविरोधकृत् । । 37 । ।

द्वितीयद्यूनरन्ध्रस्थे देहबाधा भविष्यति ।

तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयजपं चरेत् ।। 38 ।।

कृष्णां गां महिषीं दद्याद् दानेनारोग्यमादिशेत् ।

दशापति से केन्द्र, त्रिकोण में, बली हो तो कभी सुख व धनप्राप्ति लेकिन स्त्री व पुत्र से विरोध होता है ।

यदि शनि 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है । इस दोष को दूर करने के लिए मृत्युंजय का जप, काली गाय या भैंस का दान करना चाहिए । इससे स्वास्थ्य लाभ होता है ।

बुध अन्तर्दशा फल :–

चन्द्रस्यान्तर्गतेसौम्येकेन्द्रलाभत्रिकोणगे ।। 39 ।।

स्वर्क्षे निजांशके सौम्ये तुंगे वा बलसंयुते ।

धनागमो राजमानप्रियवस्त्रादिलाभकृत् ।। 40 ।।

विद्याविनोदसद्गोष्ठी ज्ञानवृद्धिः सुखावहा ।

सन्तानप्राप्तिः सन्तोषो वाणिज्याद् धनलाभकृत् ।।

वाहनच्छत्रसंयुक्तनानालंकारलाभकृत् ।। 41 ।।

चन्द्रमा में बुध की अन्तर्दशा हो तथा बुध केन्द्र, त्रिकोण, 11 भाव में या स्वक्षेत्र स्वनवांश में, उच्चगत या अन्यथा बलवान् हो तो धनलाभ, राजसम्मान, प्रिय वस्त्रादि भोगों की प्राप्ति, विद्याप्राप्ति, सज्जनसंगति, ज्ञानवृद्धि, सन्तान की प्राप्ति का सन्तोष, व्यापार से धनलाभ, वाहन व छत्र से युक्त (अधिकार) विशिष्ट पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है ।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा धनगेऽपि वा ।

विवाहो यज्ञदीक्षा च दानधर्मशुभादिकम् ।। 42 ।।

राजप्रीतिकरश्चैव विद्वज्जनसमागमः ।

मुक्तामणिप्रवालानि वाहनाम्बरभूषणम् ।। 43 ।।

आरोग्य प्रीतिसौख्यं च सोमपानादिकं सुखम् ।

यदि बुध चन्द्रमा से केन्द्र, त्रिकोण, लाभ या धन स्थान में हो तो विवाह, यज्ञ दीक्षा, दानधर्म के अवसर, राजा से प्रीति, विद्वानों का समागम, मुक्ता मणि के अलंकार, आरोग्य लाभ, स्नेह वृद्धि, सुख तथा सोमरस (सुन्दर पेय) पीने के सुयोग होते हैं ।

दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा नीचगेऽपि वा ।। 44 ।।

तद्भुक्तौ देहबाधा च कृषिगोभूमिनाशनम् ।
कारागृहप्रवेशश्च दारपुत्रादिपीडनम् ।। 45 ।।
द्वितीय द्यूननाथे तु ज्वरपीड़ा महद्भयम् ।
छागदानं प्रकुर्वीत विष्णु साहस्रकं जपेत् ।। 46 ।।

दशेश से 6.8.12 में या नीच में बुध हो तो बुधान्तर्दशा में शरीर कष्ट, खेती–बाड़ी या व्यवसाय की हानि, भूमिहानि, कारावास, स्त्रीपुत्र को पीड़ा होती है ।

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो ज्वरपीड़ा व बहुत भय होता है । इसकी शान्ति के लिए मेषदान व विष्णु सहस्रनाम का पाठ करना चाहिए ।

केतु अन्तर्दशा फल :–

चन्द्रस्यान्तर्गतेकेतौकेन्द्रलाभत्रिकोणगे ।
दुश्चिक्ये बलसंयुक्ते धनलाभं महात्सुखम् ।। 47 ।।
पुत्रदारादि सौख्यं च विविधकर्म करोति च ।
भुक्त्यादौ धनहानिश्च मध्यगे सुखमाप्नुयात् ।। 48 ।।

चन्द्रमा में केतु का अन्तर हो तथा केतु केन्द्र, त्रिकोण या 3.11 स्थानों में हो, बली हो तो धनलाभ, सुख, स्त्रीपुत्रादि का सुख, नीति सम्मत कार्य करने की प्रवृत्ति, अन्तर्दशारम्भ में धन हानि व तत्पश्चात् सुख होता है ।

दायेशात्केन्द्रलाभे वा त्रिकोणे बलसंयुते ।
क्वचित्फलं दशादौ तु दद्यात् सौख्यं धनागमम् ।। 49 ।।
गोमहिष्यादि लाभं च भुक्त्यन्ते चार्थनाशनम् ।

दशेश चन्द्रमा से केन्द्र, त्रिकोण लाभ स्थान में केतु हो या बली हो तो दशारम्भ में कुछ अच्छे फल तथा सुख, धन लाभ, पशु धन की वृद्धि होती है, लेकिन अन्तर्दशान्त में धन का नाश हो जाता है ।

पापयुक्तेऽथवा दृष्टे दायेशाद्रन्ध्ररिःफगे ।। 50 ।।
शत्रुतः कार्यहानिः स्यादकस्मात्कलहो ध्रुवम् ।
द्वितीयद्यूनराशिस्थे देहकष्टं महद्भयम् ।। 51 ।।
मृत्यंजयजपं कुर्यात् सर्वसम्पत्प्रदायकम् ।
ततः शान्तिमवाप्नोति शंकरस्य प्रसादतः ।। 52 ।।

यदि अन्य पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, दशेश से 8.12 में हो तो शत्रु के द्वारा कार्यबाधा, अकस्मात् कलहागम होता है ।

यदि केतु 2.7 भावगत हो तो देह कष्ट व भय होता है। एतदर्थ मृत्युंजय जप करना चाहिए। तब सब प्रकार से लाभ व शान्ति होती है।

शुक्रान्तर्दशा फल:-

चन्द्रस्यान्तर्गते शुक्रे केन्द्र लाभ त्रिकोणगे।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे वाऽपि राज्यलाभं करोति च।। 53।।
महाराज प्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम्।
चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद्दारपुत्रादिवर्धनम्।। 54।।
नूतनागारनिर्माणं नित्यं मिष्ठान्न भोजनम्।
सुगन्धपुष्पमाल्यादिरम्यस्त्र्यारोग्यसम्पदम्।। 55।।

चन्द्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा हों तथा शुक्र केन्द्र, त्रिकोण या लाभ स्थान में हो, या स्वोच्च या स्वक्षेत्र में हो तो राज्यप्राप्ति होती है। महाराज (बड़े राजा या महान् व्यक्ति) की प्रसन्नता से वाहन, वस्त्राभूषण आदि की प्राप्ति होती है। चौपाए पशुओं से लाभ होता है, स्त्रीपुत्रादि की वृद्धि होती है।

नए स्थान आवासादि का निर्माण होता है, सदैव मधुर भोजन, विषयभोगादि विलासों का अवसर, सुन्दर स्त्री की प्राप्ति तथा स्वास्थ्य व सम्पत्ति की वृद्धि होती है।

दशाधिपेन संयुक्ते देहसौख्यं महत्सुखम्।
सत्कीर्तिसुखसम्पत्तिं गृहक्षेत्रादिवृद्धिकृत्।। 56।।

यदि चन्द्रमा व शुक्र साथ हों तो शरीर सुख, महल, सुख साधनों की प्राप्ति, सत्यकीर्ति, सुख, सम्पत्ति, घर, जमीन, आदि की वृद्धि होती है।

नीचे वास्तंगते शुक्रे पापग्रहयुतेक्षिते।
भूनाशः पुत्रमित्रादिनाशनं पत्निनाशनम्।। 57।।
चतुष्पाज्जीवहानिः स्याद् राजद्वारे विरोधकृत्।
धनस्थानगते शुक्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुते।। 58।।
निधिलाभं महत्सौख्यं भूलाभं पुत्रसम्भवम्।
भाग्यलाभाधिपैर्युक्ते भाग्यवृद्धिं करोत्यसौ।। 59।।
महाराजप्रसादेन स्वेष्टसिद्धिः सुखावहा।
देव ब्राह्मणभक्तिश्च मुक्ताविद्रुम लाभकृत्।।60।।

(i) यदि शुक्र नीचगत या अस्तंगत या पापयुक्त या पापदृष्ट हो तो भूमिनाश, पुत्रमित्रादि की हानि, स्त्रीहानि, चौपाए धन की हानि, राजद्वार (कचहरी, थाना) आदि में विरोध होता है।

(ii) यदि शुक्र द्वितीय स्थान में या स्वोच्चगत या स्वक्षेत्री हो तो धनलाभ, सुख, पुत्रप्राप्ति, भूमि का लाभ होता है ।

(iii) यदि शुक्र 9.11 भावेश से युक्त हो तो भाग्य वृद्धि कारक होता है । बडे लोगों की सहायता या प्रसन्नता से इष्ट सिद्धि, देवब्राह्मणों की भक्ति, मुक्ता मोती मणि आदि का लाभ होता है ।

दायेशाल्लाभगे शुक्रे त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा ।

गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च वित्तलाभो महत्सुखम् ।। 61 ।।

दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते ।

विदेशवासं दुःखार्ति मृत्युचौरादिपीड़नम् ।। 62 ।।

(i) महादशेश से 11 भाव में शुक्र हो या केन्द्र त्रिकोण में गया हो तो घर जायदाद की वृद्धि, धन लाभ व खूब सुख होता है ।

(ii) महादशेश से 6.8.12 में शुक्र हो या पापयुक्त हो तो विदेश वास, दुःख, पीड़ा, मृत्यु, चौरभयादि होता है ।

द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युभयं भवेत् ।

तद्दोषनिवृत्यर्थं रुद्रपाठं च कारयेत् ।। 63 ।।

श्वेतां गां रजतं दद्यात् शान्तिमाप्नोत्यसंशयम् ।

शंकरस्य प्रसादेन नात्र कार्या विचारणा ।। 64 ।।

यदि शुक्र 2.7 भावेश हो तो इसकी अन्तर्दशा में अपमृत्यु का भय होता है । इस दोष को शान्त करने के लिए रुद्रजप (रुद्रीय पाठ या तत्कृत अभिषेक) श्वेत गौदान, चाँदी का दान करना चाहिए, तब सब दोषों की शान्ति होती है ।

चन्द्रमहादशा सूर्यान्तर्दशा फल :–

चन्द्रस्यान्तर्गते भानौ स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुते ।

केन्द्रत्रिकोणे लाभे वा धने वा सोदरालये ।। 65 ।।

नष्टराज्यधनप्राप्तिर्गृहे कल्याणशोभनम् ।

मित्रराजप्रसादेन ग्रामभूम्यादि लाभकृत् ।। 66 ।।

गर्भधानफलप्राप्तिर्गृहे लक्ष्मीकटाक्षकृत् ।

भुक्त्यन्ते देह आलस्यं ज्वरपीड़ा भविष्यति ।। 67 ।।

चन्द्रमा की महादशा में सूर्यान्तर्दशा हो तथा सूर्य स्वोच्च राशि में या सिंह राशि में, केतु त्रिकोण में या 2.3.11 भावों में कहीं हो तो नष्ट राज्य या पद की प्राप्ति, घर में कल्याण कार्यो की सम्पन्नता, मित्रों व राजा या अधिकारियों की कृपा से ग्राम व भूमि का लाभ अर्थात् सामाजिक मान्यता

प्रतिष्ठा द सम्पत्ति का लाभ, सन्तानोत्पत्ति, घर में लक्ष्मी की कृपा, अन्तर्दशा के अन्त में शरीर में शिथिलता, आलस्य, ज्वरादि कष्ट होता है।

दशाफल में ज्वर शब्द से तात्पर्य साधारणतया ठीक हो जाने वाले रोगों से लेना चाहिए, अर्थात् ज्वर शब्द यहाँ साध्य रोग का उपलक्षण है।

दायेशादपि रन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते।

नृपचौराहिभीतिश्च ज्वररोगादिसम्भवः।। 68।।

विदेशगमने चार्तिं लभते फलवैभवम्।

महादशेश चन्द्रमा से भी 8.12 भाव में सूर्य हो या सूर्य पापयुक्त हो तो इसकी अन्तर्दशा में ज्वरादिपीड़ा, राजभय, चोरभय, विषैले जन्तुओं से भय, विदेश यात्रा के दौरान कष्ट होता है।

द्वितीय द्यूननाथेतु ज्वरपीड़ा भविष्यति।। 69।।

तद्दोषपरिहारार्थ शिवपूजां च कारयेत्।।

ततः शान्तिमवाप्नोति शंकरस्य प्रसादतः।। 70।।

यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो मनुष्य को ज्वर पीड़ा होती है। इसकी शान्ति के लिए देवपूजा करानी चाहिए। तब भगवान् की कृपा से शान्ति होती है।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां चन्द्रान्तर्दशाफलाध्यायः पंचपंचाशत्तमः।।55।।

56

।। अथ मंगलान्तर्दशाफलाध्यायः ।।

मंगलदशा में मंगल अन्तर्दशा :-

कुजे स्वान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।

लाभे वा शत्रुसंयुक्ते दुश्चिक्ये धनसंयुते।। 1।।

लग्नाधिपेन संयुक्ते राजानुग्रहवैभवम्।

लक्ष्मीकटाक्षचिह्नानि नष्टराज्यार्थलाभकृत्।।2।।

पुत्रोत्सवादि सन्तोषो गृहे गोक्षीरसंकुलम्।

मंगल महादशा में मंगल की अन्तर्दशा हो तथा मंगल लग्न से केन्द्र त्रिकोण, लाभस्थान में हो या शुभयुक्त हो या 2.3 भाव में हो या लग्नेश

से युक्त हो तो राजा की कृपा से वैभव मिलता है ।, लक्ष्मी जी की कृपा, नष्ट राज्य की प्राप्ति, पुत्रोत्सव (पुत्रोत्पत्ति, पुत्रविवाहादि, यज्ञोपवीतादि यथासम्भव) तथा घर में दूध की बहुतायत होती है ।

स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे भौमे स्वांशे वा बलसंयुते ।। 3 ।।
गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च गोमहिष्यादि लाभकृत् ।
महाराजप्रसादेन स्वेष्टसिद्धिः सुखावहा ।। 4 ।।

यदि मंगल उच्चगत, स्वक्षेत्री, स्वोच्चादि नवांश में या अन्यथा बली हो तो अचल सम्पत्ति की वृद्धि, गाय भैंस दुधारू पशुओं का लाभ बड़े लोगों के सहयोग से मनोरथ सिद्धि होती है ।

अथाष्टम व्यये भौमे पापदृग्योगसंयुते ।
मूत्रकृच्छ्रादिरोगश्च कष्टाधिक्यं व्रणाद्भयम् ।। 5 ।।
चौराहिराजपीड़ा च धनधान्य पशुक्षयः ।

यदि मंगल 8.12 भाव में हो या पापग्रह से युक्त दृष्ट हो तो मूत्र रोग, घाव होने का भय, शरीर कष्ट की अधिकता, चोर, सर्प या राजा से भय तथा धन धान्यादि की हानि होती है ।

द्वितीयद्यूननाथे तु देहकष्टं भविष्यति ।। 6 ।।
अनड्वाहं प्रदद्याच्च रुद्रजाप्यं च कारयेत् ।।
आरोग्यं जायते तस्य सर्वसम्पत्प्रदायकम् ।। 7 ।।

यदि मंगल 2.7 भावेश हो तो इसकी अन्तर्दशा में शरीर कष्ट होता हे । एतदर्थ साँड या बछड़े का दान, साँड छोड़ना (वृषोत्सर्ग), रुद्रीयपाठ कराना चाहिए, उससे आरोग्य व सम्पत्ति की वृद्धि होती है ।

राहु अन्तर्दशा फल :–

कुजस्यान्तर्गते राहौ स्वोच्चे मूल त्रिकोणगे ।
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे केन्द्रलाभत्रिकोणगे ।। 8 ।।
तत्काले राजसम्मानं गृहभूम्यादि लाभकृत् ।
कलत्र पुत्रलाभः स्याद् व्यवसायात्फलाधिकम् ।। 9 ।।
गंगास्नानफलावाप्तिं विदेशगमनं तथा ।

मंगलदशा में राहु की अन्तर्दशा हो या राहु स्वोच्चगत, मूल त्रिकोणी, शुभफलप्रद ग्रह से युक्त या शुभदृष्ट, केन्द्र त्रिकोण या लाभ स्थान में स्थित हो तो राजसम्मान मिलता है । इस समय में व्यवसाय से अधिक लाभ, गंगादि तीर्थों में स्नान तथा विदेशयात्रा के सुयोग होते हैं ।

तथाष्टमव्यये राहौ पापयुक्तेऽथ वीक्षिते ।। 10 ।।

चौराहिव्रणपीड़ा च चतुष्पाज्जीवनाशनम् ।

वातपित्तरुजो भीतिः कारागृहनिवेशनम् ।। 11 ।।

यदि राहु 8.12 भाव में हो तथा पापयुक्त एवं पाप दृष्ट हो तो चोर, सर्प, चोट का भय, चौपाए पशुओं की हानि, वात–पित्तादि विकारों का भय तथा कारागृह में निवासादि करना पड़ता है ।

धनस्थानं गते राहौ धननाशं महद्भयम् ।

सप्तमस्थानगे वापि ह्यपमृत्युर्भयं वदेत् ।। 12 ।।

नागपूजां प्रकुर्वीत देवब्राह्मण भोजनम् ।

मृत्युंजयजपं कुर्यादायुरारोग्य लब्धये ।। 13 ।।

यदि दूसरे स्थान में राहु हो तो धन का नाश तथा भय का कारण उपस्थित होता है । यदि राहु सप्तमस्थ हो तो अपमृत्यु का भय होता है ।

ऐसी स्थिति में नागपूजा, देवताओं की पूजा तथा ब्रह्मणभोजन एवं मृत्युंजय जप करने से स्वास्थ्य रक्षा होती है ।

गुरु अन्तर्दशा फल :–

कुजस्यान्तर्गते जीवे त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा ।

लाभे वा धनसंयुक्ते तुंगांशे स्वांशकेऽपि वा ।। 14 ।।

सत्कीर्ति राजसम्मानं धनधान्यादि वृद्धिकृत् ।

गृहे कल्याणसम्पत्तिर्दारपुत्रादि लाभकृत् ।। 15 ।।

मंगल दशा में गुरु का अन्तर हो तथा बृहस्पति केन्द्र या त्रिकोण या 2.11 भावों में, या उच्चादि नवांश में हो तो सत्कीर्ति, राजसम्मान, धन धान्य की वृद्धि, घर में कल्याणकारी कार्यो के अवसर, सम्पत्ति वृद्धि एवं स्त्री पुत्रादि का यथासम्भव लाभ होता है ।

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे त्रिकोणे लाभगेऽपि वा ।

भाग्यकर्माधिपैर्युक्ते वाहनाधिपसंयुते ।। 16 ।।

लग्नाधिपसमायुक्ते शुभांशे शुभवर्गगे ।

गृहक्षेत्रादिवृद्धिश्च गृहे कल्याणसम्पदः ।। 17 ।।

देहारोग्यं महत्कीर्तिर्गृहे गोकुलसंग्रहः ।

चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद् व्यवसायात्फलाधिकम् ।। 18 ।।

कलत्रपुत्रसौख्यं च राजसम्मानवैभवम् ।

यदि महादशेश से गुरु या त्रिकोण या लाभ में हो अथवा गुरु 4.9.10 भावेश से युक्त हो या लग्नेश से युक्त हो अथवा शुभ नवांश शुभवर्गो में गया हो तो जमीन जायदाद की वृद्धि, घर में उपयोगी सम्पत्ति की वृद्धि तथा सुख शान्ति, शरीर में सुख कीर्ति वृद्धि, पशु धन में वृद्धि,चौपाए धन से लाभ, व्यवसाय से अधिक लाभ, स्त्रीपुत्रादि का लाभ तथा राजसम्मान का वैभव प्राप्त होता है ।

षष्ठाष्टम व्यये जीवे नीचे वास्तंगते सति ।। 19 ।।
पापग्रहेण संयुक्ते दृष्टे वा दुर्बले सति ।
चौराहिनृपभीतिश्च पित्तरोगादि सम्भवम् ।। 20 ।।
प्रेतबाधा भृत्यनाशः सोदराणां विनाशनम् ।
द्वितीय द्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्ज्वरादिकम् ।।
तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत् ।। 21 ।।

यदि बृहस्पति 6.8.12 में या नीचगत या अस्तंगत या पापयुक्त दृष्ट या निर्बल हो तो चोरभय, राजभय, सर्पादिभय, पित्तजन्य रोगों की वृद्धि, प्रेतादि बाधा, सेवकों, कर्मचारियों की हानि, भाइयों को कष्ट होता है ।

यदि गुरु 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु व ज्वरादि रोगों से पीड़ा होती है । इसकी शान्ति के लिए शिवसहस्रनाम का पाठ करना चाहिए ।

शनि अन्तर्दशा फल :–

कुजस्यान्तर्गते मन्दे स्वर्क्षे केन्द्रत्रिकोणके ।
मूलत्रिकोणकेन्द्रे वा तुंगांशे स्वांशगे सति ।। 22 ।।
लग्नाधिपतिना वापि शुभदृष्टि युतेक्षिते ।
राज्यसौख्यं यशोवृद्धि स्वग्रामे धान्यवृद्धिकृत् ।। 23 ।।
पुत्रपौत्रसमायुक्तो गृहे गोधन संग्रहः ।
स्ववारे राजसम्मानं स्वमासे पुत्रवृद्धिकृत् ।। 24 ।।

मंगल दशा में शनि की अन्तर्दशा हो तथा शनि स्वराशि (स्वोच्च), केन्द्रत्रिकोण में या मूलत्रिकोण में अथवा अपनी मूल त्रिकोण राशि से केन्द्र (2. 5. 8) राशि में हो या उच्च या स्वनवांश में हो या लग्नेश से युक्त हो या किसी शुभयोगप्रद ग्रह से दृष्ट युक्त हो तो राज्य प्राप्ति (पद, पदवी, प्रतिष्ठा या सिंहासन) यशोवृद्धि, अपने स्थान पर धान्य वृद्धि, पुत्रपौत्रों का सुख, घर में पशुधन की वृद्धि, शनिवार व शनि मास में विशेषतया राजसम्मान व पुत्रादि की वृद्धि होती है ।

जिस मास में पहली तिथि को शनिवार हो, उस सारे मास को शनि मास समझें अथवा शनि की ऋतु शिशिर के दो मासों (मकर कुम्भगत सूर्य) को भी शनि मास मानें।

यहाँ एक नई बात, भी कही है कि अपनी मूलत्रिकोण राशि से केन्द्रराशियों में स्थित होने पर भी ग्रह साधारणतया बली होता है।

नीचादि क्षेत्रगे मन्दे तथाष्टव्ययराशिगे।

म्लेच्छवर्गप्रभुभयं धनधान्यादिनाशनम्।। 25।।

निगडे बन्धनव्याधिरन्ते क्षेत्रनिवासकृत्।

यदि शनि नीचगत, शत्रुक्षेत्री, अस्तंगत या 8.12 राशि में हो तो म्लेच्छ वर्ग के राजा या मुखिया से भय, धन, धान्य का नाश, हथकड़ी आदि से बन्धन, दशा के अन्त में क्षेत्रादि में अर्थात् जन बस्ती आदि से दूर खेत जंगल आदि में रहना पड़ता है।

द्वितीय द्यूननाथे तु पापयुक्ते महद्भयम्।। 26।।

धननाशश्च संचारे राजद्वेषो मनोव्यथा।

चौराग्निनृपपीड़ा च सहोदर विनाशनम्।। 27।।

बन्धुद्वेषः प्रमादैश्च जीवहानिश्च जायते।

अकस्मान्मृतेर्भीतिं पुत्रदारादि पीडनम्।। 28।।

कारागृहादिभीतिश्च राजदण्डो महद्भयम्।।

यदि शनि 2.7 भावेश हो तथा पापयुक्त भी हो तो भय, धननाश, राजद्वेष, मानसिक कष्ट आदि, चोरभय, अग्निभय, नृपभय, भाइयों को कष्ट, भाइयों से विवाद, प्राणिहानि, अचानक शरीर कष्ट, मृत्युभय, पुत्रादि को पीड़ा, कारावास के अवसर, राजदण्ड आदि होते हैं।

उक्त अशुभ फल प्राप्त होने में शनि का प्रतिकूल गोचर (संचारे) भी यदि अन्तर्दशा के बीच में आए और साथ ही गुरु, लग्नेश, चतुर्थेश या योगकारक ग्रह भी गोचर में अनिष्ट स्थानों में या पीड़ित हों तो अशुभता बढ़ जाती है। यह सार्वत्रिक विचार की पद्धति है। सभी दशाओं–अन्तर्दशाओं में गोचर का समन्वय भी करना चाहिए।

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे लाभस्थे वा त्रिकोणके।। 29।।

विदेशयानं लभते दुष्कीर्तिर्विविधा तथा।

पापकर्मरतो नित्यं बहुजीवादिहिंसकः।। 30।।

विक्रयः क्षेत्रहानिश्च स्थानभ्रंशो मनोव्यथा।

रणे पराजयश्चैव मूत्रकृच्छ्रान्महद्भयम्।। 31।।

यदि शनि महादशेश से केन्द्र, त्रिकोण या लाभ में हो तो विदेशवास या यात्रा, अपयश, पापकर्म में रति, अनेक जीवों की हिंसा, सम्पत्ति को बेचने के योग, सम्पत्ति हानि, स्थान भ्रंश, मनोव्यथा, युद्ध में पराजय, मूत्रकृच्छ्र आदि मूत्ररोगों से बहुत कष्ट होता है।

दायेशादथ रन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुक्ते ।
तद्भुक्तौ मरणं ज्ञेयं नृपचौरादिपीडनम् ।। 32 ।।
वातपीडा च शूलादि ज्ञातिशत्रुभयं भवेत् ।
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युञ्जय जपं चरेत् ।। 33 ।।

यदि शनि महादशेश से 8.12 में हो व पापयुक्त भी हो तो इस अन्तर्दशा में मृत्यु, राजा, चौरादि से कष्ट, शरीर में वात विकार (जोड़ों आदि की वायु) अपने वर्ग या जाति के लोगों से विरोध होता है।

इसकी शान्ति के लिए मृत्युंजय का जप करना चाहिए।

बुधान्तर्दशा फल :–

कुजस्यान्तर्गते सौम्ये लग्नात्केन्द्रत्रिकोणके ।
सत्कथाश्च जपोदानं धर्मबुद्धिर्महद्यशः ।। 34 ।।
नीतिमार्गप्रसंगश्च नित्यं मिष्ठान्नभोजनम् ।
वाहनाम्बरपश्वादि राजकर्मसुखानि च ।। 35 ।।
कृषिकर्मफले सिद्धिर्वारणाम्बरभूषणम् ।

मंगल की महादशा में बुधान्तर्दशा हो तथा बुध लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो तो अच्छे मनोहारी प्रसंग, जपदान, धर्मबुद्धि, यश, नीति मार्ग पर चलने के अवसर (चरित्र की परीक्षा) सदैव मधुर भोजन, वस्त्रादि, पशु आदि सम्पत्तियों का सुख, परिश्रम का पूरा फल, कृषि का पूरा फल, विशिष्ट बड़े वाहनों आदि का सुख होता है।

नीचे वास्तंगते वापि षष्ठाष्टव्ययगेऽपि वा ।। 36 ।।
हृद्रोगमानहानिश्च निगडं बन्धुनाशनम् ।
दारपुत्रार्थनाशश्च चतुष्पाज्जीवनाशनम् ।। 37 ।।

यदि बुध नीचगत, अस्तंगत या 6.8.12 भाव गत हो तो हृदयरोग, मान–हानि, बन्धन, बन्धुओं को कष्ट, स्त्री पुत्र व धनादि की हानि तथा चौपाए जीव, वाहनादि का नाश होता है।

दशाधिपेन संयुक्ते शत्रुवृद्धिर्महद्भयम् ।
विदेशगमनं चैव नानारोगास्तथैव च ।। 38 ।।

राजद्वारे विरोधश्च कलहः स्वजनैरपि ।

यदि मंगल व बुध एक साथ ही बैठे हों तो शत्रुओं की वृद्धि, भय की प्राप्ति, विदेश गमन, अनेक रोगों की उत्पत्ति, न्यायालय में मुकदमेबाजी, अपने लोगों से कलह होती है ।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा स्वोच्चे युक्तार्थलाभकृत् ।। 39 ।।
अनेक धननाथत्वं राजसम्मानमेव च ।
भूपालयोगं कुरुते धनाम्बरविभूषणम् ।। 40 ।।
भूरिवाद्यमृदंगादि सेनापत्यं महत्सुखम् ।
विद्याविनोदविमला वस्त्रवाहनभूषणम् ।। 41 ।।
दारपुत्रादिविभवं गृहे लक्ष्मी कटाक्षकृत् ।
दायेशात्षष्ठरिःफस्थे रन्ध्रे वा पापसंयुते ।। 42 ।।
तद्दाये मानहानिः स्यात् क्रूरबुद्धिस्तु क्रूरवाक् ।
चौराग्निनृपपीडा च मार्गे दस्युभयादिकम् ।। 43 ।।
अकस्मात्कलहश्चैव बुधभुक्तौ न संशयः ।

(i) यदि बुध दशापति से केन्द्र त्रिकोण में, स्वोच्चादि राशि में हो तो धन लाभ, अनेक प्रकार से आर्थिक स्तर में वृद्धि, राज सम्मान, राजयोग, धन वस्त्रादि का विशेष लाभ, अनेक संगीत साधनों का सुख (विलासवृद्धि) सेनापतित्व, खूब सुख, विद्या का भरपूर उपयोग, वाहनादि सम्पत्ति, स्त्री पुत्रादि की वृद्धि या उन्नति, घर में लक्ष्मी जी की कृपा होती है ।

(ii) महादशेश से बुध यदि 6.12.8 में हो या पाप ग्रह से युक्त हो तो इसकी अन्तर्दशा में मानहानि, क्रूरतापूर्ण बुद्धि, कठोर भाषण, चौरभय, नृपभय, रास्ते में लूटपाट का डर, अचानक कलह होती है ।

द्वितीय द्यूननाथे तु महाव्याधिभयंकरः ।। 44 ।।
अश्वदानं प्रकुर्वीत विष्णोर्नामसहस्रकम् ।
सर्वसम्पत्प्रदं विप्र ! सर्वारिष्टप्रशान्तये ।। 45 ।।

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो इसकी अन्तर्दशा में बड़ा रोग उत्पन्न होता है । इसकी शान्ति के लिए अश्वदान (वाहनदान) और विष्णुसहस्र नाम के पाठ करवाने चाहिए । तब हे मैत्रेय ! सब अरिष्ट शान्त हो जाते हैं ।

केतु अन्तर्दशा फल –

कुजस्यान्तर्गते केतौ त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा ।
दुश्चिक्ये लाभगे वापि शुभयुक्ते शुभेक्षिते ।। 46 ।।

राजानुग्रहशान्तिश्च बहुसौख्यं धनागमः ।
किंचित्फलं दशादौ तु भूलाभः पुत्रलाभकृत् ।। 47 ।।
राजसंलाभ कार्याणि चतुष्पाज्जीव लाभकृत् ।

मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा आने पर, केतु यदि केन्द्र, त्रिकोण, 3.11 भाव में हो या शुभ ग्रह से युक्त हो तो राजा की कृपा, शान्ति बहुत सुख, धनलाभ होता है ।

दशा के प्रारम्भ में थोड़ा फल तथा आगे विशेष भूमि लाभ, पुत्र लाभ, राज्य से लाभ तथा चौपाए धन से लाभ होता है ।

योग कारक संस्थाने बलवीर्यसमन्विते ।। 48 ।।
पुत्रलाभे यशोवृद्धिर्गृहे लक्ष्मीकटाक्षकृत् ।
भृत्यवर्गधनप्राप्तिः सेनापत्यं महत्सुखम् ।। 49 ।।
भूपालमित्रं कुरुते यानाम्बरविभूषणम् ।

यदि केतु योगकारक ग्रह के साथ हो, बलवान् हो तो पुत्र लाभ, यशोलाभ, घर में धन की वृद्धि, सेवकों के सहयोग से धनलाभ, सेनापतित्व अर्थात् बहुत से लोगों द्वारा साध्य कार्य करने के अवसर, सुख, राजा से मित्रता व सांसारिक सुखों में वृद्धि होती है ।

शुक्रान्तर्दशा फल :–

दायेशात्षष्ठरिःफस्थे रन्ध्रे वा पापसंयुते ।। 50 ।।
कलहो दन्तरोगश्च चौरव्याघ्रादिपीडनम् ।
ज्वरातिसार कुष्ठादि दारपुत्रादिपीडनम् ।। 51 ।।
द्वितीयसप्तमस्थाने देहे व्याधिर्भविष्यति ।
अपमानमनस्तापौ धनधान्यादि प्रच्युतिम् ।। 52 ।।

यदि मंगलमहादशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तथा शुक्र महादशेश से 6.8.12 भाव में हो, पापयुक्त हो तो कलह, दाँतों में रोग, चोर व जंगली जन्तुओं का भय, ज्वर, पेचिश, त्वचा विकार का भय, स्त्रीपुत्रादि को कष्ट होता है । यदि शुक्र 2.7 भाव में हो तो शरीर में रोग होता है । अपमान, मन में सन्ताप, धनहानि भी होती है ।

कुजस्यान्तर्गतेशुक्रेकेन्द्रलाभत्रिकोणगे ।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि शुभस्थानाधिपेऽथवा ।। 53 ।।

राज्यलाभो महत्सौख्यं गजाश्वाम्बरभूषणम् ।

लग्नाधिपेन सम्बन्धे पुत्रदारादिवर्धनम् ।। 54 ।।

आयुषो वृद्धिधरैश्वर्यभाग्यवृद्धिसुखं भवेत् ।

यदि शुक्र केन्द्र, त्रिकोण, लाभस्थान, स्वोच्च राशि, स्वराशि में हो या शुभ त्रिकोणादि भावों का अधिपति हो तो राज्यप्राप्ति, बहुत सुख, अनेक वाहन व भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है।

यदि शुक्र व लग्नेश का सम्बन्ध हो तो स्त्री पुत्रादि की वृद्धि, आयु में वृद्धि, ऐश्वर्य, भाग्योदयादि होता है।

दायेशात्केन्द्रकोणस्थे लाभे वा धनगेऽपि वा ।। 55 ।।

तत्काले श्रियमाप्नोति पुत्रलाभं महत्सुखम् ।

मनोमोदो भवेन्नूनं धनवस्त्रादिलाभकृत् ।। 56 ।।

महाराजप्रसादेन ग्रामभूम्यादिलाभकृत् ।

भुक्त्यन्ते फलमाप्नोति गीतनृत्यादिलाभकृत् ।। 57 ।।

पुण्यतीर्थस्थानलाभं कर्माधिपसमन्विते ।

पुण्यधर्मदयाकूपतडागं कारयिष्यति ।। 58 ।।

महादशेश मंगल से अन्तर्दशेश शुक्र यदि केन्द्र त्रिकोण, 2,11 भावों में कहीं हो तो तुरन्त धन व मान की प्राप्ति, पुत्र लाभ, बहुत सुख, मन में प्रसन्नता, ग्राम व भूमि का लाभ अर्थात् ग्राम में प्रतिष्ठा होती है। अन्तर्दशा के अन्त में विशेष उक्त फल होता है।

साथ ही गीतादि मनोरंजन के अवसर भी प्राप्त होते हैं। यदि शुक्र दशमेश से युक्त हो तो पुण्य तीर्थ में स्नान, पुण्य कार्यों की सम्पन्नता, कूपतडागादि सार्वजनिक हितसाधक स्थानों का निर्माण होता है।

दायेशाद्रन्ध्ररिःफस्थे षष्ठे वा पापसंयुते ।

करोति दुःखबाहुल्यं देहपीडा धनक्षयम् ।। 59 ।।

राजचौरादिभीतिश्च गृहे कलहमेव च ।

दारपुत्रादिपीड़ा च गोमहिष्यादिनाशकृत् ।। 60 ।।

द्वितीय द्यूननाथे तु देहपीड़ा भविष्यति ।

श्वेतां गां महिषीं दद्यात् आयुरारोग्यवृद्धये ।। 61 ।।

यदि शुक्र दशेश से 6.8.12 भाव में हो या पापयुक्त हो तो बहुत दुःख होते हैं। शरीर कष्ट, धनहानि, राजा व चोरों से भय, घर में कलह स्त्रीपुत्रादि को पीड़ा, गोधन का नाश होता है।

यदि शुक्र 2.7 भावेश हो तो शरीरकष्ट होता है। दोष निवारण के लिए सफेद गाय या दूध देने वाली भैंस का दान करना चाहिए।

सूर्यान्तर्दशा फल :–

कुजस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे।
मूल त्रिकोणे लाभे वा भाग्यकर्मेशसंयुते।। 62।।
तद्भुक्तौ वाहनं कीर्तिं पुत्रलाभश्च विन्दति।
धनधान्यसमृद्धिः स्यात् गृहे कल्याणसम्पदः।। 63।।
क्षेमारोग्यं महद्धैर्यं राजपूज्यं महत्सुखम्।
व्यवसायात्फलाधिक्यं विदेशे राजदर्शनम्।। 64।।

मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तथा सूर्य स्वोच्च, स्वक्षेत्र या मूल त्रिकोण केन्द्र या लाभ में हो अथवा 9.10 भावेश से युक्त हो तो इसकी अन्तर्दशा में वाहन लाभ, कीर्ति वृद्धि, पुत्रप्राप्ति, धनधान्य में वृद्धि, राजा से सम्मान, सुख, व्यवसाय से अधिक लाभ, विदेश में राजादि बड़े लोगों से भेंट होती है।

दायेशात्षष्ठरिःफे वा व्यये वा पापसंयुते।
देहपीडा मनस्तापः कार्यहानिर्महद्भयम्।। 65।।
शिरोरोगोज्वरादिश्च अतिसारमथापि वा।
द्वितीयद्यूननाथे तु सर्पज्वरविषाद्भयम्।। 66।।
सुतपीड़ाभयं चैव शान्तिं कुर्याद् यथाविधि।
देहारोग्यं प्रकुरुते धनधान्यचयं तथा।। 67।।

यदि सूर्य महादशेश मंगल से 6.8.12 में हो या पापयुक्त हो तो शरीर व मन में कष्ट, कार्य में हानि, भय, सिर के रोग, ज्वरादि भय, अतिसार भय होता है।

यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो पुत्र पीड़ा, सर्पभय, रोगभय, विषभय, होता है। इसकी विधिवत् शान्ति करनी चाहिए। शान्त्यर्थ सूर्य की उपासना, विष्णु या राम की अर्चना आदि करनी चाहिए, तब स्वास्थ्य रक्षा व धन–धान्य की सुरक्षा होती है।

चन्द्रान्तर्दशा फल :–

कुजस्यान्तर्गते चन्द्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे।
भाग्यवाहनकर्मेशलग्नाधिसमन्विते।। 68।।

करोति विपुलं गन्धमाल्याम्बरविभूषणम् ।
तडागं गोपुरादीनां पुण्यधर्मादिसंग्रहम् ।। 69 ।।
विवाहोत्सवकर्माणि दारपुत्रादिसौख्यकृत् ।
पितृमातृसुखावाप्तिं गृहे लक्ष्मीकटाक्षकृत् ।। 70 ।।
महाराजप्रसादेन स्वेष्टसिद्धिः सुखादिकम् ।
पूर्णे चन्द्रे फलं पूर्णं क्षीणे स्वल्पफलं वदेत् ।। 71 ।।

मंगल की महादशा में चन्द्रान्तर्दशा हो तथा चन्द्रमा वृष या कर्क राशि में या केन्द्रगत, 1.4.7.10 भावेशों से युक्त हो तो बहुत सांसारिक सुख, तडागादि का निर्माण, किसी सार्वजनिक स्थान पर द्वारादि का निर्माण, पुण्य व धर्म की वृद्धि, विवाहादि उत्सव, स्त्री पुत्रादि का सुख, माता पिता का सुख तथा घर में लक्ष्मी वृद्धि, बड़े लोगों के सहयोग से कार्यसिद्धि व सुख होता है। यदि चन्द्रमा पूर्ण हो तो पूर्णफल तथा क्षीण हो तो मामूली फल तथा मध्यम हो तो मध्यम फल होता है।

नीचारिस्थेऽष्टमे षष्ठे दायेशाद् रिपुरन्ध्रके ।
मरणं दारपुत्राणां कष्टं भूमिविनाशनम् ।। 72 ।।
पशुधान्यक्षयश्चैव चौरादिरणभीतिकृत् ।
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।। 73 ।।
देहजाड्यं मनोदुःखं दुर्गालक्ष्मीजपं चरेत् ।
श्वेतां गां महिषीं दायादायुरारोग्यवृद्धये ।। 74 ।।

यदि चन्द्रमा नीचगत, शत्रुक्षेत्री 6.8 में या दशेश से 6.8 में हो तो स्त्री पुत्रादि की मृत्यु, भूमि की हानि, पशुधन की हानि, चोरभय, मरणभय होता है। यदि चन्द्रमा 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है। देह में शिथिलता, मानसिक कष्ट भी होता है।

शान्ति के लिए दुर्गा व लक्ष्मी जी का पाठादि करना चाहिए।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां
मंगलान्तर्दशाफलाध्यायः षट्पंचाशत्तमः ।। **56** ।।

57

। । अथ राहु-अन्तर्दशाफलाध्यायः । ।

राहु दशा : राहु अन्तर्दशा :–

कुलीरे वृश्चिके राहौ कन्यायां चापगेऽपि वा ।
तद्भुक्तौ राजसम्मानं वस्त्रवाहनभूषणम् । । 1 । ।
व्यवसायात्फलाधिक्यं चतुष्पाज्जीवलाभकृत् ।
प्रयाणं पश्चिमे भागे वाहनाम्बरलाभकृत् । । 2 । ।
लग्नादुपचये राहौ शुभग्रहयुतेक्षिते ।
मित्रांशे तुंगभागांशे योगकारकसंयुते । । 3 । ।
राज्यलाभं महोत्साहं राजप्रीतिं शुभावहम् ।
करोति सुखसम्पत्तिं दारपुत्रादिवर्धनम् । । 4 । ।

(i) राहु महादशा में राहु अन्तर्दशा में, राहु 4.6.8.9 राशियों में हो तो इसकी दशा में राज सम्मान, वस्त्रादि वाहनादि की प्राप्ति, व्यवसाय में अधिक सफलता, चौपाए जीवों के द्वारा लाभ, पश्चिमी भू भागों की यात्रा, यात्रा में वहाँ भी सुखभोग होता है ।

(ii) लग्न से 3.6.10.11 भावगत राहु हो तो अथवा शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट, मित्रनवांश में, उच्चादि शुभ राशि नवांश में या योगकारक से युक्त हो तो राज्य लाभ, अधिक उत्साह, राजा से मित्रता, सुख–सम्पत्ति, स्त्री पुत्रादि की वृद्धि होती है ।

लग्नाष्टमे व्यये राहौ पापयुक्तेऽथ वीक्षिते ।
चौरादिव्रणपीड़ा च सर्वत्रैवं भवेद् द्विज ! । । 5 । ।
राजद्वारे जनद्वेषं इष्टबन्धुविनाशनम् ।
दारपुत्रादि पीड़ा च भवत्येव न संशयः । । 6 । ।

लग्ने से 8.12 में राहु हो, पापयुक्त या दृष्ट हो तो चोरादि से पीड़ा, चोट लगने का भय, सरकारी आदमियों से द्वेष या झड़प या विरोध, अपने प्रिय जनों की हानि, स्त्री पुत्रादि को पीड़ा होती है ।

द्वितीयद्यूननाथे वा सप्तमस्थानमाश्रिते ।
सदा रोगो महाकष्टं शान्तिं कुर्याद् यथाविधि । । 7 । ।

आरोग्यं सम्पदश्चैव भविष्यन्ति तदा द्विज ! ।

यदि राहु 2.7 भावेश (कुम्भराशीश) हो या सप्तम में स्थित हो (या 2.7 भावेशों के साथ 2-7 में ही हो तो अपमृत्यु, रोग, कष्ट आदि होते हैं। इसकी यथाविधि शान्ति करनी चाहिए। एतदर्थ रुद्रीयजप, अघोर मन्त्र से आराधना जपादि करना व दानादि करना चाहिए, तब स्वास्थ्य, सम्पत्ति आदि होती है।

गुरु अन्तर्दशा फल :-

राहोरन्तर्गते जीवे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणके ।। 8 ।।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे वापि तुंगस्वर्क्षांशगेऽपि वा ।।
स्थानलाभं मनोधैर्यं शत्रुनाशं महत्सुखम् ।। 9 ।।
राजप्रीतिकरं सौख्यं जनोऽतीव समश्नुते ।
दिने दिने वृद्धिरपि सिते पक्षे शशी यथा ।। 10 ।।
वाहनादि धनं भूरि गृहे गोधनसंकुलम् ।
नैर्ऋत्ये पश्चिमे भागे प्रयाणं राजदर्शनम् ।। 11 ।।
युक्तकार्यार्थसिद्धिः स्यात् स्वदेशे पुनरेष्यति ।
उपकारो ब्राह्मणानां तीर्थयात्रादि कर्मणाम् ।। 12 ।।
वाहनग्रामलाभश्चदेवब्राह्मणपूजनम् ।
पुत्रोत्सवादिसन्तोषो नित्यं मिष्ठान्नभोजनम् ।। 13 ।।

राहु में गुरु की अन्तर्दशा हो तथा गुरु केन्द्र, त्रिकोण, स्वोच्च, स्वक्षेत्र, उच्च नवांश, स्वनवांश में हो तो पद पदवी स्थान की प्राप्ति, मन में धैर्य, शत्रुओं का नाश, सुख, राजा से प्रेम, सुख की अधिकता, प्रतिदिन शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की तरह बढ़ोत्तरी, वाहन लाभ, खूब धन लाभ, घर में पशु धन की वृद्धि, नैऋत्य या पश्चिम दिशा की यात्रा, वहाँ के राजा या महान् पुरुषों से भेंट, सफल यात्रा करके स्वदेश वापसी, ब्राह्मणों का उपकार, तीर्थयात्रादि, वाहन प्राप्ति, ग्रामादि जागीर प्राप्ति, पुत्रोत्सव व नित्य मधुर भोजन होता है।

नीचे वास्तंगते वापि षष्ठाष्टव्ययराशिगे ।
शत्रुक्षेत्रे पापयुक्ते धनहानिर्भविष्यति ।। 14 ।।
कर्मविघ्नो भवेत्तस्य मानहानिश्च जायते ।
कलत्रपुत्रपीड़ा च हृद्रोगो राजकार्यकृत् ।। 15 ।।

यदि गुरु नीचगत, अस्तंगत, 6.8.12 भावगत, शत्रुक्षेत्री, पापयुक्त हो तो धनहानि, कार्यसिद्धि में विघ्न, मानहानि अर्थात्, पराजय, नीचा

देखना, कदम पीछे हटाना आदि, स्त्री, पुत्रादि परिवारजनों को पीड़ा, हृदयरोग लेकिन राजकीय कार्य करने का अधिकार (जिम्मा या ठेका या पद) मिलता है ।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा धनगेऽपि वा ।
दुश्चिक्ये बलसम्पूर्णे गृहक्षेत्रादिवृद्धिकृत् ।। 16 ।।
भोजनाम्बरपश्वादि दानधर्मजपादिकम् ।
भुक्त्यन्ते राजकोपाच्च द्विमासं देहपीड़नम् ।। 17 ।।
ज्येष्ठभ्रातुर्विनाशश्च मातृपित्रादि पीडनम् ।

दशापति राहु से यदि गुरु केन्द्र, त्रिकोण, लाभ या धन या तृतीय में हो अथवा बलवान् हो तो घर, जमीन, जायदाद आदि की वृद्धि करता है । भोजन, वस्त्र, पशुधन, दान व धर्म में वृद्धि, अन्तर्दशा के अन्त में दो मास तक शरीर कष्ट, ज्येष्ठ भाई का शोक तथा माता पिता को कष्ट होता है ।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा रिःफे वा पापसंयुते ।। 18 ।।
तद्भुक्तौ धनहानिः स्यात् देहपीड़ा भविष्यति ।
द्वितीय द्यूननाथे वा ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।। 19 ।।
स्वर्णस्य प्रतिमा दानं शिवपूजां च कारयेत् ।
श्री शम्भोश्च प्रसादेन ग्रहस्तुष्टो द्विजोत्तम ! ।। 20 ।।
देहारोग्यं प्रकुरुते शान्तिं कुर्याद् विचक्षणः ।।

महादशेश से 6.8.12 में यदि गुरु हो या पापयुक्त हो तो गुरु की अन्तर्दशा में धनहानि, शरीरकष्ट होता है ।

यदि गुरु 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु या दुर्घटना का भय होता हे । शान्ति के लिए सोने की शिवप्रतिमा का दान, शिवपूजा करानी चाहिए । तब श्री शंकर जी की प्रसन्नता से ग्रह संतुष्ट होकर आरोग्य व शरीर रक्षा करता है ।

शनि अन्तर्दशा फल :-

राहोरन्तर्गते मन्दे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।। 21 ।।
स्वोच्चे मूल त्रिकोणे वा दुश्चिक्ये लाभराशिगे ।
तद्भुक्तौ नृपतेः सेवा राजप्रीतिकरा शुभा ।। 22 ।।
विवाहोत्सवकार्याणि कृत्वा पुण्यानि भूरिशः ।
आरामकरणे युक्तो तडागं कारयिष्यति ।। 23 ।।

शूद्रप्रभुवशादिष्टलाभो गोधनसंग्रहः ।
प्रयाणं पश्चिमे भागे प्रभुमूलाद् धनक्षयः ।। 24 ।।
देहालस्यं फलाल्पत्वं स्वदेशे पुनरेष्यति ।

राहु में शनि की अन्तर्दशा हो तथा शनि लग्न से केन्द्र, त्रिकोण, स्वोच्चराशि, मूल त्रिकोण, 9.11 भाव में कहीं हो तो मनुष्य को राज सेवा, राज कार्य, राजा का प्रियकार्य करने का अवसर, विवाहोत्सव, पुण्यकार्य, बगीचा निर्माण, तड़ाग निर्माण, शूद्र राजादि के सहयोग से इष्टसिद्धि, गोधन का संग्रह, पश्चिम दिशा में यात्रा, पश्चिम दिशा के राजा के कारण धन हानि, देह में आलस्य, कम शुभ फल पश्चात् स्वदेश में वापसी से सुख होता है ।

नीचारिक्षेत्रगे मन्दे रन्ध्रे वा व्ययगेऽपि वा ।। 25 ।।
नीचारिराजभीतिश्च दारपुत्रादिपीडनम् ।
आत्मबन्धुमनस्तापं दायादजनविग्रहम् ।। 26 ।।
व्यवहारे च कलहमकस्माद् भूषणं लभेत् ।
दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे वा पापसंयुते ।। 27 ।।
हृदयरोगो मानहानिश्च विवादः शत्रुपीड्नम् ।
अन्यदेशादिसंचारो गुल्मवद्व्याधिभाग् भवेत् ।। 28 ।।
कुभोजनं कोद्रवादि जातिदुःखाद्भयं भवेत् ।
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।। 29 ।।
कृष्णां गां महिषीं दद्याद्दानेनारोग्यमादिशेत् ।

यदि शनि नीचगत, शत्रुक्षेत्री, 8.12 भाव में स्थित हो तो नीच लोगों से डर, राजभय, शत्रुओं से भय, स्त्री पुत्रादि को पीड़ा, अपने बन्धुओं की ओर से मन में सन्ताप, दायादजन (हिस्सेदारों) से विवाद, मुकदमेबाजी, अचानक भूषण (आभूषण, पदवी, खिताब, उपनाम) प्राप्ति होती है ।

दशेश से 6.8.12 में शनि हो या पापग्रह से युक्त हो तो इसकी अन्तर्दशा में हृदयरोग, मानहानि, विवाद, शत्रुओं की ओर से कष्ट, अन्य देशों या प्रदेशों में संचार अर्थात् वृथा भ्रमण या नियमित भ्रमण करना पड़े, अपनी जाति पर आने वाले किसी कष्ट या विपदा का शिकार होने से कष्ट, गुल्म रोग (तिल्ली जिगर बढ़ना) अन्य किसी रोग से पीड़ा, कुभोजन कोदों ज्वार आदि साधारण अनाज का भोजन होता है ।

यदि शनि 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु हो जाती है । इसकी शान्ति के लिए काली गाय या भैंस का दान करें, तब आरोग्य लाभ होता है ।

बुधान्तर्दशा फल :–

राहोरन्तर्गते सौम्ये भाग्ये वा स्वर्क्षगेऽपि वा ।। 30 ।।
तुंगे वा केन्द्रराशिस्थे पुत्रो वा बलगेऽपि वा ।
राजयोगं प्रकुरुते गृहे कल्याणवर्धनम् ।। 31 ।।

व्यापारेण धनप्राप्तिर्विद्यावाहनमुत्तमम् ।
विवाहोत्सवकार्याणि चतुष्पाज्जीवलाभकृत् ।। 32 ।।
सौम्यमासे महत्सौख्यं स्ववारे राजदर्शनम् ।
सुगन्ध पुष्पशय्यादि स्त्रीसौख्यं चाति शोभनम् ।। 33 ।।
महाराजप्रसादेन धनलाभो महद्यशः ।

राहु में बुध की अन्तर्दशा हो तथा बुध नवम में, स्वराशि में, स्वोच्च में, केन्द्र में, पंचम में अथवा कहीं भी बली होकर स्थित हो तो राजयोग होता है । घर में कल्याणकार्य के अवसर, व्यापार से धनलाभ, विद्या व वाहन का लाभ, विवाहोत्सव, चौपाए जीवों से लाभ, बुध के मास (मिथुन कन्यागत सूर्य मास) में सुख, बुधवार को राजदर्शन का सुयोग, सुगन्ध पुष्प शय्या पर शयन (विलासपूर्ण जीवन) स्त्री का सुख, महाराज (राजा या बड़ा आदमी) की सहायता से धनलाभ व खूब यश मिलता है ।

दायेशात्केन्द्रलाभे वा दुश्चिक्ये भाग्यकर्मगे ।। 34 ।।
देहारोग्यं हृदुत्साह इष्टसिद्धिः सुखावहा ।
पुण्यश्लोकादि कीर्तिश्च पुराणश्रवणादिकम् ।। 35 ।।
विवाहो यज्ञदीक्षा च दानधर्मदयादिकम् ।

महादशेश से केन्द्रगत, 3.9.11 भावगत, दशमगत हो तो शरीर में आरोग्य, नीरोगता, हृदय में उत्साह, मनोरथसिद्धि, सुखदायक सफलता, पुण्य पवित्र यश (सुनाम), पुराणकथादि श्रवण के अवसर, विवाह, यज्ञ में दीक्षा लेकर अर्थात् यजमान बनकर रहना, दान धर्म व दया से पूर्ण करने के योग होते हैं ।

षष्ठाष्टम व्यये सौम्ये मन्देनापि युतेक्षिते ।। 36 ।।
दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे वा पापसंयुते ।
देवब्राह्मण निन्दा च भोगभाग्यविवर्जितः ।। 37 ।।
सत्यहीनश्च दुर्बुद्धिश्चौराहिनृपपीडनम् ।
अकस्मात्कलहश्चैव गुरुपुत्रादिनाशनम् ।
अर्थव्ययो राजकोपो दारपुत्रादिपीडनम् ।। 38 ।।

यदि बुध 6.8.12 में हो या शनि से युक्त दृष्ट हो या दशेश से 6.8.12 में हो, पापयुक्त हो तो देव ब्राह्मणों की निन्दा, भाग्यहीनता, सुख में कमी, सत्यरहित व्यवहार, दुर्बुद्धि का उदय, चोरभय, सर्पभय, राजभय, अकस्मात् कलह के अवसर, स्त्री पुत्रादि को पीड़ा के योग होते हैं ।

द्वितीय द्यूननाथे तु ह्यपमृत्युभयं वदेत् ।

तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत् ।। 39 ।।

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु को दूर करने के लिए विष्णु–सहस्रनाम का जप करना चाहिए ।

केतु अन्तर्दशा फल :–

राहोरन्तर्गते केतौ भ्रमणं राजतोभयम् ।

वातज्वरादिरोगश्च चतुष्पाज्जीवहानिकृत् ।। 40 ।।

अष्टमाधिपसंयुक्ते देहजाड्यं मनोव्यथा ।

शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे देहसौख्यं धनागमः ।। 41 ।।

राज सम्मान भूषाप्तिर्गृहे शुभकरो भवेत् ।

राहु में केतु की अन्तर्दशा हो तो भ्रमण, राजा से भय, वात ज्वर भय, चौपाए से हानि हो ।

यदि केतु अष्टमेश से युक्त हो तो शरीर कष्ट, मानसिक व्यथा, शुभयुक्त या शुभ दृष्ट हो तो शरीर सुख, धन लाभ, राज सम्मान, भूषणादि की प्राप्ति, घर में शुभता, कुशलता रहती है ।

लग्नाधिपेन सम्बन्धे इष्टसिद्धिः सुखावहा ।। 42 ।।

लग्नाधिपसमायुक्ते लाभो वा भवति ध्रुवम् ।

चतुष्पाज्जीवलाभः स्यात्केन्द्रे कोणेऽपिसंस्थिते ।। 43 ।।

यदि केतु लग्नेश से सम्बन्ध करे तो इष्ट सिद्धि तथा लग्नेश के साथ ही हो तो निश्चय से लाभ होता है । चौपाए जीव से लाभ होता है ।

यही शुभ फल केतु की केन्द्र त्रिकोण स्थिति से भी समझना चाहिए ।

रन्ध्रस्थानगते केतौ व्यये वा बलवर्जिते ।

तद्भुक्तौ बहुरोगः स्याच्चौराहिव्रणपीडनम् ।। 44 ।।

पितृमातृवियोगश्च भ्रातृद्वेषो मनोरुजा ।

द्वितीयद्यूननाथेतु देहबाधा भविष्यति ।

तद्दोषपरिहारार्थं छागदानं च कारयेत् ।। 45 ।।

यदि केतु अष्टम स्थान में, द्वादश में हो या बलहीन हो तो इसकी अन्तर्दशा में अनेक रोग, चोरभय, सर्पभय, चोटभय, माता पिता से वियोग, भाइयों से द्वेष, मनोविकार होते हैं ।

यदि केतु का सम्बन्ध किसी भी प्रकार से 2.7 भाव से हो तो शरीर कष्ट होता है । इस दोष की निवृत्ति के लिए बकरे आदि का दान करना चाहिए ।

शुक्र अन्तर्दशा फल :–

राहोरन्तर्गतेशुक्रेलग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
लाभे वा बलसंयुक्ते योगप्राबल्यमादिशेत् ।। 46 ।।
विप्रमूलाद्धनप्राप्तिर्गोमहिष्यादि लाभकृत् ।
पुत्रोत्सवादि सन्तोषो गृहे कल्याणसम्भवः ।। 47 ।।
सम्मानं राजसम्मानं राज्यलाभो महत्सुखम् ।

राहु दशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तथा शुक्र लग्न से केन्द्र, त्रिकोण, लाभ में हो,या बलवान् हो तो बहुत अच्छे योगफल मिलते हैं । ब्राह्मण की सहायता से धनप्राप्ति, गाय भैंस आदि पशुओं का लाभ, पुत्रोत्सव, घर में मांगलिक कार्य, सम्मान या राजसम्मान, राजलाभ, बहुत सुख आदि शुभ फल होते हैं ।

स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा ।। 48 ।।
नूतनगृहनिर्माणं नित्यं मिष्ठान्नभोजनम् ।
कलत्रपुत्र विभवं मित्रसंगः सुभोजनम् ।। 49 ।।
अन्नदानं प्रियं नित्यं दानधर्मादिसंग्रहः ।
महाराजप्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम् ।। 50 ।।
व्यवसायात्फलाधिक्यं विवाहो मौंजीबन्धनम् ।

यदि शुक्र 12.2.7 राशियों में या इन्हीं राशियों के नवांश में हो तो इस अन्तर्दशा में नए घर का निर्माण, सदैव मधुर भोजन, स्त्री–पुत्रों की वृद्धि, मित्रों की संगति या सहायता, सुन्दर भोजन, अन्नदान की सामर्थ्य, प्रियकार्य, दानधर्म में प्रवृत्ति, बड़े लोगों की सहायता से वाहनवस्त्रादि का लाभ, व्यवसाय से अधिक प्राप्ति, विवाह या यज्ञोपवीत संस्कार होते हैं ।

षष्ठाष्टमव्यये शुक्रे नीचे शत्रुगृहे स्थिते ।। 51 ।।
मन्दारफणिसंयुक्ते तद्भुक्तौ रोगमादिशेत् ।
अकस्मात्कलहं चैव पितृपुत्रवियोगकृत् ।। 52 ।।
स्वबन्धुजनहानिश्च सर्वत्र जनपीडनम् ।
दायादकलहश्चैव स्वप्रभोः स्वस्य मृत्युकृत् ।। 53 ।।
कलत्रपुत्रपीड़ा च शूलरोगादिसम्भवः ।

यदि शुक्र 6.8.12 में या नीच राशि में या शत्रुराशि में हो या शनि, मंगल, राहु से युक्त हो तो इसकी अन्तर्दशा में रोगभय, अचानक कलह, पिता या पुत्र का वियोग, स्वजनों की हानि, सर्वत्र अपने लोगों को कष्ट,

भाई–बन्धुओं (सम्पत्ति के हिस्सेदारों) से कलह, अपनी या अपने स्वामी की मृत्यु, स्त्रीपुत्रादि को पीड़ा, शूलरोग (शिरःशूल, हृदयशूल, उदरशूल आदि) अर्थात् तीव्र दर्द से प्रारम्भ होकर घातकता तक जाने वाला कोई रोग होता है ।

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे त्रिकोणे वा समन्विते ।। 54 ।।
लाभे वा कर्मराशिस्थे क्षेत्रपालमहत्सुखम् ।।
सुगन्ध वस्त्रशय्यादि गानवाद्यसुखं भवेत् ।। 55 ।।
छत्रचामरभूषाप्तिः प्रियवस्तुसमन्विता ।
दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते ।। 56 ।।
विप्राहिनृपचौरादि मूत्रकृच्छ्रान्महद्भयम् ।
प्रमेहाद्रौधिरो रोगः कुत्सितान्नं शिरोव्यथा ।। 57 ।।
कारागृहप्रवेशश्च राजदण्डाद्धनक्षयः ।

यदि महादशेश राहु से शुक्र केन्द्र, त्रिकोण, लाभ या दशम में हो तो स्थान या घर आदि का सुख खूब मिलता है । सुगन्धित वस्त्र शय्यादि का उपभोग, गानवाद्य का सुख अर्थात् आमोद–प्रमोदपूर्ण जीवन, छत्र चँवर की प्राप्ति, प्रिय वस्तु का लाभ होता है ।

दशापति से 6.8.12 में शुक्र हो या पापयुक्त हो तो प्रमेह रोग के कारण रुधिर विकार (मधुमेह, शक्कर की बीमारी, गुप्त रोग, धातुक्षयादि) होते हैं । विप्र, सर्प, नृप व चोर से पीड़ा, मूत्र कृच्छ्र रोग (मूत्र रोग), कुत्सित अन्न का भोजन, सिर में अधिक पीड़ा, कारागृह में वास, राजदण्ड व धन–हानि होती है ।

द्वितीयद्यूननाथे वा दारपुत्रादिनाशनम् ।। 58 ।।
आत्मपीड़ा भयं चैव ह्यपमृत्युभयं भवेत् ।
दुर्गालक्ष्मीजपं कुर्यात् ततः सौख्यमवाप्नुयात् ।। 59 ।।

यदि शुक्र 2.7 भावेश हो तो स्त्री पुत्रादि का नाश, निज को कष्ट, दुर्घटना का भय होता है ।

शान्ति के लिए दुर्गा व लक्ष्मी का जप करना चाहिए ।

सूर्यान्तर्दशा फल :–

राहोरन्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे ।
त्रिकोणे लाभगे वापि तुंगांशे स्वांशकेऽथवा ।। 60 ।।

शुभग्रहेण संदृष्टे राजप्रीतिकरं शुभम् ।
धनधान्य समृद्धिश्च ह्यल्पमानं सुखावहम् ।। 61 ।।
अल्पग्रामाधिपत्यं च स्वल्पलाभो भविष्यति ।

राहु में सूर्यान्तर्दशा हो और सूर्य स्वोच्च, स्वक्षेत्र, केन्द्रगत, त्रिकोणगत, लाभगत, उच्च या स्वनवांश में या शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो राजा से सम्बन्ध बनते हैं। धन–धान्य की समृद्धि लेकिन कम सम्मान पुनश्च सुख, छोटे स्थानग्रामादि में पूज्यस्थान पाना, कम लाभ होता है।

भाग्यलग्नेशसंयुक्ते कर्मेशेन निरीक्षिते ।। 62 ।।
राजाश्रयो महत्कीर्तिर्विदेशगमनं तथा ।
देशाधिपत्ययोगश्च गजाश्वाम्बरभूषणम् ।। 63 ।।
मनोऽभीष्टप्रदानं च पुत्रकल्याणसम्भवम् ।
दायेशाद् रि:फरन्ध्रस्थे षष्ठे वा नीचगेऽपि वा ।। 64 ।।
ज्वरातिसार रोगश्च कलहो राजविग्रहः ।
प्रयाणं शत्रु वृद्धिश्च नृपचोराग्निपीडनम् ।। 65 ।।

यदि सूर्य 1.9 भावों से युक्त हो या दशमेश से दृष्ट हो तो राजा का आश्रय, बहुत कीर्ति, विदेश यात्रा, देशभर में प्रसिद्धि, राजयोग, हाथी घोड़े आदि कीमती वाहनों की प्राप्ति, मनोरथों की पूर्ति, पुत्र की समृद्धि होती है।

यदि दशेश राहु से 6.8.12 में हो या नीचगत हो तो ज्वरादि रोग, पेट के रोग, कलह, राजा से विरोध, जगह छोड़ने के अवसर, शत्रुओं की वृद्धि, राजा, अग्नि, चोरादि से पीड़ा होती है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा ।
विदेशे राजसम्ममानं कल्याणं तु शुभावहम् ।। 66 ।।
द्वितीय द्यूननाथे तु महारोगो भविष्यति ।
सूर्यप्रणामं शान्तिं च कुर्यादारोग्यसम्भवाम् ।। 67 ।।

यदि सूर्य दशेश से केन्द्र, त्रिकोण, तृतीय, लाभ में स्थित हो तो विदेश में उत्तम सम्मान, कल्याण की प्राप्ति होती है।

यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो किसी बड़े रोग का शिकार होना पड़ता है। एतदर्थ सूर्य प्रणाम, सूर्य नमस्कारादि से सूर्यशान्ति करनी चाहिए।

चन्द्रान्तर्दशा फल :–

राहोरन्तर्गते चन्द्रे स्वक्षेत्रे स्वोच्चगेऽपि वा ।

केन्द्रत्रिकोणलाभे वा मित्रर्क्षे शुभसंयुते ।। 68 ।।

राजत्वं राजपूज्यत्वं धनार्थं धनलाभकृत् ।

आरोग्यं भूषणं चैव मित्रस्त्रीपुत्र सम्पदः ।। 69 ।।

पूर्णे चन्द्रे फलं पूर्ण राजप्रीत्या सुखावहम् ।

अश्ववाहनलाभः स्याद् गुरुक्षेत्रादि वृद्धिकृत् ।। 70 ।।

राहु महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तथा चन्द्रमा स्वक्षेत्र या स्वोच्च या केन्द्र या त्रिकोण या लाभ स्थान में या मित्रराशि में या शुभयुक्त हो तो मनुष्य को राज पदवी, राजमान्यता, धनलाभ, आरोग्य, भूषण, मित्र स्त्री, पुत्र व सम्पत्ति की वृद्धि आदि फल मिलते हैं।

यदि चन्द्रमा पूर्ण बिम्ब वाला हो तो पूरा फल तथा राजप्रीति से सब कार्य सरलता से सिद्ध होते हैं। घोड़े आदि तीव्रगति वाहन की प्राप्ति तथा सम्पत्ति आदि की वृद्धि होती है।

दायेशात्सुखभाग्यस्थे केन्द्रे वा लाभगेऽपि वा ।

लक्ष्मी कटाक्षचिह्नानि गृहे कल्याणसम्भवः ।। 71 ।।

सर्वकार्यार्थसिद्धिः स्याद् धनधान्य सुखावहा ।

सत्कीर्तिलाभसम्मानं देव्याराधनमाचरेत् ।। 72 ।।

दशेश राहु से यदि चन्द्रमा 4.9 भावों में या केन्द्र में लाभ में हो तो लक्ष्मी की कृपा विशेष होती है। घर में कल्याणकारी कार्य सम्पन्न होते हैं। सब कामों की सिद्धि, धनधान्य की वृद्धि, सत्कीर्ति, लाभ, सम्मान. व देवी की आराधना के अवसर होते हैं।

दायेशात् षष्ठरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते ।

पिशाचक्षुद्रव्याघ्राद्यैर्गृहक्षेत्रादिनाशनम् ।।73 ।।

मार्गे चौरभयं चैव व्रणाधिक्यं महोदरम् ।

द्वितीय द्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति ।। 74 ।।

श्वेतां गां महिषीं दद्यात् विप्रायारोग्यसिद्धये ।

ततः सौख्यमवाप्नोति चन्द्रग्रहप्रसादतः ।। 75 ।।

दशापति से 6.8.12 में चन्द्रमा बलहीन हो तो पिशाचादि, छोटे वन–जन्तु आदि के भय से घर व खेत आदि की हानि, रास्ते में चोरी का भय, अधिक चोट, अधिक भूख, पेट की विषमता होती है।

यदि चन्द्रमा 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है। शान्ति के लिए सफेद गाय या भैंस का दान ब्राह्मण को करें। तब चन्द्रमा की प्रसन्नता से मनुष्य को सुख होता है।

मंगलान्तर्दशा फल :–

राहोरन्तर्गते भौमे लग्नाल्लाभत्रिकोणगे।
केन्द्रे वा शुभसंयुक्ते स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा।। 76।।
नष्टराज्यधनप्राप्तिर्गृहक्षेत्राभिवृद्धिकृत्।।
इष्टदेवप्रसादेन सन्तानसुखभाग्भवेत्।। 77।।
क्षिप्रभोज्यान्महत्सौख्यं भूषणाश्वाम्बरादिकृत्।
दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा।। 78।।
रक्त वस्त्रादिलाभः स्यात् प्रयाणं राजदर्शनम्।
पुत्रवर्गेषु कल्याणं स्वप्रभोश्च महत्सुखम्।। 79।।
सेनापत्यं महोत्साहो भ्रातृवर्गधनागमः।

(i) राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा हो तथा मंगल लग्न से त्रिकोण, लाभस्थान, केन्द्र स्थान में या शुभयुक्त या स्वोच्च, स्वक्षेत्र में हो तो खोई हुई सम्पत्ति या राज्य या पदवी की प्राप्ति, अचल चल सम्पत्ति का सुख, इष्ट देव की कृपा से सन्तान सुख, यथासमय भोजन, बहुत सुख, भूषण, वाहनादि की प्राप्ति होती है।

(ii) यदि मंगल, महादशेश से केन्द्र कोण, तृतीय या लाभ में हो तो लाल वस्त्रों आदि की प्राप्ति, प्रवास, राजदर्शन, पुत्रों व उनके परिवारों या पुत्र तुल्यों की समृद्धि, अपने स्वामी की समृद्धि, बहुत सुख होता है। इस अन्तर्दशा में यथा सम्भव सेनापतित्व या बहुत से लोगों की सहायता व समर्थन, भाइयों या ज्ञातिजनों से धनलाभ होता है।

दायेशाद् रन्ध्ररिःफे वा षष्ठे पापसमन्विते।। 80।।
पुत्रदारादिहानिश्च सोदराणां च पीडनम्।
स्थानभ्रंशे बन्धुवर्गदारपुत्रविरोधनम्।। 81।।
चौराहिव्रणभीतिश्च स्वदेहस्य च पीडनम्।
आदौक्ले शकरं चैव मध्यान्ते सौख्यमाप्नुयात्।। 82।।

महादशेश राहु से यदि मंगल 6.8.12 में हो या पापयुक्त हो तो पुत्र, स्त्री आदि को पीड़ा, भाइयों को कष्ट, स्थान परिवर्तन, बन्धु वर्गो का विरोध, स्त्री व पुत्र द्वारा विरोध, चोरभय, सर्पभय, चोटभय, शरीर कष्ट होता है। प्रायः दशा के आरम्भ में कष्ट व तत्पश्चात् शान्ति रहती है।

द्वितीय द्यूननाथे तु देहालस्यं महद्भयम् ।

अनड्वाहं च गां दद्यात् आरोग्यसुखलब्धये ।। 83 ।।

यदि मंगल 2.7 भावेश हो तो इसकी अन्तर्दशा में शरीर में आलस्य भय, आदि होता है । शान्ति के लिए गाय व साँड का दान करना चाहिए । तब स्वास्थ्य लाभ व सुख होता है ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां राह्वन्तर्दशाफलाध्यायः सप्तपंचाशत्तमः ।। 57 ।।

58

।। अथ गुर्वन्तर्दशाफलाध्यायः ।।

गुरुदशा में गुरु अन्तर्दशा :–

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे जीवे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणके ।

अनेकराजाधीशो वा सम्पन्नो राजपूजितः ।। 1 ।।

गोमहिष्यादि लाभश्च वस्त्रवाहनभूषणम् ।

नूतनस्थाननिर्माणं हर्म्यप्राकारसंयुतम् ।। 2 ।।

गजान्तैश्वर्यसम्पतिर्भाग्यकर्मफलोदयः ।

ब्राह्मणप्रभुसम्मानं समानं प्रभुदर्शनम् ।। 3 ।।

स्वप्रभो–स्वफलाधिक्यं दारपुत्रादिलाभकृत् ।

गुरु की महादशा में गुरु की अन्तर्दशा हो तो स्वक्षेत्री, स्वोच्चगत, लग्न से केन्द्र या त्रिकोण स्थानों में स्थित बृहस्पति होने से अनेक राजाओं द्वारा प्रणम्य, अर्थात् बहुत से राजा जिसकी बात मानें अथवा राजाओं का राजा या सम्पन्न व राजपूज्य होता है । इस अन्तर्दशा में गाय भैंस जैसे दुधारू पशुओं या पशु धन का लाभ, वस्त्र वाहन व आभूषणादि की प्राप्ति, नया घर या नए स्थान का निर्माण, बड़े कीमती बँगले आदि का निर्माण, खूब सम्पत्ति, धन वाहन की खूब प्राप्ति, भाग्य व परिश्रम का पूरा फल, ब्राह्मणों के मुखिया द्वारा सम्मान, राजदर्शन, अपना या अपने स्वामी का अधिक कल्याण, स्त्री व पुत्रादि का लाभ होता है ।

नीचांशे नीचराशिस्थे षष्ठाष्टव्ययराशिगे ।। 4 ।।

नीचसंगो महादुःखं दायादजनविग्रहः ।।

कलहो न विचारोऽस्य स्वप्रभुष्वपमृत्युकृत् ।। 5 ।।

पुत्रदारवियोगश्च धनधान्यार्थहानिकृत् ।
सप्तमाधिपदोषेण देहबाधा भविष्यति ।। 6 ।।
तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत् ।
रुद्रजाप्यं च गोदानं कुर्यात् स्वाभीष्टलब्धये ।। 7 ।।

यदि गुरु नीच नवांश, नीच राशि में, 6.8.12 भाव राशि में हो तो इस अन्तर्दशा में नीच लोगों की संगति, बहुत दुःख, उत्तराधिकार का विवाद, अपने मालिकों से टकराव व मतभेद, अपमृत्यु का भय, स्त्री व पुत्रों का वियोग, धन–धान्य की हानि होती है ।

यदि गुरु सप्तमेश हो तो शरीर कष्ट होता है । शान्ति के लिए शिव सहस्रनाम या सहस्ररुद्राभिषेक एवं गोदान कराने से सफलता मिलती है ।

शनि अन्तर्दशा फल :–

जीवस्यान्तर्गते मन्दे स्वोच्चे स्वक्षेत्रमित्रभे ।
लग्नात्केन्द्रत्रिकोणस्थे लाभे वा बलसंयुते ।। 8 ।।
राज्यलाभे महत्सौख्यं वस्त्राभरण संयुतम् ।
धनधान्यादि लाभश्च स्त्रीलाभो बहुसौख्यकृत् ।। 9 ।।
वाहनाम्बर पश्वादि भूलाभः स्थानलाभकृत् ।
पुत्रमित्रादिसौख्यं च नरवाहनयोगकृत् ।। 10 ।।
नीलवस्त्रादिलाभश्च नीलाश्वं लभते च सः ।
पश्चिमां दिशमाश्रित्य प्रयाणं राजदर्शनम् ।। 11 ।।
अनेकयानलाभं च निर्दिशेन्मन्दभुक्तिषु ।।

गुरु दशा में शनि का अन्तर हो और शनि स्वोच्चराशि, स्वक्षेत्र या मित्र क्षेत्र में लग्न से केन्द्र त्रिकोण में या लाभस्थान में या बलवान् हो तो राज्य लाभ, महान् सुख, वस्त्राभूषणों की प्राप्ति, धन धान्य का लाभ, स्त्री लाभ, बहुत सुख, वाहन, वस्त्र, पशु, भूमि का लाभ, स्थान (पदवी या सम्पत्ति) का लाभ, पुत्रों व मित्रों का सुख, पालकी आदि नरवाहन की प्राप्ति, नीले वस्त्रों के प्रति आकर्षण, नील वस्त्र लाभ, काला या गहरे रंग का घोड़ा, पश्चिम दिशा की यात्रा, वहाँ के राजा से भेंट, अनेक वाहनों का लाभ होता है ।

लग्नात् षष्ठाष्टमे मन्दे व्यये नीचेऽस्तगेऽप्यरौ ।। 12 ।।

धनधान्यादिनाशश्च ज्वरपीडा मनोरुजः ।

स्त्रीपुत्रादिषु पीड़ा वा व्रणात्यादिकमुद्वहेत् ।। 13 ।।

गृहे त्वशुभकार्याणि भृत्यवर्गादिपीडनम् ।

गोमहिष्यादि हानिश्च बन्धुद्वेषी भविष्यति ।। 14 ।।

यदि शनि 6.8.12 भाव में, नीचगत, अस्तंगत या शत्रुक्षेत्री हो तो धन धान्य का नाश, ज्वरादि पीड़ा, मनोविकार, स्त्री व पुत्रों को कष्ट, घाव आदि की पीड़ा, घर में अमंगल के अवसर, सेवक कर्मचारी वर्ग को पीड़ा, गाय भैंस आदि की हानि एवं अपने लोगों से द्वेष होता है।

दायेशात्केन्द्रकोणस्थे लाभे वा धनगेऽपि वा ।

भूलाभश्चार्थलाभश्च पुत्रलाभसुखं भवेत् ।। 15 ।।

गोमहिष्यादि लाभश्च शूद्रमूलाद्धनं तथा ।

दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते ।। 16 ।।

धनधान्यादि नाशश्च बन्धुमित्रविरोधकृत् ।

उद्योगभंगो देहार्ति स्वजनानां महद्भयम् ।। 17 ।।

(i) यदि बृहस्पति की दशा में शनि की अन्तर्दशा हो तथा शनि दशापति गुरु से केन्द्र, त्रिकोण, लाभ स्थान, धन स्थान में हो तो भूमि का लाभ, धन लाभ, पुत्र प्राप्ति, पुत्र सुख, पशु धन का लाभ, शूद्र से धन लाभ होता है।

(ii) दशापति से 6.8.12 में शनि हो या पाप संयुक्त शनि हो तो धन-धान्य का नाश, बन्धुओं व मित्रों से विरोध, प्रयत्नों की असफलता, शरीर कष्ट तथा अपने लोगों से विशेष भय होता है।

द्विसप्तमाधिपे मन्दे ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।

तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत् ।। 18 ।।

कृष्णां गां महिषीं दद्यात् तेनारोग्यमादिशेत् ।

मन्दग्रहप्रसादेन सत्यं सत्यं द्विजोत्तम ।। 19 ।।

यदि शनि 2.7 भावेश हो तो इस अन्तर्दशा में अपमृत्यु होती है। इस दोष की निवृत्ति के लिए विष्णु सहस्रनाम का पाठ, काली गाय या भैंस का दान करें। इससे स्वास्थ्य को सुरक्षा मिलती है।

बुधान्तर्दशा फल :-

जीवस्यान्तर्गते सौम्ये केन्द्र लाभत्रिकोणगे ।

स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि दशाधिपसमन्विते ।। 20 ।।

अर्थलाभो देहसौख्यं राज्यलाभो महत्सुखम् ।
महाराजप्रसादेन स्वेष्टसिद्धिः सुखावहा ।। 21 ।।
वाहनाम्बरपश्वादिगोधनैः संकुलं गृहम् ।
महीसुतेन संदृष्टे शत्रुवृद्धिः सुखक्षयः ।। 22 ।।
व्यवसायात्फलं नेष्टं ज्वरातिसारपीडनम् ।

(i) गुरु दशा में बुधान्तर्दशा हो तथा बुध 1.4.5.7.9.10.11 भावों में कहीं भी स्वक्षेत्री या उच्चगत या बृहस्पति के साथ ही स्थित हो तो धन लाभ, शरीर का सुख, राज्यप्राप्ति, बहु सुख, बड़े लोगों की सहायता से इष्टसिद्धि, सुख, वाहन, पशु, वस्त्र, गोधन आदि की बहुतायत होती है।

(ii) यदि बुध पर मंगल की दृष्टि हो तो शत्रुओं की वृद्धि, सुख में कमी, व्यवसाय में हानि, ज्वर या अतिसारादि से पीड़ा होती है।

दायेशात्भाग्यकोणे वा केन्द्रे वा तुङ्गराशिगे ।। 23 ।।
स्वदेशे धनलाभश्च पितृमातृसुखावहः ।
गजवाजिसमायुक्तो राजमित्रप्रसादतः ।। 24 ।।

यदि महादशेश से 5.9 या केन्द्र में या उच्चगत हो तो स्वदेश में ही धन लाभ, माता–पिता का पूरा सुख, हाथी घोड़े आदि कीमती वाहनों की प्राप्ति तथा राजा या राजतुल्य या राज्याधिकारी के सहयोग से बहुत कार्य सम्पन्न होते हैं।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा पापसंयुते ।
शुभदृष्टिविहीने च धनधान्यपरिच्युतिः ।। 25 ।।
विदेशगमनं चैव मार्गे चौरभयं तथा ।
व्रणदाहाक्षिरोगश्च नानादेशपरिभ्रमः ।। 26 ।।

यदि महादशेश गुरु से अन्तर्दशेश बुध 6.8.12 में हो या पापयुक्त हो तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट भी न हो तो धन धान्य आदि की हानि होती है। विदेश में गमन, यात्रा के समय चोर भय, घाव, शरीर में जलन, नेत्र रोग तथा अनेक स्थानों प्रदेशों में खूब भ्रमण करने के अवसर आते हैं–

विलग्नादपि दुःस्थे च पापग्रहसमन्विते ।
अकस्मात्कलहश्चैव गृहे निष्ठुरभाषणम् ।। 27 ।।
चतुष्पाज्जीवहानिश्च व्यवहारे तथैव च ।
अपमृत्युभयं चैव शत्रूणां कलहो भवेत् ।। 28 ।।

यदि बुध इसी तरह लग्न से 6.8.12 में या पापयुक्त हो तो अचानक कलह, घर में कठोर शब्दों का प्रयोग, चौपाए पशुओं से हानि, मुकदमे आदि में पराजय, दुर्घटना का भय, शत्रुओं से कलह होती है ।

शुभदृष्टे शुभैर्युक्ते दारसौख्यं धनागमः ।

आदौ शुभं देहसौख्यं वाहनाम्बर लाभकृत् ।। 29 ।।

अन्ते तु धनहानिः स्यात्स्वात्मसौख्यं न जायते ।

द्वितीय द्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।। 30 ।।

तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत् ।

आयुर्वृद्धिकरं चैव सर्वसौभाग्यदायकम् ।। 31 ।।

यदि बुध शुभयुक्त या दृष्ट हो तो अन्तर्दशा के प्रारम्भ में शुभ फल वाहन वस्त्रादि का लाभ और अन्त में हानि होती है । तथा कुछ भी सुख नहीं होता है ।

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का विशेष भय होता है । दोष की शान्ति के लिए विष्णु सहस्रनाम के पाठ करने से आयु, आरोग्य व सौभाग्यदायक हो जाती है ।

केतु अन्तर्दशा फल :–

जीवस्यान्तर्गते केतौ शुभग्रहसमन्विते ।

अल्पसौख्यधनावाप्तिः कुत्सितान्नस्य भोजनम् ।। 32 ।।

परान्नं चैव श्राद्धान्नं पापमूलाद् धनानि च ।

बृहस्पति की महा दशा में शुभ ग्रह से युक्त केतु की अन्तर्दशा हो तो कम सुख, कम लाभ, निंदित भोजन, पराया अन्न या श्राद्ध भोजन का दुर्योग, पापपूर्ण कार्यो से धन लाभ होता है ।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते ।। 33 ।।

राजकोपो धनच्छेदो बन्धनरोगपीडनम् ।

बलहानिः पितृद्वेषी भ्रातृद्वेषो मनोरुजः ।। 34 ।।

महादशेश से 6.8.12 में पापयुक्त केतु हो तो राजकोप, धन की हानि, बन्धन, रोगपीड़ा, शक्ति की कमी, पिता से द्वेषभाव, भाइयों से मनमुटाव व मनोविकार होते हैं ।

दायेशात्सुतभाग्यस्थे वाहने कर्मगेऽथवा ।

नरवाहन योगश्च, गजाश्वाम्बरसंकुलम् ।। 35 ।।

महाराजप्रसादेन स्वेष्टकार्यार्थलाभकृत् ।

व्यवसायात्फलाधिक्यं गोमहिष्यादिलाभकृत् ।। 36 ।

यवनप्रभुमूलाद् वा धनवस्त्रादिलाभकृत् ।

महादशेश से 5.9.4.10 भाव में केतु हो तो पालकी आदि की सवारी, हाथी घोड़ों, वस्त्रादि की बहुतायत, महाराजाओं की प्रसन्नता से स्व अभीष्ट सिद्धि, व्यवसाय में खूब लाभ, पशुधन की वृद्धि, यवन राज की सहायता से धन वस्त्रादि का लाभ होता है ।

द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति ।। 37 ।।

छागदानं प्रकुर्वीत मृत्युंजयजपं चरेत् ।

सर्वदोषोपशमनीं शान्तिं कुर्याद् यथाविधि ।। 38 ।।

यदि केतु 2.7 भावेश या इन मारकेशों के साथ स्थित हो तो शरीर कष्ट होता है । शान्ति के लिए मेषदान, मृत्युंजय का जप, यथाविधि कराना चाहिए ।

शुक्रान्तर्दशा फल :-

जीवस्यान्तर्गतेशुक्रेभाग्यकेन्द्रेशसंयुते ।

लाभे वा सुतराशिस्थे स्वक्षेत्रे शुभसंयुते ।। 39 ।।

नरवाहनयोगश्च गजाश्वाम्बरसंयुतः ।

महाराजप्रसादेन लाभाधिक्यं महत्सुखम् ।। 40 ।।

पूर्वस्यां दिशि विप्रेन्द्र ! प्रयाणं धनलाभदम् ।

कल्याणं च महाप्रीतिः पितृमातृसुखावहा ।। 41 ।।

देवतागुरुभक्तिश्च अन्नदानं महत्तथा ।

तडागगोपुरादीनि दिशेत् पुण्यानि भूरिशः ।। 42 ।।

गुरु दशा में शुक्रान्तर आने पर यदि शुक्र जन्म कुण्डली में 1.4.7.5.9.10.11 राशियों में या स्वक्षेत्रादि में शुभ ग्रह से युक्त हो तो नर वाहन (पालकी आदि) विलासिता की सामग्री में वृद्धि, राजादि की सहायता से बहुत लाभ व सुख, पूर्वदिशा की यात्रा में बहुत धन का लाभ होता है ।

इसी दशान्तर्दशा में कल्याण, उदार स्नेहिल मन, माता-पिता को सुख, देव गुरु में भक्ति, अन्नदान, तडाग (प्याऊ) स्मृतिद्वारादि का निर्माण करवाने से पुण्य प्राप्त होता है ।

षष्ठाष्टमव्यये नीचे दायेशाद्वा तथैव च ।

कलहो बन्धुवैषम्यं दारपुत्रादिपीडनम् ।। 43 ।।

मन्दाररराहुसंयुक्तो कलहो राजतो भयम् ।

स्त्रीमूलात्कलहश्चैव श्वसुरात्कलहस्तथा ।। 44 ।।

सोदरेण विवादः स्याद्धनधान्यपरिच्युतिः ।

यदि लग्न या दशेश से 6.8.12 में या नीचगत शुक्र हो तो कलह, बन्धुओं से असन्तुलित सम्बन्ध, स्त्री पुत्रादि की पीड़ा होती है ।

यदि शुक्र शनि, मंगल, राहु से युक्त हो तो सरकार आदि की ओर से कलहागम, विवाद, स्त्री के कारण कलह, ससुर से विवाद, भाइयों से विवाद तथा धन धान्य सम्पत्ति आदि की हानि होती है ।

दायेशात्केन्द्रगे शुक्रे धने वा भाग्यगेऽपि वा ।। 45 ।।
धनधान्यादिलाभश्च श्रीलाभो राजदर्शनम् ।।
वाहनं पुत्रलाभश्च पशुवृद्धिर्महत्सुखम् ।। 46 ।।
गीतवाद्यप्रसंगादिर्विद्वज्जनसमागमः ।
दिव्यान्नभोजनं सौख्यं स्वबन्धुजनपोषकम् ।। 47 ।।

दशेश से केन्द्र, धन स्थान या भाग्य भाव में शुक्र हो तो धन धान्य का लाभ, शोभा या हैसियत की वृद्धि, राजा से भेंट, वाहन व पुत्र का लाभ, पशुधन में वृद्धि, गीतादि मनोरंजक कार्यों के अवसर, विद्वानों से मिलाप, उत्तम भोजन, सुख तथा अपने बन्धु–बान्धवों के उपकारादि कार्य होते हैं ।

द्विसप्तमाधिपे शुक्रे तद्दशायां धनक्षतिः ।
अपमृत्युभयं तस्य स्त्रीमूलादौषधादितः ।। 48 ।।
तस्य रोगस्य शान्त्यर्थं शान्तिकर्मसमाचरेत् ।
श्वेतां गां महिषीं दद्याद् आयुरारोग्यवृद्धये ।। 49 ।।

यदि शुक्र 2.7 भावेश हो तो इसकी अन्तर्दशा में धनहानि, अपमृत्यु का भय, स्त्री के कारण कोई शरीर कष्ट, रोगादि या हवा के प्रतिकूल प्रभाव से रोगोत्पत्ति होती है ।

इसकी शान्ति के लिए शान्तिकर्म, सफेद गाय या भैंस का दान करना चाहिए ।

सूर्यान्तर्दशा फल :–

जीवस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा ।
केन्द्रे वाथ त्रिकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा ।। 50 ।।
धने वा बलसंयुक्ते दायेद्वा तथैव च ।
तत्काले धनलाभः स्याद् राजसम्मानवैभवम् ।। 51 ।।
वाहनाम्बरपश्वादि भूषणं पुत्रसम्भवः ।
मित्रप्रभुवशाद् इष्टं सर्वकार्ये शुभावहम् ।। 52 ।।

बृहस्पति दशा में सूर्य का अन्तर हो तथा सूर्य उच्चगत, सिंहस्थ, लग्न या दशेश से केन्द्र में, त्रिकोण में या 3.2.11 भाव में हो या बलवान् हो तो तुरन्त धन व्यय, राज सम्मान, वाहन पशु आदि का लाभ, पुत्र जन्म, किसी मित्र राजा की सहायता सब कार्यों में सफलता मिलती है।

लग्नाष्टमव्यये सूर्ये दायेशाद्वा तथैव च।
शिरोरोगादि पीडा च ज्वरपीडा तथैव च।। 53।।
सत्कर्मसु तदा हीनः पापकर्मचयस्तथा।
सर्वत्र जनविद्वेषो निजबन्धुवियोगकृत्।। 54।।
अकस्मात्कलहश्चैव जीवस्यान्तर्गते रवौ।
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युभयं भवेत्।। 55।।
तद्दोषपरिहारार्थम् आदित्यहृदयं जपेत्।
सर्वपीडोपशमनं दिनेशस्य प्रसादतः।। 56।।

यदि सूर्य लग्न या दशेश से 6.8.12 में हो तो सिर में पीड़ा, ज्वरपीड़ा, अच्छे कार्यों में हानि, पाप में वृद्धि, सब लोगों से मनमुटाव, अपने बन्धुओं से वियोग, अचानक कलह आदि फल होते हैं।

यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है। इसकी शन्ति के लिए 'आदित्यहृदय स्तोत्र' का पाठ करने से श्री सूर्यदेव प्रसन्न होते हैं।

चन्द्रान्तर्दशा फल :–

जीवस्यान्तर्गते चन्द्रे केन्द्रे लाभत्रिकोणके।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे पूर्णे बलयुक्तेऽथवा पुनः।। 57।।
दायेशाच्छुभराशिस्थे राजसम्मानवैभवम्।
दारपुत्रादि सौख्यं च क्षीराणां भोजनं तथा।। 58।।
सत्कर्म तथा कीर्तिः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदा।
महाराजप्रसादेन सर्वसौख्यं धनागमः।। 59।।
अनेक जनसौख्यं च दानधर्मादि संग्रहः।

गुरु दशा में चन्द्रमा का अन्तर हो तथा केन्द्र, त्रिकोण, एकादश में, स्वोच्चगत, स्वराशिगत, पूर्ण अथवा बलवान् चन्द्रमा हो या दशापति से पूर्वोक्त शुभ स्थानों में ही पड़े तब भी राज–सम्मान, वैभव, स्त्री–पुत्रादि का सुख, दूध के पदार्थों का भोजन, सत्कार्य, कीर्ति, सब सुख, धन–लाभ, बड़े लोगों

की सहायता, अनेक लोगों से अच्छे सम्बन्ध व दानधर्मादि का संग्रह होता है।

षष्ठाष्टमव्यये चन्द्रे स्थिते वा पापसंयुते ।। 60 ।।
दायेशाद् वा तथाभूते निर्बले रजनीकरे ।
मानार्थबन्धुहानिश्च विदेशपरिविच्युतिः ।। 61 ।।
नृपचौरादिपीडा च दायादजनविग्रहः ।
मातुलादिवियोगश्च मातृपीडा तथैव च ।। 62 ।।
द्वितीय षष्ठयोरीशे देहपीडा भविष्यति ।
तद्दोषोपशमनार्थ दुर्गापाठं च कारयेत् ।। 63 ।।

यदि चन्द्रमा लग्न या दशापति से 6.8.12 में, या पापयुक्त, क्षीण, निर्बल हो तो मान हानि, बन्धु हानि, धन हानि, विदेश से वापस पलायन, राजा या चोर आदि की पीड़ा, अपने लोगों या उत्तराधिकारियों से विवाद, मामा आदि का वियोग, माता को पीड़ा होती है।

यदि चन्द्रमा 2.6 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है तथा इसकी निवृत्ति के लिए दुर्गापाठ कराना चाहिए।

मंगलान्तर्दशा फल :–

जीवस्यान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा ।। 64 ।।
विद्याविवाहकार्याणि ग्रामभूम्यादिलाभकृत् ।
जनसामर्थ्यमाप्नोति सर्वकार्यार्थसिद्धिदम् ।। 65 ।।

गुरु दशा में मंगल की अन्तर्दशा हो तथा मंगल लग्न से केन्द्र, त्रिकोण (या लाभ) में हो या स्वोच्चगत, स्वराशिगत, या नवांश में उच्चादि गत हो तो विद्याप्राप्ति, विवाह, ग्रामादि में प्रतिष्ठा, भूमि का लाभ, जन समर्थन व सर्वत्र सफलता मिलती है।

दायेशात्केन्द्रकोणस्थे लाभे वा धनगेऽपि वा ।
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे धनधान्यादि सम्पदः ।। 66 ।।
मिष्टान्नदानविभवं राजप्रीतिकरं शुभम् ।
स्त्रीसौख्यं च सुतावाप्तिः पुण्यतीर्थफलं भवेत् ।। 67 ।।

यदि दशापति से केन्द्र, त्रिकोण, 2.11 भावों में मंगल हो या मंगल शुभ युक्त दृष्ट हो तो धन–धान्य की वृद्धि, मिष्टान्न दान की सामर्थ्य,

राजा से प्रीति, स्त्रीसुख, पुत्र लाभ, पुण्यतीर्थो में स्नान आदि कार्य होते हैं।

दायेशाद् रन्ध्रभावे वा व्यये वा नीचगेऽपि वा।
पापयुक्तेक्षिते वापि धान्यार्थगृहनाशनम्।। 68 ।।
नानारोगभयं दुःखं नेत्ररोगादि सम्भवः।
पूर्वार्धे कष्टमधिकमपरार्धे महत्सुखम्।। 69 ।।
द्वितीयद्यूननाथे तु देहजाड्यं मनोरुजः।
वृषभस्य प्रदानं तु सर्वसम्पत्प्रदायकम्।। 70 ।।

यदि दशापति से मंगल 8.12 भाव में, या नीचगत या पापदृष्टयुत हो तो धन, धान्य व भवनादि का नाश, अनेक रोग, भय, दुःख तथा नेत्र कष्ट होता है।

अन्तर्दशा के पूर्वार्ध में बहुत दुःख तथा उत्तरार्ध में सुख होता है। यदि मंगल 2.7 भावेश हो तो मनोविकार शरीर में शिथिलता होती है। शान्ति के लिए साँड या बछड़े का दान करना चाहिए।

राहु अन्तर्दशा फल :–

जीवस्यान्तर्गते राहौ स्वोच्चे वा केन्द्रगेऽपि वा।
मूलत्रिकोणे भाग्ये च केन्द्राधिपसमन्विते।। 71 ।।
शुभयुक्तेक्षिते वापि योगप्रीतिं समादिशेत्।
भुक्त्यादौ पंचमासांश्च धनधान्यादिकं लभेत्।। 72 ।।
देशग्रामाधिकारं च यवनप्रभुदर्शनम्।
गृहे कल्याणसम्पत्तिर्बहुसेनाधिपत्यकम्।। 73 ।।
दूरयात्राधिगमनं पुण्मधर्मादिसंग्रहः।
सेतुस्नानफलावाप्तिरिष्टसिद्धिः सुखावहा।। 74 ।।

बृहस्पति में राहु की अन्तर्दशा हो तथा राहु केन्द्रगत, उच्चगत, मूलत्रिकोणगत, नवमस्थ या केन्द्रेश त्रिकोणेशादि से युक्त हो या शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो तो खूब शुभ फल, धन धान्य का लाभ, देश या ग्रामादि का अधिकार, यवन सम्राट् से भेंट, घर में कल्याण, सम्पत्ति वृद्धि तथा सेनापतित्व प्राप्त होता है। इसमें भी पहले पाँच मासों में विशेष धन वृद्धि होती है।

दूर देशों की यात्रा, पुण्य संग्रह, सेतु स्नान (रामेश्वर यात्रा) का फल व कार्य सिद्ध होते हैं।

दायेशाद् रन्ध्रभावे वा व्यये वा पापसंयुते ।
चौरादिव्रणभीतिश्च राजवैषम्यमेव च ।। 75 ।।
गृहे कर्मकलापेन व्याकुलो भवति ध्रुवम् ।
सोदरेण विरोधः स्यात् दायादजनविग्रहः ।। 76 ।।
गृहे त्वशुभकार्याणि दुःस्वप्नादि भयं ध्रुवम् ।
अकस्मात्कलहश्चैव क्षुद्रशून्यादिरोगकृत् ।। 77 ।।
द्विसप्तमस्थिते राहौ देहबाधां विनिर्दिशेत् ।
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजय जपं चरेत् ।। 78 ।।
छागदानं प्रकुर्वीत देवपूजां च कारयेत् ।
राहुतुष्ट्या तदा विप्र ! सर्वसौख्यमवाप्नुयात् ।। 79 ।।

यदि महादशेश से 8.12 में राहु हो, पाप युक्त हो तो चोर, चोट, सर्पादि का भय, राजा से प्रतिकूलता, घरेलू समस्याएँ, भाइयों व उत्तराधिकारियों से विवाद, लोगों का विरोध, घर में अमंगलकार्य, छोटे या काल्पनिक रोगों से पीड़ा होती है ।

यदि राहु 2.7 भाव में स्थित हो तो शरीर कष्ट होता है । इनकी शान्ति के लिए, मृत्युंजय जप, बकरे का दान, देवताओं की पूजा करनी चाहिए । तब जातक राहु की प्रसन्नता से सब सुख पाता है ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां गुर्वन्तर्दशा फलाध्यायोष्टपंचाशत्तमः ।। 58 ।।

59

।। अथ शनिदशान्तर्दशाफलाध्यायः ।।

शनि में शनि अन्तर्दशा फल :-

मूलत्रिकोणे स्वर्क्षे वा तुलायामुच्चगेऽपि वा ।
केन्द्रत्रिकोणे लाभे वा राजयोगादिसंयुते ।। 1 ।।
राज्यलाभो महत्सौख्यं दारपुत्रादि वर्धनम् ।
वाहन त्रयसंयुक्तं गजाश्वाम्बर संकुलम् ।। 2 ।।
महाराजप्रसादेन सेनापत्यादि लाभकृत् ।
चतुष्पाज्जीवलाभः स्यात् ग्रामभूम्यादिलाभकृत् ।। 3 ।।

शनि की अन्तर्दशा आने पर यदि शनि जन्म समय में मूलत्रिकोणी, स्वक्षेत्री, उच्चगत, केन्द्र, त्रिकोणगत या लाभगत या राजयोग कारक ग्रह से युक्त हो तो राज्य लाभ, खूब सुख, स्त्री–पुत्रादि की वृद्धि, कई वाहनों का सुख, भौतिक समृद्धि, महाराज की प्रसन्नता से सेनापतित्व या अधिकार प्राप्ति, चौपाए पशुओं से लाभ, ग्राम या भूमि का अधिकार मिलता है।

तथाष्टमे व्यये मन्दे नीचे वा पापसंयुते।
तद्भुक्त्यादौ राजभीतिर्विषशस्त्रादिपीडनम्।। 4।।
रक्तस्रावो गुल्मरोगो ह्यतिसारादिपीडनम्।
मध्ये चौरादि भीतिश्च देशत्यागो मनोरुजः।। 5।।
अन्ते शुभकरी चैव शनेरन्तर्दशा द्विज!।
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति।। 6।।
दोषस्य परिहारार्थं मृत्युंजयमनुं जपेत्।
तस्माच्छान्तिमवाप्नोति शंकरस्य प्रसादतः।। 7।।

यदि शनि 8.12 में या नीचगत या पापयुक्त हो तो अन्तर्दशारम्भ में राज भय, विषशस्त्रादि पीड़ा, रक्त बहना, गुल्म (पथरी, अन्दरूनी फोड़ा या जिगर बढ़ना, दस्त आदि होते हैं।

दशा मध्य में चोर भय, स्थान या देश का त्याग, मनोविकार होते हैं। अन्त में शनि में शनि की अन्तर्दशा शुभ फल देती है।

यदि शनि 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु से बचने के लिए मृत्युंजय मन्त्र का जप करने से अनिष्ट निवारण होता है।

बुधान्तर्दशा फल :–

मन्दस्यान्तर्गते सौम्ये त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा।
सम्मानं च यशः कीर्तिं विद्यालाभं धनागमम्।। 8।।
स्वदेशे सुखमाप्नोति वाहनादि फलैर्युतम्।
यज्ञादिकर्मसिद्धिश्च राजयोगादि सम्भवम्।। 9।।
देहसौख्यं हृदुत्साहं गृहे कल्याणसम्भवम्।
सेतुस्नान फलावाप्तिस्तीर्थयात्रादिकर्मणा।। 10।।
वाणिज्याद् धनलाभश्च पुराणश्रवणादिकम्।
अन्नदानं फलं चैव नित्यं मिष्ठान्नभोजनम्।। 11।।

शनि महादशा में बुध की अन्तर्दशा हो तथा बुध केन्द्र, त्रिकोण में हो तो सम्मान, यश, कीर्ति, विद्यालाभ, धनलाभ, स्वदेश में ही सुख, वाहनादि

का सुख, यज्ञादि की सम्पन्नता, राजयोग, शरीर सुख, हृदय में उत्साह, घर में कल्याणकारी कार्य, सेतुस्नान का अवसर, तीर्थयात्राएँ, वाणिज्य (व्यापार या व्यापारियों से) लाभ, पुराण कथा श्रवण, अन्नदान तथा मिष्ठान्न भोजन आदि फल मिलते हैं।

षष्ठाष्टमव्यये सौम्ये नीचे वास्तंगते सति ।
रव्यारफणिसंयुक्ते दायेशाद्वा तथैव च ।। 12 ।।
नृपाभिषेकमर्थाप्तिर्देशग्रामाधिपत्यकम् ।
फलमीदृशमादौ तु मध्यान्ते रोगपीडनम् ।। 13 ।।
नष्टानि सर्वकार्याणि व्याकुलत्वं महद्भयम् ।
द्वितीयसप्तमाधीशे देहबाधा भविष्यति ।। 14 ।।
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत् ।
अन्नदानं प्रकुर्वीत ततः सौख्यमवाप्नुयात् ।। 15 ।।

यदि बुध 6.8.12 भाव में, या नीचगत या अस्तंगत या सूर्य, मंगल, राहु के साथ हो अथवा दशेश शनि से 6.8.12 में हो तो दशारम्भ में पद प्राप्ति, धन लाभ, स्थानीय अधिकार, मध्यभाग में रोग पीड़ा, सब कार्यों का नाश, मन में व्याकुलता, भय होता है।

यदि बुध 2-7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है। दोष शान्ति के लिए विष्णु सहस्रनाम का पाठ व अन्न दान करना चाहिए, तब सुख होता है।

केतु अन्तर्दशा फल :–

मन्दस्यान्तर्गते केतौ शुभदृष्टियुतेक्षिते ।
स्वोच्चे वा शुभ राशिस्थे योगकारक संयुते ।। 16 ।।
केन्द्रकोणगते वापि स्थानभ्रंशो महद्भयम् ।
दरिद्रबन्धनभीतिः पुत्रदारादिनाशनम् ।। 17 ।।
स्वप्रभोश्च महाकष्टं विदेशगमनं तथा ।
लग्नाधिपेन संयुक्ते पूर्वं सौख्यं धनागमः ।। 18 ।।

शनि में केतु की अन्तर्दशा हो तथा केतु शुभ फलद या शुभ ग्रह से दृष्ट युक्त हो, स्वोच्चगत या अन्य शुभ राशियों में हो, या योगकारक ग्रह से युक्त हो, केन्द्र में या त्रिकोण में हो तो स्थान परिवर्तन, दरिद्रता की पीड़ा, भय, पुत्र–स्त्री को कष्ट, अपने स्वामी को कष्ट, विदेशगमन होता है।

यदि केतु लग्नेश से युक्त हो तो पूर्वार्ध में सुख व धन का लाभ होता है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा तृतीयभव राशिगे।

समर्थो धर्मबुद्धिश्च सौख्यं नृपसमागमः।। 19।।

यदि दशेश से केन्द्र, त्रिकोण, तृतीय या एकादश में केतु हो तो सामर्थ्य वृद्धि, धर्म बुद्धि व राजा से समागम होता है।

तथाष्टमे व्यये केतौ दायेशद्वा तथैव च।

अपमृत्युभयं चैव कुत्सितान्नस्य भोजनम्।। 20।।

शीतज्वरातिसारश्च व्रणचौरादि पीडनम्।

दारपुत्र वियोगश्च जनानां भवति ध्रुवम्।। 21।।

द्वितीय द्यूनराशिस्थे देहपीडा भविष्यति।

छागदानं प्रकुर्वीत ह्यपमृत्युनिवारणम्।। 22।।

इसी तरह लग्न या दशापति से 8.12 में केतु हो तो अपमृत्यु का भय, खराब भोजन, शीत ज्वरादि से पीड़ा, व्रणादि योग, स्त्री–पुत्रादि का वियोग होता है। यदि केतु 2.7 में हो तो शरीर कष्ट होता है। एतदर्थ मेष दान करना चाहिए।

शुक्रान्तर्दशा फल :–

मन्दस्यान्तर्गते शुक्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा।

केन्द्रे वा शुभसंयुक्ते त्रिकोणे लाभगेऽपि वा।। 23।।

दारपुत्रधनप्राप्तिर्देहारोग्यं महोत्सवः।

गृहे कल्याणसम्पत्ती राज्यलाभो महत्सुखम्।। 24।।

महाराजप्रसादेन हीष्टसिद्धि सुखावहा।

सम्मानं प्रभुसम्मानं प्रियवस्त्रादि लाभकृत्।। 25।।

द्वीपान्तराद् वस्त्रलाभः श्वेताश्वो महिषी तथा।

गुरुचारवशाद्भाग्यं सौख्यं च धनसम्पदः।। 26।।

शनि चारान्मनुष्योऽसौ योगमाप्नोत्यसंशयम्।

शनि महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तथा शुक्र उच्च, स्वक्षेत्र, केन्द्रगत, या शुभयुक्त, त्रिकोणगत या लाभगत हो तो स्त्री, पुत्र, धन, आरोग्य घर में महान् उत्सव, घर में कल्याणकारी कार्य, राज्य लाभ, महान् सुख, बड़े लोगों के सहयोग से इष्टसिद्धि, सम्मान, राजमान्यता, अभीष्ट योगों

की प्राप्ति, दूसरे द्वीप (विदेशों) से वस्त्रादि लाभ, सफेद घा
दूध देने वाले पशुओं की प्राप्ति होती है।

इस अन्तर्दशा के समय यदि मनुष्य को गोचर से बृ
हो तो सुख व धन सम्पत्ति एवं शनि शुभ स्थानों में गोचर करे त
अर्थात् बहुत सुख मिलते हैं। यदि दोनों ही शुभ स्थान में हों तो
उल्लेखनीय शुभ फल मिलते हैं।

शत्रुनीचास्तगे शुक्रे षष्ठाष्टव्ययराशिगे ।। 27 ।।

दारनाशो मनःक्लेशः स्थाननाशो मनोरुजः ।

दाराणां स्वजनक्लेशः सन्तापो जनविग्रहः ।। 28 ।।

यदि शुक्र नीचगत, अस्तंगत, 6.8.12 में स्थित हो तो स्त्री कष्ट, मन में क्लेश, स्थान नाश, मनोविकार, स्त्री या स्वजनों से क्लेश, सन्ताप व लोगों का विरोध सहना पड़ता है।

दायेशाद् भाग्यगे चैव केन्द्रे वा लाभसंयुते ।

राजप्रीतिकरं चैव मनोऽभीष्टप्रदायकम् ।। 29 ।।

दानधर्मदयायुक्तं तीर्थयात्रादिकं फलम् ।

शास्त्रार्थकाव्यरचनां वेदान्त श्रवणादिकम् ।। 30 ।।

दारपुत्रार्थ सौख्यं च लभते नात्र संशयः ।

यदि दशेश शनि से केन्द्र, लाभस्थान या त्रिकोण में शुक्र हो तो राजा से प्रीति, मन में अभीष्ट वस्तु लाभ का सन्तोष, दान, धर्म दया की वृद्धि, तीर्थयात्रादि फल, शास्त्रों के अर्थ व्याख्या टीकादि करने का सुयोग, वेदान्त विद्या या ब्रह्मविद्या का श्रवण, स्त्री, पुत्र व धनादि का सुख होता है।

दायेशाद व्ययगे शुक्रे षष्ठे वा ह्यष्टमेऽपि वा ।। 31 ।।

नेत्रपीड़ा ज्वरभयं स्वकुलाचारवर्जितः ।

कपोले दन्तशूलादि हृदिगुह्ये च पीडनम् ।। 32 ।।

जलभीतिर्मनस्तापो वृक्षात्पतन सम्भवः ।

राजद्वारे मनद्वेषः सोदरेण निरोधनम् ।। 33 ।।

द्वितीयसप्तमाधीशे आत्मक्लेशो भविष्यति ।

तद्दोष परिहारार्थं दुर्गादेवीजपं चरेत् ।। 34 ।।

श्वेतां गां महिषीं दद्यादायुरारोग्यवृद्धये ।

जगदम्बा प्रसादेन ततः सुखमवाप्नुयात् ।। 35 ।।

यदि दशापति से 6.8.12 में शुक्र हो तो पीड़ा, ज्वरादि रोग, अपने कुलाचार से हीन अर्थात् कुल के प्रतिकूल कार्य, कपोल या दाँत में दर्द,

हृदय या गुप्तांगों में पीड़ा, जल से भय, मन में सन्ताप, वृक्ष से पतन, राजद्वार में मन में मलिनता, भाइयों से विरोध होता है।

यदि शुक्र 2.7 भावेश हो तो स्वयं को कष्ट होता है। इस दोष की शान्ति के लिए, दुर्गा पाठ, सफेद गौ या भैंस का दान करें। तब भगवती की कृपा से सुख, आयु व स्वास्थ्य की वृद्धि होती है।

सूर्यान्तर्दशा फल :–

मन्दस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा।

भाग्याधिपेन संयुक्ते केन्द्रलाभत्रिकोणगे।। 36।।

शुभदृष्टियुते वापि स्वप्रभोश्च महत्सुखम्।

गृहे कल्याणसम्पत्तिः पुत्रादिसुखवर्धनम्।। 37।।

वाहनाम्बर पश्वादि गोक्षीरैः संकुलंगृहम्।

शनि दशा में सूर्य का अन्तर हो तथा सूर्य उच्च स्वक्षेत्र में हो या केन्द्रत्रिकोण में या नवमेश से युक्त या शुभ ग्रह से दृष्ट युत हो तो अपने स्वामी की वृद्धि, अपने अधिकारी की ओर से सुख, घर में बढ़ोत्तरी, पुत्रादि का सुख, वाहन, पशु आदि का लाभ, गाय के दूध की अधिकता होती है।

लग्नाष्टमव्यये सूर्ये दायेशद्वा तथैव च।। 38।।

हृद्रोगो मानहानिश्च स्थानभ्रंशो मनोरुजा।

इष्टबन्धुवियोगश्च परिश्रमविनाशनम्।। 39।।

तापज्वरादिपीडा च व्याकुलत्वं भयं तथा।

आत्मसम्बन्धिसरणम् इष्टवस्तु वियोगकृत्।। 40।।

द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति।

तद्दोषपरिहारार्थं सूर्यपूजां च कारयेत्।। 41।।

यदि लग्न या दशेश से 8.12 में सूर्य हो तो हृदयरोग, मानहानि, मानसिक व्यथा के कारण पद या स्थान की हानि, इष्टजनों का वियोग, परिश्रम की असफलता, ताप ज्वर पीड़ा, व्याकुलता, भय, अपने निजी व्यक्ति का शोक होता है।

यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है। इस दोष की शान्ति के लिए सूर्य पूजा करानी चाहिए।

चन्द्रान्तर्दशा फल :–

मन्दस्यान्तर्गते चन्द्रे जीवदृष्टिसमन्विते।

स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रस्थे त्रिकोणे लाभगेऽपि वा।। 42।।

पूर्णे शुभग्रहयुक्ते राजप्रीतिसमागमः ।
महाराजप्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम् ।। 43 ।।
सौभाग्यं सुखवृद्धि च भृत्यानां परिपालनम् ।
पितृमातृकुले सौख्यं पशुवृद्धिः सुखावहा ।। 44 ।।

(i) शनि महादशा में चन्द्रमा का अन्तर हो तथा चन्द्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि हो या चन्द्रमा उच्चगत, स्वक्षेत्री, त्रिकोणगत, लाभगत या पूर्ण हो या शुभ ग्रह से युक्त हो तो राजाओं से मित्रता व मिलन, बड़े लोगों के सहयोग से वाहनादि सुखों की प्राप्ति, सौभाग्यवृद्धि, सुखवृद्धि, नौकरों को पालने का स्तर, मातृकुल व पितृकुल में सुख एवं पशुवृद्धि होती है ।

क्षीणे वा पापसंयुक्ते पापदृष्टे च नीचगे ।
क्रूरांशकगते वापि क्रूरक्षेत्रगतेऽपि वा ।।45 ।।
जातकस्य महत्कष्टं राजकोपो धनक्षयः ।
पितृमातृवियोगश्च पुत्रीपुत्रादिरोगकृत् ।। 46 ।।
व्यवसायात्फलं नेष्टं नानामार्गे धनव्ययः ।
अकाले भोजनं चैवमौषधस्य च भक्षणम् ।। 47 ।।
फलमेतद्विजानीयादादौ सौख्यं धनागमः ।

यदि चन्द्रमा क्षीण, पापयुक्त, पापदृष्ट या नीचगत, क्रूर नवांशगत या क्रूरराशिगत हो तो व्यक्ति को महान् कष्ट, राजा का कोप, धन हानि, माता पिता का वियोग, सन्तान को कष्ट, व्यवसाय से कम लाभ, नाना तरह से धन हानि, असमय में भोजन, दवा खाने के योग होते हैं लेकिन इस अन्तर्दशा के प्रारम्भ में कुछ सुख व धन लाभ भी होता है ।

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे त्रिकोणे लाभगेऽपि वा ।। 48 ।।
वाहनाम्बर पश्वादि भ्रातृवृद्धिः सुखावहा ।
पितृमातृसुखावाप्तिः स्त्रीसौख्यं च धनागमः ।। 49 ।।
मित्रप्रभुवशादिष्टं सर्वसौख्यं शुभावहम् ।
दायेशाद् द्वादशे भावे रन्ध्रे वा बलवर्जिते ।। 50 ।।
शयनं रोगमालस्यं स्थानभ्रष्टं सुखावहम् ।
शत्रुवृद्धि विरोधश्च बन्धुद्वेषमवाप्नुयात् ।। 51 ।।
द्वितीयद्यूननाथे तु देहालस्यं भविष्यति ।
तद्दोषशमनार्थं च तिल होमं समाचरेत् ।। 52 ।।
गुडं घृतं च दध्नाक्तं तण्डुलं च यथाविधि ।
श्वेतां गां महिषीं दद्यादायुरारोग्यवृद्धये ।। 53 ।।

(i) महादशेश से केन्द्र, त्रिकोण या लाभ स्थान में चन्द्रमा हो तो वाहन, पशु, वस्त्रादि की प्राप्ति, भाइयों की वृद्धि, माता–पिता को सुख, स्त्री का सुख, धन लाभ, मित्र या राजा के सहयोग से सब सुख मिलते हैं ।

(ii) महादशेश से 8.12 में यदि चन्द्रमा हो या निर्बल चन्द्रमा हो तो आलस्य, अधिक शयन, रोग, स्थान नाश होता है। शत्रुओं की वृद्धि, शत्रु विरोध, भाई–बन्धुओं से द्वेष होता है।

(iii) यदि चन्द्रमा 2.7 भावेश हो तो शरीर में शिथिलता होती है। दोष शान्ति के लिए तिल से हवन करें। गुड़ घी व दही चावल का दान करें तथा सफेद गाय या भैंस का दान करें।

मंगलान्तर्दशा फल :–

मन्दस्यान्तर्गते भौमे केन्द्रलाभ त्रिकोणगे।
तुंगे स्वक्षेत्रे वापि दशाधिपसमन्विते।। 54।।
लग्नाधिपेन संयुक्ते आदौ सौख्यं धनागमः।
रत्नप्रीतिकरं सौख्यं वाहनाम्बरभूषणम्।। 55।।
सेनापत्यं नृपप्रीतिः कृषिगोधान्यसम्पदः।
नूतन स्थाननिर्माणं भ्रातृवर्गेष्ट सौख्यकृत्।। 56।।

यदि शनि दशा में मंगल का अन्तर हो तथा मंगल केन्द्र, त्रिकोण, लाभस्थान, स्वोच्च, स्वक्षेत्र में या दशेश शनि के साथ स्थित हो या लग्नेश के साथ मंगल हो तो दशारम्भ में सुख, धनलाभ, राजा से प्रीति, वाहनादि की प्राप्ति, सेनापतित्व, कृषि व पशु धन की वृद्धि, नए स्थान का निर्माण, भाईयों को सुख होता है।

नीचे चास्तंगते भौमे लग्नादष्टव्ययस्थिते।
पाप दृष्टयुते चापि धनहानिर्भविष्यति।। 57।।
चौरादिव्रणशस्त्रादिग्रन्थिरोगादिपीढनम्।
भ्रातृपित्रादिपीडा च दायादजनविग्रहः।। 58।।
चतुष्पाज्जीवहानिश्च कुत्सितान्नस्य भोजनम्।
विदेशगमनं चैव नानामार्गे धनव्ययः।। 59।।
अष्टमद्यूननाथे तु द्वितीयस्थेऽथवा यदि।
अपमृत्युभयं चैव नानाकष्टं पराभवः।। 60।।
तद्दोषपरिहारार्थं शान्ति होमं च कारयेत्।
वृषदानं प्रकुर्वीत सर्वारिष्टनिवारणम्।। 61।।

यदि मंगल नीचगत, अस्तंगत या अष्टमस्थ, पापदृष्टयुक्त हो तो धनहानि होती है। चोर भय, सर्पभय, व्रण (घाव) भय, शस्त्रादि भय, शरीर गाँठ, ट्यूमर आदि से पीड़ा, भाइयों व मित्रों को कष्ट, सम्पत्ति के दावेदारों से विवाद, चौपाया पशु से कष्ट या हानि, कुभोजन, विदेशगमन, अनेक प्रकार से धन का व्यय होता है।

यदि 7.8 भावेश मंगल हो या मंगल द्वितीयस्थ हो तो अपमृत्युभय, नाना प्रकार से कष्ट, पराजय होती है। इस दोष की शान्ति के लिए शान्तिकार्य, हवन, साँड़ दान करना चाहिए, तब कष्ट दूर होता है।

राहु अन्तर्दशाफल :—

मन्दस्यान्तर्गते राहौ कलहश्च मनोव्यथा।
देहपीडा मनस्तापः पुत्रद्वेषो रुजोभयम्।। 62।।
अर्थव्ययो राजभयं स्वजनादिविरोधिता।
विदेशगमनं चैव गृहक्षेत्रादिनाशनम्।। 63।।

शनि दशा में राहु का अन्तर हो तो कलह, मानसिक कष्ट, शरीर कष्ट, मन में सन्ताप, पुत्र से द्वेष, रोगभय, धन का व्यय, राजभय, अपने लोगों से विरोध, विदेश गमन पर जाना पड़े, घर व खेत, स्थान आदि की हानि होती है।

लग्नाधिपेन संयुक्ते योगकारकसंयुते।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे केन्द्रे दायेशाल्लाभराशिगे।। 64।।
आदौ सौख्यं धनावाप्तिं गृहक्षेत्रादि सम्भवम्।
देवब्राहम्णभक्तिं च तीर्थयात्रादिकं लभेत्।। 65।।
चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद् गृहे कल्याणवर्धनम्।
मध्ये तु राजभीतिश्च पुत्रमित्रविरोधनम्।। 66।।

यदि लग्नेश के साथ मंगल योगकारक ग्रह से युक्त हो, स्वोच्चगत, स्वक्षेत्री, केन्द्रगत हो या दशापति से एकादश में हो तो पहले सुख, धन लाभ, घर, जमीन जायदाद का लाभ, देव ब्राह्मणों की भक्ति, तीर्थयात्रादि, चौपाए जीवों से लाभ, घर में कल्याणकारी कार्य होते हैं।

लेकिन दशामध्य में राजभय, पुत्रों व मित्रों से विरोध होता है।

मेषे कन्यागते वापि कुलीरे वृषभे तथा।
मीनकोदण्डसिंहेषु गजान्तैश्वर्यमादिशेत्।। 67।।
राजसम्मानभूषाप्तिं मृदुलाम्बरभूषणम्।
द्विसप्तमाधिपैर्युक्ते देहबाधा भविष्यति।। 68।।
मृत्युंजयं प्रकुर्वीत छागदानं च कारयेत्।
वृषदानं प्रकुर्वीत सर्वसम्पत्सुखावहम्।। 69।।

मेष, कन्या, कर्क, वृष, मीन, धनु या सिंह में राहु हो तो अपूर्व ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। इसकी अन्तर्दशा में राजसम्मान, भूषणों की प्राप्ति, मृदुल वस्त्रों की प्राप्ति होती है।

यदि राहु 2.7 भावेशों के साथ हो तो शरीर कष्ट होता है। दोष निवारण के लिए मृत्युंजय जप, मेषदान, वृषभदान करने से सब सुख होते हैं।

गुरु अन्तर्दशा फल :–

मन्दस्यान्तर्गते जीवे केन्द्रे लाभत्रिकोणगे ।
लग्नाधिपेन संयुक्ते स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा ।। 70 ।।
सर्वकार्यार्थसिद्धिः स्याच्छोभनं भवति ध्रुवम् ।
महाराजप्रसादेन धनवाहनभूषणम् ।। 71 ।।
सम्मानं प्रभुसम्मानं प्रियवस्त्रार्थलाभकृत् ।
देवतागुरुभक्तिश्च विद्वज्जन समागमः ।। 72 ।।
दारपुत्रादि लाभश्च पुत्रकल्याणवैभवम् ।

शनि दशा में गुरु का अन्तर हो तथा गुरु केन्द्र, त्रिकोण, लाभ स्थान में, स्वोच्च, स्वक्षेत्र में हो या शुभ भावों में लग्नेश से युक्त हो तो सब कार्यो में सफलता, शुभफल, बड़े लोगों के सहयोग से धन व वाहन की प्राप्ति, सम्मान, अधिकारी या राजा से प्रशंसा, प्रिय भोग्य वस्तुओं की प्राप्ति, देवताओं व गुरु के प्रति भक्ति, विद्वानों के साथ समागम, स्त्री व पुत्रादि का लाभ, पुत्र की उन्नति व वैभव होता है ।

षष्ठाष्टमव्यये जीवे नीचे वा पापसंयुते ।। 73 ।।
निजसम्बन्धिमरणं धनधान्यविनाशनम् ।
राज्यस्थाने जनद्वेषः कार्यहानिर्भविष्यति ।। 74 ।।
विदेशगमनं चैव कुष्ठरोगादिसम्भवः ।।

यदि गुरु 6.8.12 में नीचगत या पापयुक्त हो तो अपने किसी निजी व्यक्ति की मृत्यु, धनधान्य का विनाश, सरकारी स्थानों पर लोगों से विरोध, कार्यहानि, विदेश गमन, त्वचा रोगादि की उत्पत्ति होती है ।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा धने वा लाभगेऽपि वा ।। 75 ।।
विभवं दारसौभाग्यं राजश्रीधनसम्पदः ।
भोजनाम्बरसौख्यं च दानधर्मादिकं भवेत् ।। 76 ।।
ब्रह्मप्रतिष्ठासिद्धिश्चक्रतुकर्मफलंतथा ।
अन्नदानं महाकीर्तिर्वेदान्तश्रवणादिकम् ।। 77 ।।

यदि शनि दशेश से बृहस्पति 1.2.4.5.7.9.10.11 में हो तो वैभव, स्त्री का सुख, राज्यलक्ष्मी या राजमान की प्राप्ति, भोजन वस्त्रादि का पूर्ण सुख दया धर्म में बुद्धि, वेदांगों का ज्ञान, यज्ञादि कार्यो का सफल सम्पादन, अन्नदान, महान् कीर्ति, वेदान्तविद्या से सम्बन्धित बातों को सुनने के अवसर होते हैं ।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा बलवर्जिते ।
बन्धुद्वेषो मनो दुःखं कलहः पदविच्युतिः ।। 78 ।।
कुभोजनं कर्महानी राजदण्डाद्धनव्ययः ।
कारागृहप्रवेशश्च पुत्रदारादिपीडनम् ।। 79 ।।

द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा मनोरुजः ।

आत्मसम्बन्धिमरणं भविष्यति न संशयः ।। 80 ।।

तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत् ।

स्वर्णदानं प्रकुर्वीत ह्यारोग्यं भवति ध्रुवम् ।। 81 ।।

यदि दशापति से 6.8.12 में गुरु हो या निर्बल हो तो बन्धुओं से द्वेष, मन में दुःख, कलह, पदहानि, कुभोजन, कार्य में असफलता, राजदण्ड से धनहानि, कारावास, पुत्र, स्त्री को पीड़ा होती है।

यदि बृहस्पति 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट, मानसिक कष्ट, अपने किसी व्यक्ति की हानि होती है। इस दोष को दूर करने के लिए शिव सहस्र नाम का जप व स्वर्ण दान करना चाहिए, तब आरोग्य होता है।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां
शन्यन्तर्दशाफलाध्यायः एकोनषष्टितमः ।। 59 ।।

60

।। अथ बुधान्तर्दशाफलाध्यायः ।।

बुध दशा में बुधान्तर्दशा फल :–

मुक्ताविद्रुमलाभश्चज्ञानकर्मसुखादिकम् ।

विद्या महत्त्वं कीर्तिश्च नूतनप्रभुदर्शनम् ।। 1 ।।

विभवं दारपुत्रादि पितृमातृसुखावहम् ।

स्वोच्चादिस्थेऽथ नीचस्थे षष्ठाष्टव्ययराशिगे ।। 2 ।।

पापयुक्तेऽथवा दृष्टे धनधान्यपशुक्षयः ।

आत्मबन्धुविरोधश्च शूलरोगादि सम्भवः ।। 3 ।।

राजकार्यकलापेन व्याकुलो भवति ध्रुवम् ।

द्वितीयद्यूननाथे तु दारक्लेशो भविष्यति ।। 4 ।।

आत्मसम्बन्धिमरणं वातशूलादिसम्भवः ।

तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत् ।। 5 ।।

यदि बुध स्वोच्च, स्वक्षेत्र, मूलत्रिकोण, शुभयुक्त, शुभदृष्ट, केन्द्रत्रिकोणगत हो तो मुक्ताविद्रुम आदि मणियों व रत्नों की प्राप्ति, ज्ञान वृद्धि, कार्य वृद्धि, विद्या लाभ, महत्त्व वृद्धि, नए राजा या अधिकारी से मिलन, वैभव, स्त्री–पुत्रादि की वृद्धि, माता–पिता का सुख होता है।

यदि बुध नीच, अस्तंगत, पापयुक्त, अशुभ भावगत हो तो धन–धान्य की हानि, अपने लोगों से विरोध, शूल रोग की उत्पत्ति, राजकीय कार्यों में अति व्यस्त रहने से व्याकुलता होती है ।

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो स्त्री को कष्ट, अपने निजी जन की हानि, वातशूल रोग की सम्भावना होती है ।

इस दोष की शान्ति के लिए विष्णु सहस्रनाम के पाठ करने चाहिए ।

केतु अन्तर्दशा फल :–

बुधस्यान्तर्गते केतौ लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे लग्नाधिपसमन्विते ।। 6 ।।
योगकारकसम्बन्धेदायेशात्केन्द्रलाभगे ।
देहसौख्यं धनाल्पत्वं बन्धुस्नेहमथादिशेत् ।। 7 ।।
चतुष्पाज्जीवलाभः स्यात् संचारेण धनागमः ।
विद्याकीर्तिप्रसंगश्च सम्मानप्रभुदर्शनम् ।। 8 ।।
भोजनाम्बर सौख्यं च ह्यादौ मध्ये सुखावहम् ।

बुध की महादशा में केतु का अन्तर हो तथा केतु 1.4.5.7.9.10 भावों में, शुभ युक्त दृष्ट लग्नेश से युक्त, योग कारक से सम्बन्ध करने वाला, दशेश से केन्द्र या लाभगत हो तो शरीर सुख, धन का थोड़ा लाभ, भाइयों का स्नेह, चौपाए धन का लाभ होता है ।

दायेशाद्यदि रन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते ।। 9 ।।
वाहनात्पतनं चैव पुत्रक्लेशादिसम्भवः ।
चौरादि राजभीतिश्च पापकर्मरतः सदा ।। 10 ।।
वृश्चिकादि विषाद् भीतिर्नीचैः कलहसम्भवः ।
शोकरोगादि दुःखं च नीचसंगादिकं भवेत् ।। 11 ।।
द्वितीय द्यूननाथेन सम्बन्धे देहबाधनम् ।
दोषस्यपरिहारार्थं छागदानं तु कारयेत् ।। 12 ।।

यदि महादशेश बुध से 8.12 भाव में, पापयुक्त, केतु हो तो वाहन से पतन, पुत्र क्लेश, चोरभय, राजभय, पापकर्म का उदय, बिच्छू आदि जीवों का भय, किसी भी प्रकार का विषैला संक्रमण, नीच लोगों से कलह, शोक, रोग, दुःख, नीच संगादि, फल होते हैं ।

यदि केतु 2.7 भाव या भावेशों से सम्बन्ध करे तो शरीर कष्ट होता है । इस दोष की शान्ति के लिए बकरे का दान करना चाहिए ।

शुक्रान्तर्दशा फल :–

सौम्यस्यान्तर्गते शुक्रे केन्द्रे लाभे त्रिकोणगे ।
सत्कथापुण्यधर्मादिसंग्रहः पुण्यकर्मकृत् ।। 13 ।।
मित्रप्रभुवशादिष्टं क्षेत्रलाभः सुखं भवेत् ।
दायाधिपात्केन्द्रगते त्रिकोणे लाभगेऽपि वा ।। 14 ।।
तत्काले श्रियमाप्नोति राजश्रीधनसम्पदः ।
वापीकूपतडागादि दानधर्मादिसंग्रहः ।। 15 ।।
व्यवसायात्फलाधिक्यं धनधान्यसमृद्धिकृत् ।

बुध दशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तथा शुक्र, केन्द्र, लाभ, त्रिकोण में हो तो अच्छे समाचार वार्ता आदि, पुण्य व धार्मिक कार्यों के अवसर, मित्रराजा के सहयोग से इष्टलाभ, स्थान व सम्पत्ति आदि का लाभ व सुख होता है। दशेश से यदि केन्द्रादि में शुक्र हो तो तब तुरन्त ही लक्ष्मी, राजमान, सम्पत्ति आदि की प्राप्ति, बावड़ी कूप तड़ागादि का निर्माण, दान धर्मादि कार्य, व्यवसाय से अधिक लाभ व धन–धान्य की समृद्धि होती है।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते ।। 16 ।।
हृदरोगो मानहानिश्च ज्वरातिसारपीडनम् ।
आत्मबन्धुवियोगश्च संसारे भवति ध्रुवम् ।। 17 ।।
आत्मकष्टमनस्तापदायकं द्विजसत्तम ! ।
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।। 18 ।।
दोषस्योपशमनार्थं दुर्गापाठं समाचरेत् ।
जगदम्बाप्रसादेन सर्वसौख्यमवाप्नुयात् ।। 19 ।।

यदि शुक्र दशेश बुध से 6.8.12 में या निर्बल हो तो हृदय रोग, मान हानि, ज्वरातिसार (रोग) से पीड़ा, अपने लोगों से विछोह, स्वयं को कष्ट एवं मानसिक सन्ताप होता है।

यदि शुक्र 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु होती है। दोष निवारणार्थ दुर्गा पाठ करने चाहिए। तब जगदम्बिका की कृपा से सब सुख होते हैं।

सूर्यान्तर्दशा फल :–

सौम्यस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे ।
त्रिकोणे धनलाभे वा तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा ।। 20 ।।

राजप्रासादसौभाग्यं मित्रप्रभुवशात्सुखम् ।
भूम्यात्मजेनसंदृष्टे आदौ भूलामभादिशेत् ।। 21 ।।
लग्नाधिपेन संदृष्टे बहुसौख्यं धनागमम् ।
ग्रामभूम्यादिलाभश्च भोजनाम्बरसौख्यकृत् ।। 22 ।।

बुध दशा में सूर्यान्तर्दशा हो तथा सूर्य स्वोच्चादि राशियों में या 2.5.9.11 भावों में या केन्द्रगत, या उच्च स्वनवांश में हो तो राजा के महल में जाने का अवसर, सौभाग्य, मित्र अर्थात् अनुकूल समर्थपुरुष के सहयोग से सुख होता है। यदि सूर्य को मंगल देखे तो प्रारम्भ में भूमि लाभ व लग्नेश देखे तो बहुत सुख, धनलाभ, गाँव जमीन जागीर आदि की प्राप्ति व भौतिक सुख की प्राप्ति होती है।

लग्नाष्टमव्यये वापि शन्यारफणिसंयुते ।
दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते ।। 23 ।।
चौराग्निशस्त्रपीड़ा च पित्ताधिक्यं भविष्यति ।
शिरोरुङ् मनस्ताप इष्टबन्धु वियोगकृत् ।। 24 ।।
द्वितीयसप्तमाधीशे ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।
तद्दोषपरिहारार्थं शान्तिं कुर्याद्यथाविधि ।। 25 ।।

लग्न या दशेश से 6.8.12 में सूर्य हो या सूर्य शनि, मंगल, राहु से युक्त हो या निर्बल हो तो चोरपीड़ा, शस्त्रपीड़ा, अग्निपीड़ा, पित्तवृद्धि, शिरोरोग, मनस्ताप, अपने प्रिय व्यक्ति का वियोग होता है।

यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु होती है। इसकी शान्ति के लिए यथाविधि उपाय (सूर्य पूजा, आदित्य हृदय आदि) करना चाहिए।

चन्द्रान्तर्दशा फल :–

सौम्यस्यान्तर्गते चन्द्रे लग्नात्केन्द्र त्रिकोणगे ।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि गुरुदृष्टिसमन्विते ।। 26 ।।
योगस्थानाधिपत्येन योग प्राबल्यमादिशेत् ।
स्त्रीलाभं पुत्रलाभं च वस्त्रवाहनभूषणम् ।। 27 ।।
नूतनालयलाभं च नित्यं मिष्टान्न भोजनम् ।
गीतवाद्यप्रसंगे च शस्त्रविद्यापरिश्रमम् ।। 28 ।।
दक्षिणां दिशमाश्रित्य प्रयाणं च भविष्यति ।
द्वीपान्तराच्चवस्त्राणां लाभश्चैव भविष्यति ।। 29 ।।
मुक्ताविद्रुमरत्नानि धौतवस्त्रादिकं लभेत् ।

बुध में चन्द्र का अन्तर हो तथा चन्द्र, केन्द्रगत, त्रिकोणगत, उच्च स्वक्षेत्रगत, गुरु दृष्ट्युत, योग कारक हो तो विशेष उत्तम फल, स्त्री लाभ,

पुत्र लाभ, वस्त्र वाहनादि का लाभ, नया घर, सुन्दर मधुर भोजन, गानवाद्यादि आमोद–प्रमोद, शास्त्रों में परिश्रम, दक्षिण दिशा की सफल यात्रा, विदेशी वस्त्रों की प्राप्ति, मोती माणिक्यादि का लाभ, साफ धुले हुए वस्त्रों का प्रयोगादि फल होता है।

नीचारिक्षेत्रसंयुक्ते देहबाधा भविष्यति।। 30 ।।

दायेशात्केन्द्रकोणस्थे दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा।

तद्भुक्त्यादौ पुण्यतीर्थ स्थान दैवत दर्शनम्।। 31 ।।

मनोधैर्य ह्रदुत्साहो विदेशाद् धनलाभकृत्।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा पापसंयुते।। 32 ।।

चौराग्निनृपभीतिश्च स्त्रीसमागमतो भवेत्।

दुष्कृतिर्धनहानिश्च कृषिगोऽश्वादिनाशकृत्।। 33 ।।

यदि नीच, शत्रु क्षेत्र में हो तो शरीर कष्ट, दशेश से केन्द्र, त्रिकोण, 3.11 में भी हो तब भी अन्तर्दशा के आरम्भ में पुण्यतीर्थो की यात्रा, देवस्थानों के दर्शन, मन में धैर्य, ह्रदय में उत्साह, विदेश से धन लाभ होता है।

यदि दशेश से 6.8.12 में या पापयुक्त हो तो चोरभय, राजभय, अग्निभय, स्त्री समागम से कष्ट, पाप कार्य, धनहानि, कृषि, पशु, वाहनादि की हानि होती है।

द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति।

तद्दोषपरिहारार्थं दुर्गादेवीजपं चरेत्।। 34 ।।

वस्त्रदानं प्रकुर्वीत सुखायुर्वृद्धिकृत् पुमान्।

ततः सौख्यं भवेत्तस्य जगदम्बाप्रसादतः।। 35 ।।

यदि चन्द्रमा 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है। इस दोष को शान्त करने के लिए दुर्गापाठ कराने चाहिए तथा वस्त्र दान करें। इससे सुख, आयु आदि की वृद्धि जगदम्बा की कृपा से होती है।

मंगल अन्तर्दशा फल :–

सौम्यस्यान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।

स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि लग्नाधिपसमन्विते।। 36 ।।

राजानुग्रहशान्तिं च गृहे कल्याणसम्भवम्।

लक्ष्मी कटाक्षचिह्नानि नष्टराज्यार्थमाप्नुयात्।। 37 ।।

पुत्रोत्सवादि सन्तोषं गृहं गोधनसंकुलम्।

गृहक्षेत्रादि लाभं च गजवाजि समन्वितम्।। 38 ।।